# क़ुरआन का सन्देश मानवता के नाम

एस॰ एस॰ यू॰ तबरेज़

# विषय-सूची

**भूमिका** 5

**अध्याय-1 सन्देश**

1:1 सूरा अल-फ़ातिहा (एक पूर्ण एवं भव्य प्रार्थना) 11

1:2 अल-किताब (क़ुरआन) 23

**अध्याय-2 अल्लाह : ब्रह्माण्ड का रचयिता** 35

2:1 सर्वोच्च अल्लाह 36

2:2 सृष्टि का निर्माण 48

2:3 मनुष्य की रचना 60

**अध्याय-3 अल्लाह के विशिष्ट पैग़म्बर (दूत)** 67

3:1 साझा सन्देश 68

3:2 पैग़म्बर आदम (अलैहिस्सलाम) 75

3:3 पैग़म्बर नूह (अलैहिस्सलाम) 84

3:4 पैग़म्बर इबराहीम (अलैहिस्सलाम) 89

3:5 पैग़म्बर मूसा (अलैहिस्सलाम) 94

3:6 पैग़म्बर ईसा (अलैहिस्सलाम) 100

3:7 पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) 105

**अध्याय-4 क़ुरआन का पैग़ाम मानवता के नाम** 111

4:1 निष्ठा की शपथ 112

4:2 व्यक्तिगत जवाबदेही 115

4:3 क़ुरआन का सन्देश मानवता के नाम 118

4:4 फ़ैसले का दिन 154

**पैग़म्बर (सल्ल०) का विदाई उपदेश** 162

**सन्दर्भ पुस्तक-सूची** 167

**'विसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'**

"अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।"

# भूमिका

यह किताब क़ुरआन के एक विद्यार्थी का विनम्र प्रयास है, जिसका उद्देश्य क़ुरआन के मूल सन्देश को आम आदमी तक पहुँचाना है।

स्कूल के ज़माने से आज तक मैं अपने दोस्तों और मिलने-जुलनेवालों की तरफ़ से क़ुरआन और उसकी शिक्षाओं के बारे में तरह-तरह के सवालों का सामना करता रहा हूँ। अकसर लोग तो समय-समय पर इस्लाम की विभिन्न मूल शिक्षाओं के बारे में जानने में दिलचस्पी रखते हैं, लेकिन कुछ सवाल कई तरह की कुधारणाओं का नतीजा भी होते हैं। ये कुधारणाएँ आम तौर पर इसलिए पैदा होती हैं, क्योंकि लोगों को सही ज्ञान हासिल करने के साधन नहीं मिलते या उनके ज्ञान हासिल करने के साधन ही कुधारणाओं पर आधारित होते हैं।

यह बात बेझिझक कही जा सकती है कि कभी-कभी क़ुरआन के माननेवाले ही जाने-अनजाने में अपने कथन, आचरण और चरित्र से इसकी ग़लत व्याख्या पेश करते हैं और इसके विरोधी सोचे-समझे षड्यंत्र के तहत भोले-भाले लोगों को भटकाने के लिए ऐसी व्याख्या करते हैं, जो इसके सच्चे पैग़ाम के विपरीत होती है। एक आम आदमी जो क़ुरआन से भावनात्मक या वैचारिक सम्बन्ध नहीं रखता, इन चीज़ों पर आँख बन्द करके यक़ीन कर लेता है और उन्हें क़ुरआन की शिक्षाओं के मुताबिक़ ही समझता है, जबकि उनका क़ुरआन से दूर-दूर तक भी कोई वास्ता नहीं होता। अब यह ज़िम्मेदारी क़ुरआन के माननेवालों की है कि वे क़ुरआन की शिक्षाओं को सही तरीक़े से अपने कथन और आचरण के द्वारा दुनिया के सामने पेश करें और उन सच्चे और अच्छे साधनों को भी आम करें जो क़ुरआन और इस्लाम को सही रूप में पेश करते हैं। इस काम के लिए सारे उपलब्ध साधनों और योग्यताओं का प्रयोग करना भी हमारा उत्तरदायित्व है। यह किताब इस

उत्तरदायित्व को पूरा करने की कोशिश है।

इस्लाम के मुताबिक़, इनसान के बनाने और उसके ज़मीन पर उतारे जाने के बाद ही से अल्लाह ने इनसान के मार्गदर्शन के लिए पैग़म्बरों (ईशदूतों) को भेजने का सिलसिला शुरू किया। उन पैग़म्बरों को दुनिया में हर ज़माने की क़ौमों में भेजा गया। उनमें से कुछ पैग़म्बरों को अल्लाह ने किताब भी प्रदान की। लेकिन वक़्त के साथ-साथ उन पैग़म्बरों के पीछे चलनेवाले सीधे रास्ते से दूर होते चले गए और कुछ लोग, जिनके ऊपर धर्म की ज़िम्मेदारियाँ थीं, वे इस हद तक गिरते चले गए कि उन्होंने मूल शिक्षाओं में ही फेर-बदल कर डाला, ताकि उनके निजी स्वार्थों की पूर्ति हो सके और आम आदमी पर उनका वर्चस्व क़ायम रह सके। जब भी समाज में अधार्मिकता और पथभ्रष्टता एक हद से आगे बढ़ी, अल्लाह, जो सारे जहान का रब (पालनहार) है, अपना पैग़म्बर भेजकर लोगों को वापस सीधे रास्ते पर लाने का प्रबन्ध करता रहा है। हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) इन पैग़म्बरों के सिलसिले के प्रथम पैग़म्बर और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अन्तिम पैग़म्बर हैं। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर क़ुरआन नाज़िल (अवतरित) किया गया है, जो सारे इनसानों की हिदायत के लिए अल्लाह की तरफ़ से भेजी जानेवाली आख़िरी किताब है। मुहम्मद (सल्ल०) का आगमन इस कारण से महत्वपूर्ण है कि उनको पूरी दुनिया और दुनिया के हर इलाक़े के लिए नबी बनाकर भेजा गया। हर तरह के बदलावों से क़ुरआन की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी अल्लाह ने ख़ुद ले ली है। क़ुरआन में इस बात को साफ़ (स्पष्ट) अन्दाज़ में इन शब्दों में कहा गया है—

> "और (ऐ नबी!) हमने तुमको सारे ही इनसानों के लिए शुभ सूचना देनेवाला और सावधान करनेवाला बनाकर भेजा है, मगर ज़्यादातर लोग जानते नहीं हैं।" (क़ुरआन, सूरा-34 सबा, आयत-28)
>
> "लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उपदेश आ गया है। यह वह चीज़ है जो दिलों के रोगों को ठीक करने के लिए है और जो उसे स्वीकार कर लें उनके लिए मार्गदर्शन और दयालुता है।"
> (सूरा-10 यूनुस, आयत-57)

"रहा यह स्मरण (क़ुरआन), तो इसको हमने उतारा है और हम ख़ुद इसके रक्षक हैं।" (क़ुरआन, सूरा-15 अल-हिज्र, आयत-9)

क़ुरआन का पैग़ाम सारे इनसानों के लिए है। इसको समझकर पढ़ना और इसपर पूरी तरह अमल करना हर इनसान के लिए ज़रूरी है। लेकिन वह पाठक जो पहली-पहली बार क़ुरआन के सम्पर्क में आया हो, उसके लिए ज़रूरी है कि वह इसको समझने के लिए नीचे लिखी चीज़ों को अपने सामने रखे—

1. क़ुरआन सारे इनसानों के लिए हिदायत (मार्गदर्शन) की किताब है। क़ुरआन में सारी बहसें इसी धुरी के चारों ओर घूमती हैं और हर वह विषय जो इस सार्वभौमिक किताब में वार्ता का विषय बना है, वह इसलिए बना है क्योंकि क़ुरआन हमें हमारे स्रष्टा से हमारे सम्बन्ध के बारे में हिदायत देता है।

2. क़ुरआन को थोड़ा-थोड़ा करके अवतरित किया गया। इसके अवतरण की अवधि लगभग तेईस साल है। इसको इसके अवतरण तिथि के अनुसार संकलित नहीं किया गया है, बल्कि अल्लाह के पैग़म्बर के आदेशानुसार किया गया है (जो कि हक़ीक़त में अल्लाह की हिदायत की रौशनी में किया गया)। क़ुरआन में कुल 114 सूरतें (अध्याय) हैं। इन सूरतों में कुछ बहुत लम्बी हैं, जबकि कुछ बहुत छोटी। क़ुरआन की सबसे छोटी सूरा सूरा-108 अल-कौसर में केवल तीन आयतें (वाक्य) हैं, जबकि सबसे बड़ी सूरा सूरा-2 अल-बक़रा में 286 आयतें हैं। इन सभी सूरतों का अपना केन्द्रीय विषय होता है, लेकिन पहली बार क़ुरआन पढ़नेवाले को इसकी शैली समझने में कुछ समय लगता है।

3. जिस वक़्त ये सूरतें उतरीं, उस वक़्त इनका सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और मानसिक परिदृश्य के लोगों पर पूरी तरह स्पष्ट था। यह समाज अल्लाह की व्यापक शिक्षाओं की छाया में परवान चढ़ा। इसके साथ-साथ इस बात को भी सुनिश्चित किया गया कि पैग़ाम आनेवाले सभी ज़मानों के लिए यह पूरी हिदायत का पैग़ाम रहे। क़ुरआन स्थान और काल के बन्धनों से आज़ाद है और अन्त तक आनेवाले सभी लोगों

के लिए हिदायत की किताब है। क़ुरआन का अन्दाज़ दुनिया की हदों से आज़ाद है। पाठक के लिए शुरू में इस अन्दाज़ को समझने में कुछ मुश्किल ज़रूर हो सकती है, लेकिन जैसे-जैसे वह इसका अध्ययन करता जाएगा, उसपर क़ुरआन की शैली स्पष्ट होती चली जाएगी और तत्पश्चात् वह क़ुरआन के अन्दाज़ को आसानी से समझने लगेगा।

जहाँ तक इस किताब का सम्बन्ध है, इसके बारे में नीचे लिखी बातें सामने रखनी ज़रूरी हैं–

1. यह किताब क़ुरआन की तफ़सीर (व्याख्या) नहीं है, इस बात को मैं शुरू में ही स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। क़ुरआन की व्याख्या लिखना एक बड़ा काम है जिसको करने के योग्य कम-से-कम मैं नहीं हूँ, और यह इस किताब का मूल उद्देश्य भी नहीं है।
2. इस किताब का मूल उद्देश्य क़ुरआन की बुनियादी शिक्षाओं को उन लोगों के सामने पेश करना है जो क़ुरआन के सीधे-सीधे पाठक नहीं हैं। और वे ख़ुद अरबी में क़ुरआन का अध्ययन नहीं कर सकते।
3. इस पूरी किताब में मैंने अपनी पूरी कोशिश की है कि क़ुरआन की उन शिक्षाओं को पेश करूँ जो उसी विषय से सम्बन्ध रखती हों, और पाठक को उस विषय पर तमाम बुनियादी चीज़ें बुनियादी स्रोत से हासिल हों। मेरी तरफ़ से जो वाक्य भी हैं, वह केवल विषय को क्रमबद्ध रखने की कोशिश है। इस किताब का पहला अध्याय इससे किसी हद तक मुक्त है। इस अध्याय में मैंने क़ुरआन की पहली सूरा (सूरा अल-फ़ातिहा) की किसी हद तक व्याख्या पेश करने की कोशिश की है। यह इसलिए कि पाठक को क़ुरआन की शिक्षाओं की गहराई का अन्दाज़ा हो सके।
4. क़ुरआन को समझने का बुनियादी स्रोत पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) की जीवनी एवं कथन हैं। उनकी कथनी और करनी के विस्तृत विवरणों को विभिन्न हदीस-संग्रहों में सुरक्षित कर लिया गया है। मैंने हदीसों को इस किताब में शामिल नहीं किया है, क्योंकि इससे किताब बहुत बृहद

हो जाती। यह उन लोगों के लिए ज़्यादा लाभदायक नहीं होती जो क़ुरआन की बुनियादी शिक्षाओं और हुक्मों को समझने के इच्छुक हैं। यही वजह है कि शायद कुछ जगहों पर पाठक को महसूस हो कि कुछ आयतों की व्याख्या और ज़्यादा विस्तार चाहती है। ऐसे पाठक, जो और ज़्यादा विस्तार से अध्ययन करना चाहते हैं, नीचे लिखी तफ़सीरों से लाभ उठा सकते हैं—

1. तर्जमा क़ुरआन : अब्दुल्लाह यूसुफ़ अली (रह॰)
2. तफ़हीमुल-क़ुरआन : अबुल-आला मौदूदी (रह॰)
3. तफ़सीरुल-क़ुरआन : अब्दुल-माजिद दरियाबादी (रह॰)

आख़िर में, उन तमाम सज्जनों का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ, जिन्होंने इस किताब को पूर्ण करने में मेरी मदद की। अल्लाह उन्हें अच्छा बदला प्रदान करे! आमीन!!

**—एस॰एस॰यू॰ तबरेज़**
ssutabrez@gmail.com

# 1:1 सूरा अल-फ़ातिहा
## (एक पूर्ण एवं भव्य प्रार्थना)

- ईश्वर के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।
- सारी प्रशंसाएँ ईश्वर ही के लिए हैं, जो सारे जगत का रब (प्रभु, पालनकर्ता) है।
- बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।
- बदला दिए जाने के दिन का स्वामी है।
- हम तेरी ही बन्दगी (पूजा) करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं।
- हमें सीधा मार्ग दिखा।
- उन लोगों का मार्ग जो तेरे कृपापात्र हुए, जो प्रकोप के भागी नहीं हुए, जो भटके हुए नहीं हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-1 अल-फ़ातिहा, आयतें-1 से 7)

यह क़ुरआन की पहली सूरा है। इसमें सात आयतें हैं। इस सूरा का अवतरण एक दुआ के रूप में हुआ है। यह एक बन्दे की अपने पालनहार प्रभु से प्रार्थना है और उसके प्रति समर्पण है। बन्दा चाहता है कि उसका रचयिता उसे हिदायत दे और उसको सीधी, सच्ची और कामयाब ज़िन्दगी प्रदान करे। यह अल्लाह की बड़ाई और उसका एहसान है कि उसने ख़ुद इनसान को यह सिखाया कि किस तरह उससे हिदायत और रहनुमाई माँगी जाए। क़ुरआन के विद्वानों के मुताबिक़ सूरा फ़ातिहा एक बन्दे की तरफ़ से अपने आक़ा और मालिक से हिदायत का निवेदन है। और फिर पूरा क़ुरआन उस निवेदन का सारे जहान के रब की तरफ़ से जवाब है जो सच्ची हिदायत और रहनुमाई (मार्गदर्शन) से भरपूर है।

मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद के अनुसार सूरा फ़ातिहा और क़ुरआन

में सम्बन्ध गागर और सागर का-सा है। अब्दुल्लाह यूसुफ़ अली के मुताबिक़ यह इनसान और उसके स्रष्टा के बीच इबादत और सोच-विचार के फलस्वरूप सम्बन्ध को दर्शाता है।

इस सूरा को तीन हिस्सों में बाँटा जा सकता है। पहला हिस्सा एक से चार आयतों तक है और दूसरा हिस्सा केवल एक आयत—पाँचवीं आयत—पर आधारित है, जबकि तीसरा हिस्सा दो (6 और 7) आयतों पर आधारित है। आइए, कोशिश करते हैं कि इन आयतों के अर्थ और भाव को थोड़ा विस्तार से समझें।

1. बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
   ईश्वर के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।
2. अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आ-लमीन
   सारी प्रशंसाएँ ईश्वर ही के लिए हैं, जो सारे जगत का रब (प्रभु, पालनकर्ता) है।
3. अर्रहमानिर्रहीम
   बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।
4. मालिकि यौमिद्दीन
   बदला दिए जाने के दिन का स्वामी है।

क़ुरआन की सूरा-9 अत-तौबा को छोड़कर अन्य सभी सूरा 'बिसमिल्लाह' से शुरू होती हैं। यानी ये ख़ुद अल्लाह के नाम से ही शुरू होती हैं, जो समस्त सृष्टि के लिए दयालु एवं कृपालु है। अल्लाह उस स्रष्टा का व्यक्तिवाचक नाम है, जो अकेला है और केवल वही पूजा के योग्य है। उसी के आगे सिर झुकाना और सजदा करना इनसानों को शोभा देता है। अल-इलाह यानी वह एकमात्र वास्तविक प्रभु जो हमारी इबादतों के योग्य है। अल्लाह की हस्ती वह है कि जितना हम उसके बारे में ग़ौर करेंगे उतना ही हम हैरान और हक्का-बक्का रह जाएँगे। लेकिन अपनी तमाम जानकारियों और ज्ञान के बावजूद हम एक ही नतीजे पर पहुँच सकते हैं, और वह यह है कि वह हमारे ज्ञान और हमारी बुद्धि से परे है। अन्ततः हम इस नतीजे

पर पहुँचते हैं कि जो कुछ भी हम उसके बारे में जानते हैं वह बहुत कम है। लेकिन उसके बारे में कम ज्ञान और हमारा उसको स्वीकार करना ज़ाहिर करता है कि हम किसी हद तक उसकी हस्ती और उसके उच्च स्थान से परिचित हैं। (अबुल-कलाम आज़ाद रह०)

यह सूरा उसकी प्रशंसा और गुणगान से शुरू होती है। यह इस वजह से है कि यह वह पहला स्वाभाविक एहसास है, जो हमारे अन्दर उभरता है जब हम सच की तलाश की शुरुआत करते हैं और उसको जानने और पहचानने की राह में शुरुआती क़दम उठाते हैं और सृष्टि की संरचना पर विचार करते हैं। इस सोच-विचार में सबसे बड़ी ग़लती जो इनसान करता है, वह यह कि वह सृष्टि की रंगा-रंगी और उपयोगिता से इतना मोहित हो जाता है कि वह उसी में गुम हो जाता है और अपनी नादानी में किसी प्राणी या रचना को अपना उपास्य (इलाह) मानने लगता है। सिर्फ़ वे लोग जो इस अवस्था से आगे बढ़ पाए हैं, वही सच्चाई तक पहुँच पाए हैं। क़ुरआन इबराहीम (अलैहि०) की सच्चाई से परिचित कराने की कोशिश को इस तरह पेश करता है—

> "इबराहीम की घटना याद करो, जबकि उसने अपने बाप आज़र से कहा था : 'क्या आप मूर्तियों को खुदा बनाता है? मैं आपको और आपकी क़ौम को खुली गुमराही में पाता हूँ।' इबराहीम को हम इसी तरह ज़मीन और आसमानों की राज्य-व्यवस्था दिखाते थे और इसलिए दिखाते थे कि वह यक़ीन करनेवालों में से हो जाए। अतएव रात जब उसपर छाई तो उसने एक तारा देखा। कहा : 'यह मेरा रब है!' मगर जब वह डूब गया तो बोला : 'डूब जानेवालों का तो मैं अनुरागी नहीं हूँ।' फिर जब चाँद चमकता दिखाई दिया तो कहा : 'यह है मेरा रब,' मगर जब वह भी डूब गया तो कहा : 'अगर मेरे रब ने मुझे राह न दिखाई होती तो मैं भी गुमराह लोगों में शामिल हो गया होता।' फिर जब सूरज को रौशन देखा तो कहा : 'यह है मेरा रब, यह सबसे बड़ा है।' मगर जब वह भी डूब गया तो इबराहीम पुकार उठा : 'ऐ क़ौम के भाइयो! मैं उन सबसे बेज़ार हूँ जिन्हें तुम ईश्वर का साझीदार

ठहराते हो। मैंने तो एकाग्र होकर अपना रुख़ उस सत्ता की ओर कर लिया जिसने ज़मीन और आसमानों की रचना की है, और मैं हरगिज़ मुशरिकों (बहुईशवादियों) में से नहीं हूँ'।"

(क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयतें-74 से 79)

मौलाना मौदूदी (रह०) फ़रमाते हैं—

"जब हम ज़मीन और आसमान के बनानेवाले की तरफ़ रुख़ करते हैं तो हम उसकी ख़ूबियों को सारे जहान के रब की हैसियत से या सारी दुनियाओं के रब यानी मालिक, स्रष्टा, रोज़ी देनेवाले, मदद करनेवाले, मार्गदर्शक और ब्रह्माण्ड के शासक के रूप में स्वीकार करते हैं। वही है जो इस ब्रह्माण्ड को कंट्रोल करता है और इसको चलाता है।"

अल्लाह ने, जो इस सृष्टि का पालनहार है, हर चीज़ को अपने घेरे में ले रखा है। जानदार से लेकर बेजान तक, छोटी-से-छोटी चीज़ से लेकर बड़ी-से-बड़ी चीज़ तक, दुनिया से लेकर आसमानों तक, शारीरिक ज़रूरतों से लेकर भावात्मक और आध्यात्मिक ज़रूरतों तक, अल्लाह ने हर चीज़ का बेहतरीन अन्दाज़े से ख़याल रखा है। उसकी इस विशेषता में पूर्ण विश्वास रखने से इनसान दूसरी सब गुलामियों से छुटकारा पा जाता है और हमारा स्रष्टा से सीधा सम्बन्ध स्थापित कर देता है, जिसमें किसी दूसरे के दख़ल का सवाल ही नहीं उठता। यह हमें हिम्मत और हौसला देता है कि हम उसके मार्ग में एकाग्र हो जाएँ, क्योंकि हम सिर्फ़ उसी से अपने अच्छे कामों के अच्छे बदले की उम्मीद रखते हैं।

रब होने की इस महान विशेषता के वर्णन के बाद बड़ा कृपाशील और अत्यन्त दयावान की ख़ूबियों का वर्णन है। ये दोनों श्रेष्ठता संज्ञा का धातु रूप हैं और इनसे रचयिता की अपनी सारी रचनाओं के प्रति मुहब्बत को दर्शाता है। हालाँकि दोनों विशेषताएँ एक-दूसरे से अर्थ की दृष्टि से बहुत क़रीब हैं, लेकिन दोनों के बीच स्पष्ट अन्तर है। विशेषण 'दयालु' (अर्रहमान) स्रष्टा का सृष्टि के प्रति प्रगाढ़ प्रेम और दयालुता को दर्शाता है। चाहे वह सृष्टि स्रष्टा के एहसानों को स्वीकार करती है या नहीं, क्योंकि वह दयालु है, इसलिए वह उन लोगों को भी देता है जो उसकी हस्ती तक का इनकार

करनेवाले हैं और मानने को तैयार नहीं कि इस दुनिया का कोई बनानेवाला भी है। वे लोग जो उसके प्रति विद्रोह के दोषी हैं, वह उनको भी रोज़ी देता रहता है और दुनिया में ऐसे लोगों को कामयाबी भी मिलती रहती है।

उसकी विशेषता 'दयावान' (अर्रहीम) में एक तरह की स्थिरता है। इस विशेषता की वजह से उसपर ईमान रखनेवाले उससे अन्तिम निर्णय के दिन दया और क्षमा की उम्मीद भी रखते हैं। वह अकेला ही आख़िरत के दिन का मालिक है। वह दिन जिसमें हर आदमी को इस दुनिया के सभी कर्मों का हिसाब देना होगा, उस दिन सिर्फ़ वही हमारी क़िस्मत के बारे में फ़ैसला करेगा।

जहाँ तक पहले तीन विशेषताओं का सम्बन्ध है, ये विशेषताएँ हमारे अन्दर पैदा करनेवाले सृष्टिकर्ता के प्रति भरोसा, हौसला और यक़ीन पैदा करती हैं। चौथी विशेषता, आख़िरत के दिन का मालिक, हमारी ज़िन्दगी को एक आयाम और उद्देश्य प्रदान करती है। यह हमें एक दिशा और उद्देश्य देती है जो इस दुनिया में भेजे जाने का अस्ल उद्देश्य है।

> "अल्लाह की प्रशंसा में दयालु और कृपालु कहने के बाद बदले के दिन का मालिक कहने से यह बात साफ़ होती है कि वह बड़ा मेहरबान ही नहीं, इनसाफ़ करनेवाला भी है और इनसाफ़ करनेवाला भी ऐसा अधिकार प्राप्त कि अन्तिम निर्णय के दिन वही पूरी सत्ता और शक्ति का मालिक होगा। उस दिन उसकी सज़ा में न कोई अड़चन पैदा कर सकेगा और न बदला देने में बाधक बन सकेगा। इसलिए हम उसके रब होने और दयालुता के कारण उससे डरते हैं और यह एहसास भी रखते हैं कि हमारे अंजाम की भलाई और बुराई पूरी तरह उसी के वश में है।"
>
> (अबुल-आला मौदूदी रह॰)

अल्लाह की इन विशेषताओं को मानने के बाद और उसके प्रति एहसानमन्दी (कृतज्ञता) के भाव को पूरी तरह ज़ाहिर करने के बाद इस सूरा के दूसरे हिस्से में हम पक्की प्रतिज्ञा करते हैं कि—

> "हम तेरी ही बन्दगी (पूजा) करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं।"

इस्लामी विद्वानों के अनुसार सूरा फ़ातिहा क़ुरआन की शिक्षाओं का निचोड़ है और यह आयत सूरा फ़ातिहा का निचोड़ है। यह एक सबसे मज़बूत समझौता है, जो एक आदमी कर सकता है। जब यह मामला सोच-समझकर कर लिया जाता है और इसपर निष्ठापूर्वक चला जाता है, तो यह पूरे जीवन को नई दिशा प्रदान करता है। यह एलान कि 'हम तेरी ही बन्दगी (पूजा, इबादत) करते हैं' यह स्पष्ट करता है कि वास्तविक स्रष्टा के साथ एक समझौते में दाख़िल हो रहे हैं और वह यह कि इस पूरी दुनिया में कोई उस जैसा नहीं है और उसके गुणों में कोई साझीदार नहीं है। इसलिए हमारी इबादत किसी दूसरे के लिए नहीं हो सकती। वह सिर्फ़ एक अल्लाह के लिए ख़ास है।

दूसरा महत्वपूर्ण निष्कर्ष जो इससे निकलता है, वह यह कि जब हम उसे ही एकमात्र मालिक और अस्ल शासक मान लेते हैं तो हमें अपना पूरा जीवन उसके आदेशों के अधीन कर देना चाहिए और सिर्फ़-और-सिर्फ़ उसी की दी हुई हिदायत पर चलना चाहिए। इबादत का मतलब केवल कुछ रस्मों की पाबन्दी करना नहीं है। इसका मतलब यह है कि अगर हर काम और हर गतिविधि जिसको हम अपनी निजी, पारिवारिक, सामाजिक जीवन और आर्थिक क्षेत्र में अपनाएँ, वह सब उन हिदायतों (निर्देशों) की रौशनी में हों, जो उस वास्तविक स्रष्टा ने हमारे लिए तय की हैं, तो हमारे सारे काम पूरी तरह इबादत में गिने जाएँगे।

तीसरा निष्कर्ष जो हम इससे निकाल सकते हैं और जो हमारे मान-सम्मान के लिए भी बहुत ज़रूरी है, वह यह कि स्रष्टा से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए हमें किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं। सबसे ज़्यादा मुहब्बत करनेवाला, सबसे ज़्यादा दया करनेवाला वास्तविक स्रष्टा हमेशा हमारे साथ है और हर वक़्त अपने सेवकों और बन्दों की दुआएँ सुनता और जवाब देता है। उस स्रष्टा पर इस बात का कोई असर नहीं होता कि उसका बन्दा दुनियावालों की नज़र में क्या हैसियत रखता है। वह उसकी दुआओं को सुनकर जवाब देता है—

"और ऐ नबी! मेरे बन्दे अगर तुमसे मेरे सम्बन्ध में पूछें तो उन्हें

बता दो कि मैं उनसे क़रीब ही हूँ। पुकारनेवाला जब मुझे पुकारता है, मैं उसकी पुकार सुनता और जवाब देता हूँ। अतः उन्हें चाहिए कि मेरी पुकार पर कहें कि हम हाज़िर हैं और मुझपर ईमान लाएँ। (यह बात तुम उन्हें सुना दो) शायद कि वे सीधा मार्ग पा लें!"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-186)

अल्लाह की दृष्टि में क़ौम, ज़ात, क़बीला, धन-दौलत और दुनिया के अधिकारों के आधार पर एक को दूसरे पर कोई श्रेष्ठता नहीं है। अगर श्रेष्ठता या बड़प्पन कोई है तो वह केवल व्यक्तिगत परहेज़गारी और अल्लाह से डर की बुनियाद पर है। और यह परहेज़गारी कोई भी अपनी मेहनत और अपने सच्चे मालिक द्वारा प्रदान करने से प्राप्त कर सकता है। क़ुरआन हमें बताता है–

"लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारी क़ौमें और बिरादरियाँ बना दीं, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह की दृष्टि में तुममें सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे ज़्यादा परहेज़गार (ईशपरायण) है। यक़ीनन अल्लाह सब कुछ जाननेवाला और ख़बर रखनेवाला है।"

(सूरा-49 अल-हुजुरात, आयत-13)

चौथा निष्कर्ष जो हम इस समझौते से निकाल सकते हैं, वह यह कि हमारे वास्तविक मालिक ने हमें कर्म की (सीमित) आज़ादी दे रखी है। हम जीवन में अपना रास्ता चुनने के लिए आज़ाद हैं। यह फ़ैसला करने के लिए आज़ाद हैं कि हमारे लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा है। इस प्रतिज्ञा (अह्द) के तहत हम अपने पैदा करनेवाले से एक समझौता करते हैं (जिसका मूल पाठ खुद अल्लाह ने बताया है)। यह बात हर एक को मालूम है कि हम उसी वक़्त समझौता कर सकते हैं जब हमारे पास उसको पूरा करने की क्षमता हो। इस क्षमता के न रहने पर कोई भी समझौता बेकार है। यह आयत स्पष्ट करती है कि ब्रह्माण्ड के स्रष्टा ने हमें सोचने-समझने और कर्म करने की आज़ादी दी है। उसने हमको यह आज़ादी भी दी है कि हम फ़ैसला करें कि हमारे लिए सही क्या है और ग़लत क्या है–

"हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं।"

इस आयत की व्याख्या में अल्लामा अब्दुल्लाह यूसुफ़ अली कहते हैं—

"इस प्रतिज्ञा में शब्द 'हम' का इस्तेमाल यह स्पष्ट करता है कि हम अपने-आपको उन सब लोगों के साथ शामिल करते हैं, जो उसकी ख़ुशी चाहते हैं। इससे हम अपने-आपको ताक़त पहुँचाते हैं और उन लोगों को भी ताक़त पहुँचाते हैं जो इस समझौते में एक साथ जुड़े हैं।"

यह प्रतिज्ञा व्यक्तिगत रूप में भी है और उन लोगों की तरफ़ से भी है जो सीधे रास्ते पर चलने की कोशिश करते हैं। इस 'हम' से एक आदमी की दुआ को एक समूह के साथ जोड़ दिया जाता है, जिससे बड़े फ़ायदों का हासिल करना मुमकिन हो जाता है। 'हम' सामाजिक बन्धनों के महत्व को भी ज़ाहिर करता है और इस बात को भी दर्शाता है कि इस प्रतिज्ञा को करनेवाले नेक लोग एक ही समुदाय (मिल्लत) हैं।

इस प्रतिज्ञा के फ़ौरन बाद ही बन्दे की ओर से एक दरख़ास्त (अनुरोध) आती है। यह इस दुआ का तीसरा हिस्सा है।

"हमें सीधा मार्ग दिखा, उन लोगों का मार्ग जो तेरे कृपापात्र हुए, जो प्रकोप के भागी नहीं हुए, जो भटके हुए नहीं हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-1 अल-फ़ातिहा, आयतें-5 से 7)

अल्लाह से यह समझौता करने के बाद हम तुरन्त उसी की पनाह के इच्छुक होते हैं और उससे अनुरोध करते हैं कि वह हमारा सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन करे। यह इस समझौते का तार्किक परिणाम है। एक बार जब हमने उसको अपना वास्तविक उपास्य (माबूदे-हक़ीक़ी) मान लिया और ख़ुशी-ख़ुशी उसके सामने सिर झुका दिया तो केवल उसको यह हक़ रह जाता है कि वह हमारे बारे में फ़ैसला करे कि हमारे लिए सही क्या है और ग़लत क्या।

हम हर दिन देखते हैं कि लोग इबादत और तक़वा यानी अल्लाह से डरने के नाम पर वे काम करते हैं, जिनका अल्लाह से डरने और परहेज़गारी से कोई सम्बन्ध नहीं होता, बल्कि कभी-कभी वह ईश-भय और परहेज़गारी

की बुनियाद के बिलकुल विपरीत होते हैं। आप उनको कितनी ही नसीहत क्यों न करें, वे अपने इन कामों से बाज़ नहीं आएँगे। यह इसलिए कि उनको यक़ीन है कि वे अपनी जगह बिलकुल सही हैं।

हम ऐसे लोगों से भी मिलते हैं, जो अपने अतीत पर पछताते हैं और अपनी ग़लतियों को सुधारना चाहते हैं। उनको उस समय, जब वे ग़लत काम कर रहे थे, अपनी ग़लतियों का एहसास नहीं होता था। इसके विपरीत अगर आपने उस समय उनको उनकी ग़लतियों की तरफ़ ध्यान दिलाया होता तो वे यह कहते कि बिलकुल सही रास्ते पर हैं और सच्चे हैं। इसलिए हम हमेशा अपनी बुद्धि पर भरोसा नहीं कर सकते कि वह हमारा मार्गदर्शन सीधे रास्ते की ओर करेगी। उसकी अपनी ज्ञानात्मक, विचारात्मक और अनुभव-सम्बन्धी सीमाएँ हैं। सामाजिक परिस्थितियाँ भी इसपर अपना असर डालती हैं। ये हमारी सोच और विचारधारा को भी बड़ी हद तक प्रभावित करते हैं। हमें हिदायत और मार्गदर्शन की ज़रूरत है और अल्लाह से बेहतर हिदायत देनेवाला कौन होगा? सारे जहान के रब और दयावान होने की वजह से वह ज़िन्दगी के हर मोड़ पर हमारी हिदायत और रहनुमाई करता है और हर मोड़ पर हमें सीधा रास्ता दिखाता है।

मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद के अनुसार इसके चार दर्जे हैं—

1. प्रवृतिक 2. इन्द्रिय-सम्बन्धी 3. बौद्धिक 4. प्रकाशना के द्वारा मार्गदर्शन।

इसमें सर्वोत्तम 'प्रकाशना के द्वारा मार्गदर्शन' है, क्योंकि यह किसी भी तरह के दोष और त्रुटि से पाक है। इसकी व्याख्या उन्होंने इन शब्दों में की है—

> "इन्द्रियाँ स्वभाव (प्रवृति) को ठीक करती हैं। बुद्धि इन्द्रियों को सुधारती है और ईश-वाणी (वह्‌य) विचार की ग़लती का संशोधन करती है।"

प्रकाशना के द्वारा मार्गदर्शन विशेष रूप में इनसानों के लिए है। यह इसलिए कि उनको निर्णय लेने की आज़ादी और अधिकार प्राप्त है। सारे जहान के रब ने सारे इनसानों के लिए हर मौक़े और इतिहास के हर मोड़

पर हिदायत और मार्गदर्शन का इन्तिज़ाम किया है। और यह हिदायत और मार्गदर्शन दुनिया के हर क्षेत्र के इनसानों को उसकी वह्य (प्रकाशना) और उसके पैग़म्बरों के द्वारा पहुँचाई गई है। क़ुरआन में अल्लाह कहता है–

> "ऐ नबी! हमने तुम्हारी ओर उसी तरह 'वह्य' (प्रकाशना) भेजी है जिस तरह नूह और उसके बाद के पैग़म्बरों की ओर भेजी थी। हमने इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, याक़ूब और याक़ूब की सन्तान, ईसा, अय्यूब, यूनुस, हारून और सुलैमान की ओर प्रकाशना भेजी। हमने दाऊद को ज़बूर दी। हमने उन रसूलों पर भी प्रकाशना भेजी जिनकी चर्चा हम इससे पहले तुमसे कर चुके हैं और उन रसूलों पर भी जिनकी चर्चा तुमसे नहीं की। हमने मूसा से इस तरह बातचीत की जिस तरह बातचीत की जाती है। ये सारे रसूल ख़ुशख़बरी देनेवाले और डरानेवाले बनाकर भेजे गए थे, ताकि उनको भेज देने के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुक़ाबले में कोई तर्क न रहे, और अल्लाह हर हाल में प्रभावशाली और तत्वदर्शी है।" (क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयतें-163 से 165)
>
> "हमने हर उम्मत में एक रसूल भेज दिया, और उसके द्वारा सबको सूचित कर दिया कि 'अल्लाह की बन्दगी करो और बढ़े हुए अवज्ञाकारी (तागूत) की बन्दगी से बचो।' इसके बाद उनमें से किसी को अल्लाह ने मार्ग दिखाया और किसी पर गुमराही छा गई। फिर तनिक ज़मीन में चल-फिरकर देख लो कि झुठलानेवालों का क्या अंजाम हो चुका है!"
>
> (क़ुरआन, सूरा-16 अन-नह्ल, आयत-36)

लेकिन वह सीधा रास्ता क्या है, जिसके लिए हिदायत माँगी जा रही है? क़ुरआन इस सवाल का जवाब कई जगहों पर देता है। हम क़ुरआन से कुछ जवाब पेश करते हैं। इसमें इनसानों के बनाए हुए धर्मों, नियमों और क़ानूनों पर बात की गई है और क़ुरआन ने मेहरबान रब की तरफ़ से दी हुई हिदायत पर विस्तार से बात की है। अल्लाह ने कहा है–

> "ऐ नबी! उनसे कहो कि आओ मैं तुम्हें सुनाऊँ तुम्हारे रब ने तुमपर क्या पाबन्दियाँ लगाई हैं : यह कि उसके साथ किसी को

साझीदार न बनाओ। और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, और अपनी औलाद को निर्धनता के भय से क़त्ल न करो, हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उनको भी देंगे, और बेशर्मी की बातों के क़रीब भी न जाओ, चाहे वे खुली हों या छिपी। और किसी जीव की, जिसे अल्लाह ने आदरणीय ठहराया है, हत्या न करो; यह और बात है कि न्याय के लिए ऐसा करना पड़े। ये बातें हैं जिनका आदेश उसने तुम्हें दिया है, शायद कि तुम समझ-बूझ से काम लो! और यह कि यतीम के माल के क़रीब न जाओ मगर ऐसे तरीक़े से जो सबसे अच्छा हो, यहाँ तक कि वे अपनी जवानी की उम्र को पहुँच जाएँ। और नाप-तौल में पूरा इनसाफ़ करो, हम हर व्यक्ति पर ज़िम्मेदारी का उतना ही बोझ रखते हैं जितने की उसमें सामर्थ्य है। और जब बात कहो इनसाफ़ की कहो चाहे मामला अपने नातेदार ही का क्यों न हो। और अल्लाह के वचन को पूरा करो। इन बातों का आदेश अल्लाह ने तुम्हें दिया है, शायद कि तुम नसीहत क़बूल करो! साथ ही उसका आदेश यह है कि यही मेरा सीधा मार्ग है। अतः तुम इसी पर चलो और दूसरे मार्गों पर न चलो कि वे उसके मार्ग से हटाकर तुम्हें बिखेर देंगे। यह है वह आदेश जो तुम्हारे रब ने तुम्हें दिया है, शायद कि तुम पथभ्रष्टता से बचो!" (सूरा-6, अल-अनआम, आयतें-151 से 153)

इस तरह अल्लाह की शिक्षाओं पर ज़िन्दगी बसर करके न केवल हम बुद्धि और समझ हासिल करते हैं, बल्कि इसको हर समय और हर जगह याद रखते हैं, चाहे हम जहाँ भी हों और जो कुछ भी हम कर रहे हों। इसके ज़रिए हम इस बात को यक़ीनी बनाते हैं कि हम सच्चाई, ईश-भय और परहेज़गारी की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं और ऐसी ज़िन्दगी जी रहे हैं जो कामयाब और सुखी-सम्पन्न लोगों की ज़िन्दगी है।

"दिखा हमें सीधा रास्ता, उन लोगों का रास्ता जिनको तूने इनाम दिया, जिनपर तेरा ग़ज़ब नहीं हुआ और न वे पथभ्रष्ट हुए।"

यह प्रार्थना न सिर्फ़ यह चाहती है कि सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई की

जाए, बल्कि गुमराही और उद्देश्यहीनता से पूरा छुटकारा हासिल हो।

दुआ के इस हिस्से की ख़ास बात यह है कि एहसानों और अनुग्रहों का सम्बन्ध बिलकुल साफ़-साफ़ अल्लाह की तरफ़ है, जबकि वे लक्षण जिनका सम्बन्ध ग़ज़ब और गुमराही से है, उनका सम्बन्ध जीवधारियों की तरफ़ है। (अब्दुल्लाह यूसुफ़ अली)

यह बात बिलकुल भी पेचीदा (जटिल) नहीं है। अस्ल चीज़ यह है कि सिर्फ़ परहेज़गारी और अच्छे-भले काम अल्लाह की ख़ुशी के लिए काफ़ी नहीं हैं। यह तो सिर्फ़ उसकी मेहरबानी और अपनी रचनाओं के प्रति उसकी मुहब्बत है कि वह अपनी ख़ुशी से हमें दे और हमारी ग़लतियों और कमियों को अनदेखा करे। इसके उलट हम उसके प्रकोप को सिर्फ़ अपने बुरे कामों की वजह से बुलाते हैं। ये कर्म ऐसे हैं जिनको किसी भी हालत में माफ़ नहीं किया जा सकता है।

क़ुरआन विभिन्न उदाहरणों से उन लोगों के चरित्र और आचरण को स्पष्ट करता है जो पथभ्रष्ट हो गए और उस पथभ्रष्टता के कारण से अल्लाह की नाराज़गी और अज़ाब (प्रकोप) के पात्र ठहरे।

साथ ही वह बुनियादी ख़ूबियाँ भी बताता है जिनको अपनाकर हम सीधे रास्ते (सत्य मार्ग) तक पहुँच सकते हैं और उसपर चल सकते हैं। ये वे ख़ूबियाँ हैं, जो हमको दुनिया में भी उसकी ख़ुशी और प्रसन्नता दिलवा सकती हैं और आख़िरत की ज़िन्दगी में भी हमको कामयाबी दिलवा सकती हैं। इनका ज़िक्र अगर अल्लाह ने चाहा तो अगले पृष्ठों में आएगा।

इस्लामी विद्वानों के अनुसार सूरा-1 अल-फ़ातिहा मानवता के मार्गदर्शन के लिए अपने पैदा करनेवाले (स्रष्टा) से एक प्रार्थना (दुआ) है और पूरा क़ुरआन पैदा करनेवाले की तरफ़ से उस दुआ का जवाब है–

> "हमने तुमको सात ऐसी आयतें दे रखी हैं जो बार-बार दोहराई जाने के योग्य हैं, और तुम्हें महान क़ुरआन प्रदान किया है।"
> (क़ुरआन, सूरा-15 अल-हिज्र, आयत-87)

# 1:2 अल-किताब (क़ुरआन)

"अलिफ़-लाम-मीम। यह अल्लाह की किताब है, इसमें कोई सन्देह नहीं। मार्गदर्शन है उन डरनेवालों के लिए जो ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, जो हमने उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं, जो किताब (अर्थात् क़ुरआन) तुमपर (ऐ मुहम्मद!) उतारी गई है और जो किताबें तुमसे पहले उतारी गई थीं उन सबपर ईमान लाते हैं, और परलोक (आख़िरत) पर पूर्ण विश्वास रखते हैं। ऐसे लोग अपने रब की ओर से सीधे मार्ग पर हैं और वही सफलता प्राप्त करनेवाले हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयतें-1 से 5)

ये क़ुरआन की सूरा-2 अल-बक़रा की वे आयतें हैं, जो सूरा-1 अल-फ़ातिहा के तुरन्त बाद आती हैं।

सूरा-1 अल-फ़ातिहा की दुआ का जवाब सूरा-2 अल-बक़रा के शुरू में सारे जहान के रब की ओर से दिया जा रहा है।

यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि यह सन्देश पूरी मानवता के लिए है। लेकिन इससे वही लोग फ़ायदा उठा पाएँगे, जिनमें कुछ गुण मूल रूप से पाए जाते हैं।

**पहली शर्त :** उन लोगों के लिए, जो इससे लाभान्वित होंगे, यह है कि जो—

"अल्लाह से डरते हैं और बिना देखे उसपर ईमान लाते हैं।"

यह शर्त उन लोगों में किसी तरह का भेदभाव रंग, नस्ल, क़ौम, जगह और ज़ात-पात के आधार पर नहीं करती। यह इनसान की सोच को सम्बोधित करती है। उसकी बुद्धि और विवेक से संवाद करती है और उसके जीवन का उद्देश्य बताती है। क़ुरआन में अल्लाह फ़रमाता है—

"लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और

फिर तुम्हारी क़ौमें और बिरादरियाँ बना दीं ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह की दृष्टि में तुममें सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे ज़्यादा (अल्लाह से) डरता है। यक़ीनन अल्लाह सब कुछ जाननेवाला और ख़बर रखनेवाला है।" (क़ुरआन, सूरा-49 अल-हुजुरात, आयत-13)

इज़्ज़त या प्रतिष्ठा का स्रोत क़ुरआन के अनुसार सिर्फ़-और-सिर्फ़ ईश-भय और नेकी की ज़िन्दगी है।

सारे भले, अच्छे चरित्रवाले और अल्लाह से डरनेवाले लोग एक समूह होंगे। हर आदमी, चाहे वह किसी जाति, रंग, नस्ल और देश का रहनेवाला हो, इस समुदाय (मिल्लत) का एक सदस्य हो सकता है। अल्लाह से डर और परहेज़गारी की बुनियाद क़ुरआन की बुनियादों पर होनी चाहिए। यह हिस्सा ख़ास तौर से इनसान के अपने-आपसे सम्बन्ध से जुड़ा हुआ है। इसके लिए इनसान को पहले तो अपने रुख़ को तय करना होता है और फिर अपनी सोच और आचरण पर निरन्तर नज़र रखनी पड़ती है। निरन्तर सतर्कता ही उसको ग़लत रास्ते और गुमराही की डगर पर जाने से बचा सकती है।

**दूसरी शर्त :** माँग करती है कि हर आदमी इबादतों के मामले में निरन्तरता लाए और सुस्ती न दिखाए।

"(जो) नमाज़ क़ायम करते हैं...।"

यह शर्त आदमी के उसके पैदा करनेवाले से सम्बन्ध के बारे में है। यह उससे स्रष्टा के प्रति ऐसी वफ़ादारी चाहता है, जो स्थायी हो और उसमें किसी तरह का संकोच न हो। किसी भी हालत में इनसान केवल उसी से सच्ची मदद माँगे और उसके अलावा किसी को अपना उद्धारकर्ता न समझे।

**तीसरी शर्त :** "हमने जो दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं।"

यह शर्त इनसान की सामाजिक ज़िम्मेदारी से सम्बन्ध रखती है। इनसान को यह याद रखना चाहिए कि जो कुछ भी धन-दौलत और संसाधन उसके पास है, जो कुछ भी ज्ञान उसे मिला है, वह सब अल्लाह की ख़ास देन है। यह उपहार से अधिक एक परीक्षा है! वह परीक्षा में नाकाम (विफल)

हो जाएगा, जो उसको ज़रूरतमन्दों पर ख़र्च करने में नाकाम (विफल) रहता है। तो ये तीन शर्तें माँग करती हैं कि आदमी—

1. अपने प्रति मुख़लिस (निश्छल) हो।
2. अल्लाह से लगाव रखने में मुख़लिस (निश्छल) हो।
3. अपने समाज और आसपास के लोगों के लिए मुख़लिस (निश्छल) हो।

इस शर्त का अगला हिस्सा ईश-वाणी (कलामे-इलाही) के सार्वभौमिक और शाश्वत होने पर ज़ोर देता है—

> "और (वे लोग) जो किताब (अर्थात् क़ुरआन) तुमपर (ऐ मुहम्मद!) उतारी गई है और जो किताबें तुमसे पहले उतारी गई थीं उन सबपर ईमान लाते हैं।"

क़ुरआन साफ़ अन्दाज़ में यह एलान करता है कि अल्लाह ने इनसान के मार्गदर्शन का उसी वक़्त से इन्तिज़ाम कर दिया जब उसने ज़मीन पर क़दम रखा।

पैग़म्बरों (अलैहि॰) को हर उस जगह भेजा गया जहाँ पर उनकी ज़रूरत थी। उन पैग़म्बरों को अल्लाह की तरफ़ से प्रकाशना (वह्य) के साथ भेजा गया। क़ुरआन एलान करता है—

> "शुरू में सब लोग एक ही तरीक़े पर थे। (फिर यह हालत बाक़ी न रही और विभेद प्रकट हुए) तब अल्लाह ने नबी भेजे जो सीधे मार्ग पर चलने पर ख़ुशख़बरी देनेवाले और टेढ़ी चाल के परिणामों से डरानेवाले थे, और उनके साथ सत्य पर आधारित पुस्तक उतारी, ताकि सत्य के विषय में लोगों के बीच जो विभेद उत्पन्न हो गए थे, उनका फ़ैसला करे—(और इन विभेदों के प्रकट होने का कारण यह न था कि शुरू में लोगों को सत्य का ज्ञान कराया ही नहीं गया था। नहीं,) विभेद उन लोगों ने किया जिन्हें सत्य का ज्ञान दिया जा चुका था। उन्होंने स्पष्ट आदेश पा लेने के बाद केवल इसलिए सत्य को छोड़कर विभिन्न रास्ते निकाले कि वे परस्पर ज़्यादती करना चाहते थे—अतः जिन लोगों ने पैग़म्बरों को माना, उन्हें अल्लाह ने अपनी अनुमति से उस सत्य का रास्ता

दिखा दिया, जिसमें लोगों ने विभेद किया था। अल्लाह जिसे चाहता है, सीधा मार्ग दिखा देता है।"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-213)

यहाँ पर सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह ईमान का ज़रूरी हिस्सा है कि हम उन सारे पैग़म्बरों पर ईमान लाएँ और उनके उस बुनियादी सन्देश पर भी ईमान लाएँ जिसके साथ वे दुनिया में भेजे गए थे।

और **आख़िरी शर्त** यह है कि वे—

"आख़िरत पर यक़ीन (पूर्ण विश्वास) रखते हैं।"

यह शर्त हमें बार-बार याद दिलाती है कि हमें बिना उद्देश्य के पैदा नहीं किया गया है। हिसाब-किताब का दिन ज़रूर आएगा और उस दिन हमें अपने बनानेवाले के सामने खड़ा होना होगा और अपने कर्मों का जवाब देना होगा। हमारी आस्था का यह हिस्सा ज़िन्दगी के प्रति हमारा दृष्टिकोण पूरी तरह परिवर्तित कर देता है। हमें याद दिलाता है कि हमको अपने हर काम (छोटा हो या बड़ा) का हिसाब देना होगा। इसलिए ज़रूरी है कि हम उस हिदायत की तलाश में रहें जो हमारे कर्मों को हमेशा ठीक रखे, उनमें कुछ कमी न आने दे। यही बात क़ुरआन के अवतरण का उद्देश्य भी है।

## अवतरण का उद्देश्य

"लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उपदेश आ गया है। यह वह चीज़ है जो दिलों के रोगों को ठीक करने के लिए है, और जो उसे स्वीकार कर लें उनके लिए मार्गदर्शन और दयालुता है।"

(क़ुरआन, सूरा-10 यूनुस, आयत-57)

यह पैग़ाम सारे इनसानों के लिए है और इससे फ़ायदा उठानेवाला कोई भी हो सकता है। इसमें कोई भेदभाव नहीं—

"और इसी तरह यह किताब हमने उतारी है, एक बरकतवाली किताब। अतः तुम इसका अनुसरण करो और परहेज़गारी की नीति अपनाओ, असम्भव नहीं कि तुमपर दया की जाए!"

(क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयत-155)

"हालाँकि यह (क़ुरआन) तो सारे जहानवालों के लिए एक नसीहत है।" (क़ुरआन, सूरा-68 अल-क़लम, आयत-52)

"यह (क़ुरआन) तो सारे जहानवालों के लिए एक नसीहत है, तुममें से प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो सीधे मार्ग पर चलना चाहता हो।" (क़ुरआन, सूरा-81 अत-तकवीर, आयतें: 27-28)

वे लोग जो सीधे रास्ते पर चलने की भरसक कोशिश करते हैं, उनका बेहतरीन अंजाम स्पष्ट है।

"लोगो! हमने तुम्हारी ओर एक ऐसी किताब भेजी है जिसमें तुम्हारा ही ज़िक्र है, क्या तुम समझते नहीं हो!"

(क़ुरआन, सूरा-21 अल-अंबिया, आयत-10)

यह किताब दुनिया में भी हमें कामयाबी की ख़ुशख़बरी सुनाती है और आख़िरत में भी। शर्त यह है कि हम इसपर सोच-विचार करें, इसको समझने की कोशिश करें, सही और ग़लत में भेद करें, सीधे रास्ते पर चलें और ग़लत कामों से बचते रहें।

"यह एक बड़ी बरकतवाली किताब है जो (ऐ नबी!) हमने तुम्हारी ओर अवतरित की है, ताकि ये लोग इसकी आयतों पर विचार करें और बुद्धि और विवेक रखनेवाले इससे शिक्षा लें।"

(क़ुरआन, सूरा-38 सॉद, आयत-29)

सारे जहान के रब ने अपने आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के द्वारा इनसानियत (मानवता) को वह रौशनी प्रदान की है जो इसको अज्ञानता के अन्धेरे और तबाही से निकालकर रौशनी और कामयाबी की राह पर ले आए।

"अलिफ़-लाम-रॉ। ऐ नबी! यह एक किताब है जिसको हमने तुम्हारी ओर अवतरित किया है ताकि तुम लोगों को अँधेरों से निकालकर प्रकाश में लाओ, उनके रब की मेहरबानी से, उस ईश्वर के मार्ग पर जो प्रभुत्वशाली और अपने-आपमें प्रशंसनीय है।" (क़ुरआन, सूरा-14 इबराहीम, आयत-1)

"अलिफ़-लाम-रॉ। ये आयतें हैं ईश्वरीय ग्रन्थ और स्पष्ट क़ुरआन की।" (क़ुरआन, सूरा-15 अल-हिज्र, आयत-1)

"बहुत ही बरकतवाला है वह जिसने यह फ़ुरक़ान (कसौटी) अपने बन्दे पर अवतरित किया ताकि सारे जहानवालों के लिए सावधान कर देनेवाला हो।" (क़ुरआन, सूरा-25 अल-फ़ुरक़ान, आयत-1)

यह कसौटी इनसान के ऊपर थोपी नहीं गई है और उसको मजबूर नहीं किया गया है कि वह इसको ज़बरदस्ती स्वीकार कर ले। हालाँकि अल्लाह के वश में था कि वह चाहता तो ऐसा करता—

"फिर ऐ नबी! हमने तुम्हारी ओर यह किताब भेजी जो हक़ (सत्य) लेकर आई है और मूल किताब में से जो कुछ उसके आगे मौजूद है उसकी पुष्टि करनेवाली और उसकी संरक्षक है। अतः तुम अल्लाह के उतारे हुए क़ानून के अनुसार लोगों के मामलों का फ़ैसला करो और जो हक़ (सत्य) तुम्हारे पास आया है उससे मुँह मोड़कर उनकी इच्छाओं का पालन न करो—हमने तुम (इनसानों) में से हर एक के लिए एक धर्म-विधान और कार्य-प्रणाली निर्धारित की। यद्यपि अगर तुम्हारा अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक उम्मत (समुदाय) भी बना सकता था, लेकिन उसने यह इसलिए किया कि जो कुछ उसने तुम लोगों को दिया है उसमें तुम्हारी आज़माइश करे। अतः भलाइयों में एक-दूसरे से आगे बढ़ जाने की कोशिश करो। आख़िरकार तुम सबको अल्लाह की ओर पलटकर जाना है, फिर वह तुम्हें अस्ल हक़ीक़त बता देगा जिसमें तुम मतभेद करते रहे हो।" (क़ुरआन, सूरा-5 अल-माइदा, आयत-48)

हमें आज़ादी दी गई है कि हम अपनी राह चुनें और अच्छे या बुरे दोनों रास्तों में से किसी एक रास्ते का अपने लिए चयन करें—

"इस क़ुरआन को हमने सत्य के साथ उतारा है और सत्य ही के साथ यह उतरा है, और ऐ नबी! तुम्हें हमने इसके सिवा और किसी काम के लिए नहीं भेजा कि (जो मान ले उसे) ख़ुशख़बरी दे दो और (जो न माने उसे) सावधान कर दो।"

(क़ुरआन, सूरा-17 बनी-इसराईल, आयत-105)

"हमने यह किताब तुमपर इसलिए उतारी है कि तुम उन मतभेदों की वास्तविकता इनपर खोल दो जिनमें ये पड़े हुए हैं। यह किताब मार्गदर्शन और दयालुता बनकर अवतरित हुई है उन लोगों के लिए जो इसे मान लें।" (क़ुरआन, सूरा-16 अन-नह्ल, आयत-64)

"लोगो! हमने तुम्हारी ओर एक ऐसी किताब भेजी है जिसमें तुम्हारा ही ज़िक्र है, क्या तुम समझते नहीं हो!"

(क़ुरआन, सूरा-21 अल-अंबिया, आयत-10)

सन्देश बिलकुल साफ़ है। यह इसलिए है कि सम्बोधित कोई और नहीं, बल्कि हमारा बनानेवाला (स्रष्टा) है। अल्लाह की वाणी (कलाम) में किसी भी तरह की चापलूसी या मजबूरी की गुंजाइश नहीं है। उसने पैग़म्बर को भी साफ़-साफ़ हुक्म दिया कि लोगों को बता दे कि वे केवल पैग़ाम लानेवाले हैं—

"(ऐ नबी!) इनसे कह दो कि मैं इस सन्देश पहुँचाने (तबलीग़) पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, और न मैं बनावटी लोगों में से हूँ। यह तो एक नसीहत है सारे जहानवालों के लिए। और थोड़ा समय ही गुज़रेगा कि तुम्हें इसका हाल खुद मालूम हो जाएगा।" (क़ुरआन, सूरा-38 सॉद, आयतें-86 से 88)

## रचनाकार

"अर्रहमान (बड़ा ही दयावान), जिसने क़ुरआन की शिक्षा दी।"

(क़ुरआन, सूरा-55 अर-रहमान, आयतें:1-2)

अब्दुल्लाह यूसुफ़ अली इस आयत के बारे में बताते हैं—

"वह्य (प्रकाशना) निहायत मेहरबान खुदा की तरफ़ से अवतरित (नाज़िल) हुई है। और यह उसकी मेहरबानियों की सबसे बड़ी निशानियों और इनसानों के लिए सबसे बड़ी रहमतों (मेहरबानियों) में से है।"

पहली आयत सिर्फ़ एक शब्द 'अर्रहमान' यानी दयावान पर आधारित है। यह शब्द अल्लाह की ख़ूबी 'दयावान' को ज़ाहिर करता है और उसके गुण रह्म और करम (दयालुता और मेहरबानी) को सारे इनसानों के लिए

आम करता है। (विस्तार के लिए देखें—प्रथम अध्याय) उसके सारी इनसानियत के लिए पूर्ण दयावान होने का सुबूत दूसरी आयत में है। उसने इनसानों को क़ुरआन की शिक्षा उनके फ़ायदे और उनकी कामयाबी और ख़ुशहाली के लिए दी।

"इनसान पर अल्लाह का सबसे बड़ा एहसान यह है कि उसको क़ुरआन प्रदान किया। यह बात स्पष्ट रहनी चाहिए कि यह एलान कि अल्लाह रहमान (दयावान) है, इसका सबसे अहम सुबूत यह आयत है जो कहती है कि उसने इनसान को क़ुरआन सिखाया।"
(बरोही)

और यह एलान कि क़ुरआन पूर्ण रूप से अल्लाह की तरफ़ से है, क़ुरआन में कई जगहों पर कहा गया है। आम तौर पर यह एलान क़ुरआन की सूरतों के शुरू में किया गया है—

"इस किताब का अवतरण अल्लाह प्रभुत्वशाली और सर्वज्ञ की ओर से है। (ऐ नबी!) यह किताब हमने तुम्हारी ओर सत्य के साथ अवतरित की है, अतः तुम अल्लाह ही की बन्दगी करो, दीन (धर्म) को उसी के लिए ख़ालिस (विशिष्ट) करते हुए।"
(क़ुरआन, सूरा-39 अज़्-ज़ुमर, आयतें:1-2)

"हा-मीम। इस किताब का अवतरण अल्लाह की तरफ़ से है जो प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।"
(क़ुरआन, सूरा-45 अल-जासिया, आयतें:1-2)

यह एलान एक अन्य स्थान पर भी दोहराया गया है—

"अलिफ़-लाम-मीम। अल्लाह, वह जीवन्त नित्य सत्ता, जो जगत-व्यवस्था को सँभाले हुए है, वास्तव में उसके सिवा कोई ईश-प्रभु नहीं है। ऐ नबी! उसने तुमपर यह किताब उतारी, जो सत्य लेकर आई है और उन किताबों की पुष्टि कर रही है जो पहले से आई हुई थीं। इससे पहले वह इनसानों के मार्गदर्शन के लिए तौरात और इंजील उतार चुका है।"
(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयतें-1 से 3)

"बहुत ही बरकतवाला है वह जिसने यह फ़ुरक़ान (कसौटी) अपने बन्दे पर अवतरित किया, ताकि सारे जहानवालों के लिए सावधान कर देनेवाला हो।" (क़ुरआन, सूरा-25 अल-फ़ुरक़ान, आयत-1)

इन तमाम उदाहरणों में इस एलान के बाद अल्लाह के एक होने, उसकी शक्ति और सामर्थ्य और दुनिया पर उसकी सत्ता पर वार्ता होती है। यह शैली क़ुरआन के बुनियादी सन्देश को फैलाने में सहायक होती है। और इसलिए है, ताकि हमको इस बात पर पूरा यक़ीन दिलाया जा सके कि सबसे समझदारी की बात यह है कि हम अपनी पूरी ज़िन्दगी अल्लाह के बताए हुए क़ानूनों के मुताबिक़ गुज़ारें। ऐसा हमें इसलिए करना चाहिए, क्योंकि उसको अपने सभी प्राणियों और सम्पूर्ण सृष्टि का पूरा ज्ञान है और उसको पूरी तरह से मालूम है कि उसके बन्दों के लिए क्या अच्छा है।

"ऐ नबी! उनसे कह दो कि 'इसे अवतरित किया है उसने जो ज़मीन और आसमानों का भेद जानता है।' वास्तव में वह बड़ा क्षमाशील और दयावान है।"

(क़ुरआन, सूरा-25 अल-फ़ुरक़ान, आयत-6)

इस बात पर बार-बार ज़ोर डाला गया है कि क़ुरआन सारे जहान के रब की तरफ़ से है और इसी के साथ अल्लाह के विभिन्न गुणों का उल्लेख किया गया है।

"अलिफ़-लाम-मीम। इस किताब का अवतरण निस्सन्देह सारे जहान के रब की ओर से है।"

(क़ुरआन, सूरा-32 अस-सजदा, आयतें-1 से 2)

"(और यह क़ुरआन) प्रभुत्वशाली और दयामय हस्ती का उतारा हुआ है।" (क़ुरआन, सूरा-36 यासीन, आयत-5)

"हा-मीम। इस किताब का अवतरण अल्लाह की ओर से है जो प्रभुत्वशाली है, सब कुछ जाननेवाला है, गुनाह माफ़ करनेवाला और तौबा क़बूल करनेवाला है, कठोर अज़ाब (दण्ड) देनेवाला और बड़ा शक्तिशाली है, कोई पूज्य उसके सिवा नहीं, उसी की

ओर सबको पलटना है।"

(क़ुरआन, सूरा-40 अल-मोमिन, आयतें-1 से 3)

"हा-मीम, यह करुणामय और दयावान ईश्वर की ओर से उतारी हुई (किताब) है।"

(क़ुरआन, सूरा-41 हा-मीम अस-सजदा, आयतें-1 से 2)

"यह सारी दुनिया के रब की ओर से अवतरित हुआ है।"

(क़ुरआन, सूरा-69 अल-हाक़्क़ा, आयत-43)

"असत्य न सामने से इसपर आ सकता है न पीछे से, यह एक तत्वदर्शी और प्रशंसित (ईश्वर) की उतारी हुई (किताब) है।"

(क़ुरआन, सूरा-41 हा-मीम अस-सजदा, आयत-42)

सूरा-41 हा-मीम सजदा की यह आयत ईमानवालों को यह यक़ीन दिलाती है कि इस किताब में कभी भी कोई ख़राबी नहीं आ सकती और यह कि कोई इसमें किसी तरह का बदलाव नहीं कर सकता। यह विधर्मियों और विरोधियों के सामने एक चैलेंज भी पेश करती है। इससे यह भी यक़ीन और भरोसा हासिल होता है कि यह पैग़ाम जिसको क़ुरआन लेकर आया है, उसको किसी भी तरह का कोई ख़तरा नहीं है। इसको विज्ञान में होनेवाली नित नए शोधों और आविष्कारों से भी किसी ख़तरे का सामना नहीं है।

सच्ची बात तो यह है कि क़ुरआन बार-बार हमसे माँग करता है कि हम ज़मीन और आसमान की रचना और उसकी बनावट पर विचार करें और इस तरह सच्चाई तक पहुँचने की कोशिश करें। क़ुरआन में विभिन्न प्रकार से प्रकृति और स्वयं इनसान की संरचना के उदाहरणों को बयान करने के बाद अल्लाह कहता है—

"इस प्रकार हम निशानियाँ खोल-खोलकर पेश करते हैं उन लोगों के लिए जो सोचने-समझनेवाले हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-10 यूनुस, आयत-24)

"इन सारी चीज़ों में बड़ी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार से काम लेते हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-13 अर-रअ़्द, आयत-3)

"इन सब चीज़ों में बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।" (क़ुरआन, सूरा-13 अर-रअ्द, आयत-4)

"इसमें एक बड़ी निशानी है उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं।" (क़ुरआन, सूरा-16 अन-नह्ल, आयत-11)

"इसमें बड़ी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करनेवाले हैं।" (क़ुरआन, सूरा-39 अज़-ज़ुमर, आयत-42)

क़ुरआन स्पष्ट रूप से कहता है कि पूरे विश्व को मनुष्य के लिए बनाया गया है–

"उस (सृष्टिकर्ता) ने ज़मीन और आसमानों की सारी ही चीज़ों को अपनी तरफ़ से तुम्हारे अधीन कर दिया है। निस्सन्देह इसमें बड़ी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करनेवाले हैं।" (क़ुरआन, सूरा-45 अल-जासिया, आयत-13)

क़ुरआन लोगों को उभारता है कि वे सोच-विचार करें, बुद्धि और विवेक का इस्तेमाल करें और सच तक पहुँचने की कोशिश करें। पूरी खोजबीन के बाद ही क़ुरआन अपनी सच्चाई के क़बूल करने को कहता है–

"क्या ये लोग क़ुरआन पर विचार नहीं करते? अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की ओर से होता तो इसमें बहुत कुछ विरोधाभास पाया जाता।" (क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-82)

क़ुरआन में कोई बदलाव कभी भी नहीं होनेवाला है। अल्लाह फ़रमाता है–

"रहा यह ज़िक्र (क़ुरआन), तो इसको हमने उतारा है और हम ख़ुद इसके रक्षक हैं।" (क़ुरआन, सूरा-15 अल-हिज्र, आयत-9)

क़ुरआन का बड़े-से-बड़ा विरोधी भी यह स्वीकार करने पर मजबूर है कि चौदह सौ साल से अधिक समय गुज़रने के बाद भी क़ुरआन के एक शब्द में भी कोई बदलाव अब तक नहीं हुआ है। इन आलोचकों की उपेक्षा करने के बजाए क़ुरआन इनके सामने एक चैलेंज पेश करता है–

"और यह क़ुरआन वह चीज़ नहीं है जो अल्लाह की प्रकाशना

(वह्य) और शिक्षा के बिना रचा जा सके, बल्कि यह तो जो कुछ पहले आ चुका था उसकी पुष्टि और विशिष्ट किताब का विस्तार है। इसमें कोई शक नहीं कि यह विश्व के शासक की ओर से है। क्या ये लोग कहते हैं कि पैग़म्बर ने इसे खुद रच लिया है? कहो, अगर तुम अपने इस इलज़ाम में सच्चे हो तो एक सूरा इस जैसी रचकर लाओ और एक अल्लाह को छोड़कर जिस-जिसको बुला सकते हो सहायता के लिए बुला लो।''

(क़ुरआन, सूरा-10 यूनुस, आयतें: 37-38)

स्पष्ट रहे कि क़ुरआन की सबसे लम्बी सूरा (सूरा-2 बक़रा) में 286 आयतें हैं, जबकि सबसे छोटी सूरा (सूरा-108 कौसर) में सिर्फ़ तीन आयतें हैं। इतिहास के विभिन्न कालखण्डों में व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से इस तरह की कोशिशें की गईं, लेकिन उन सबको नाकामी का मुँह देखना पड़ा।

क़ुरआन में अल्लाह, साफ़-साफ़ शब्दों में, शक में पड़े लोगों को सम्बोधित करते हुए कहता है–

''और अगर तुम्हें इस बात में सन्देह है कि यह किताब जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है, यह हमारी है या नहीं, तो इस जैसी एक ही सूरा बना लाओ, अपने मत के सारे ही लोगों को बुला लो, एक अल्लाह को छोड़कर बाक़ी जिस-जिसकी चाहो सहायता ले लो, अगर तुम सच्चे हो तो यह काम करके दिखाओ। लेकिन अगर तुमने ऐसा न किया, और निश्चय ही कभी नहीं कर सकते, तो डरो उस आग से जिसका ईंधन बनेंगे इनसान और पत्थर, जो जुटाई गई है इनकार करनेवालों के लिए।''

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयतें: 23-24)

**''अतः ईमान लाओ अल्लाह पर, और उसके रसूल पर, और उस प्रकाश पर जो हमने उतारा है। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।''**

(क़ुरआन, सूरा-64 अत-तग़ाबुन, आयत-8)

अध्याय-2

# अल्लाह : ब्रह्माण्ड का रचयिता

2:1 सर्वोच्च अल्लाह

2:2 सृष्टि का निर्माण

2:3 इनसान की रचना

# 2:1 सर्वोच्च अल्लाह

"सृष्टि की कोई चीज़ उसके जैसी नहीं।"

(क़ुरआन, सूरा-42 अश-शूरा, आयत-11)

यह वाक्य बिलकुल स्पष्ट और अटल है। यह हमारी सोच और कल्पना को भटकने नहीं देता और अल्लाह को समझने के लिए किसी भी तरह की उपमा या प्रतिमा गढ़ने की गुंजाइश नहीं छोड़ता। इनसान के पूरे इतिहास में लोगों ने दर्शन और तर्कशास्त्र में तरह-तरह के अक़्ली घोड़े दौड़ाए हैं ताकि ख़ुदा की हस्ती पर दलीलें दें या उसको नकारें। उन लोगों ने इनसान की बुद्धि, उसके ज्ञान और कल्पना की सीमा का आभास नहीं किया। लेकिन क़ुरआन इनसान के अक़्ल की सीमा को जानते हुए उसे इन शब्दों में सचेत करता है—

"अतः अल्लाह के लिए मिसालें न गढ़ो, अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।" (क़ुरआन, सूरा-16 अन-नह्ल, आयत-74)

जैसा कि हम पहले अध्याय में देख चुके हैं कि सृष्टि के स्रष्टा का व्यक्तिगत नाम अल्लाह है। वही इबादत के लायक़ और उपासना का हक़दार है (अल-इलाह यानी उपास्य या ईश्वर)। शब्द 'इलाह' में एक तरह की हैरत और विस्मय छिपा हुआ है। शायद इसी लिए अल्लाह वह है कि उसके बारे में हम जितना ज़्यादा सोचेंगे हमारे आश्चर्य और विस्मय में केवल वृद्धि ही होगी। अगर इनसान अल्लाह को उन जानकारियों के ज़रिए से पहचानने की कोशिश करे जो उसने ख़ुद बनाई हैं तो पूरी कोशिश अकारथ जाएगी। मशहूर क़ुरआन विशेषज्ञ और दार्शनिक फ़ख़रुद्दीन राज़ी (रह०) ने इस बात को अपने शब्दों में इस प्रकार कहा है—

"मैंने तर्कशास्त्र और दर्शनशास्त्र के सारे तरीक़ों को ख़ूब देखा-भाला

लेकिन आख़िरकार मालूम हुआ कि न तो उनमें किसी बीमार दिल के लिए इलाज है, न किसी प्यासे के लिए तृप्ति। सबसे बेहतर और हक़ीक़त से निकटतम राह वही है जो क़ुरआन की राह है। प्रमाणिकता और असमतुल्यता, दोनों का दामन थामे रहो। और प्रमाणिकता के लिए कहा, 'वह रहमान (सृष्टि के) अर्श (राज-सिंहासन) पर विराजमान है' (क़ुरआन, सूरा-20 ताहा, आयत-5) और समतुल्यता को नकारने के लिए कहा, 'सृष्टि की कोई चीज़ उसकी जैसी नहीं,' (क़ुरआन, सूरा-42 अश-शूरा, आयत-11)। और जिस किसी को मेरी तरह इस मामले में अनुभव का मौक़ा मिला होगा, उसे मेरी तरह यह सच्चाई मालूम हो गई होगी।"

लेकिन कोई ख़ुदा को पहचाने कैसे? क़ुरआन हमें सोच-विचार और चिन्तन-मनन करने पर उभारता है। वह कहता है कि हम अल्लाह की दी हुई निशानियों पर ग़ौर करके अल्लाह पर बिना देखे ईमान लाएँ—

"(इस सत्य को पहचानने के लिए अगर कोई निशानी और लक्षण अपेक्षित है तो) जो लोग अक़्ल से काम लेते हैं उनके लिए आसमानों और ज़मीन की संरचना में, रात और दिन के निरन्तर एक-दूसरे के बाद आने में, उन नौकाओं में जो इनसान के लाभ की चीज़ें लिए हुए नदियों और समुद्रों में चलती-फिरती हैं, बारिश के उस पानी में जिसे अल्लाह ऊपर से बरसाता है, फिर उसके द्वारा मुर्दा ज़मीन को जीवन प्रदान करता है, और (अपनी इसी व्यवस्था के कारण) धरती में हर तरह के जीवधारियों को फैलाता है, हवाओं की गर्दिश में, और उन बादलों में जो आसमान और ज़मीन के बीच आज्ञा के वशीभूत बनाकर रखे गए हैं, अनगिनत निशानियाँ हैं।" (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-164)

"उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर यकायक तुम इनसान हो कि (ज़मीन में) फैलते जा रहे हो। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही सहजाति से बीवियाँ बनाईं ताकि तुम उनके पास

शान्ति प्राप्त करो और तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा कर दी। यक़ीनन इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं। और उसकी निशानियों में से आसमानों और ज़मीन की सृष्टि, और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों की भिन्नता है। यक़ीनन इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं बुद्धिमान लोगों के लिए। और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन को सोना और तुम्हारा उसके अनुग्रह (आजीविका) को तलाश करना है। यक़ीनन इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो (ध्यानपूर्वक) सुनते हैं। और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुम्हें बिजली की चमक दिखाता है, भय के साथ भी और लोभ के साथ भी। और आसमान से पानी बरसाता है, फिर उसके द्वारा ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दगी प्रदान करता है। यक़ीनन इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं। और उसकी निशानियों में से यह है कि आसमान और ज़मीन उसके आदेश से क़ायम हैं। फिर ज्यों ही कि उसने तुम्हें ज़मीन से पुकारा, बस एक ही पुकार में अचानक तुम निकल आओगे। आसमानों और ज़मीन में जो भी हैं, उसके बन्दे हैं। सब-के-सब उसी की आज्ञा के अधीन हैं। वही है जो सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर वही उसकी पुनरावृत्ति करेगा और यह उसके लिए ज़्यादा आसान है। आसमानों और ज़मीन में उसका गुण सर्वोच्च है और वह प्रभुत्वशाली और तत्त्वदर्शी है। वह तुम्हें ख़ुद तुम्हारे अपने ही व्यक्तित्व से एक मिसाल देता है। क्या तुम्हारे उन दासों में से जो तुम्हारे स्वामित्व में हैं कुछ दास ऐसे भी हैं जो हमारे दिए हुए माल और दौलत में तुम्हारे साथ बराबर के साझीदार हों और तुम उनसे उस तरह डरते हो जिस तरह आपस में अपने समकक्ष व्यक्तियों से डरते हो—इस तरह हम आयतें खोलकर प्रस्तुत करते हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।" (क़ुरआन, सूरा-30 अर-रूम, आयतें-20 से 28)

"अल्लाह हर चीज़ का पैदा करनेवाला है और वही हर चीज़ पर निगहबान है। ज़मीन और आसमानों के ख़ज़ानों की कुंजियाँ उसी के पास हैं। और जो लोग अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं वही घाटे में रहनेवाले हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-39 अज़-ज़ुमर, आयतें: 62-63)

"जब तुम्हारे पास वे लोग आएँ जो हमारी आयतों को मानते हैं तो उनसे कहो, 'तुमपर सलामती है। तुम्हारे रब ने दयालुता की नीति अपने ऊपर अनिवार्य कर ली है। (यह उसकी दया ही है कि) अगर तुममें से कोई नादानी के साथ कोई बुराई कर बैठा हो, फिर उसके बाद तौबा और सुधार कर ले तो वह उसे माफ़ कर देता है और नरमी से काम लेता है।' और इस तरह हम अपनी निशानियाँ खोल-खोलकर पेश करते हैं, ताकि अपराधियों का मार्ग बिलकुल स्पष्ट हो जाए'।"

(क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयतें : 54-55)

क़ुरआन हमें वह ज्ञान और विवेक प्रदान करता है, जो हमें अल्लाह की हस्ती के लिए उपमाएँ गढ़ने के बजाए उसकी सर्वोच्च ख़ूबियों को समझने-बूझने के द्वारा उसकी हस्ती के सामने सिर झुका दें—

"वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, अदृश्य और प्रकट हर चीज़ का जाननेवाला, वही सर्वोच्च करुणामय और दयावान है। वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं। वह सम्राट है बड़ा ही पवित्र, सर्वथा सलामती, निश्चिन्तता प्रदान करनेवाला, निगहबान, सबपर प्रभुत्व रखनेवाला, अपना आदेश बलपूर्वक लागू करनेवाला, और बड़ा ही होकर रहनेवाला। पाक है अल्लाह उस 'शिर्क' (बहुदेववाद के कर्म) से जो लोग कर रहे हैं! वह अल्लाह ही है जो सृष्टि की योजना बनानेवाला और उसको लागू करनेवाला और उसके अनुसार रूप बनानेवाला है। उसके लिए उत्तम नाम हैं। हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है उसकी तसबीह (गुणगान) कर रही है, और वह प्रभुत्वशाली और

तत्वदर्शी है।" (क़ुरआन, सूरा-59 अल-हश्र, आयतें-22 से 24)

"अल्लाह की तसबीह (गुणगान) की है हर उस चीज़ ने जो ज़मीन और आसमानों में है, और वही प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है। ज़मीन और आसमानों के राज्य का मालिक वही है, ज़िन्दगी प्रदान करता है और मौत देता है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है। वही प्रथम भी है और अन्तिम भी, और गोचर (ज़ाहिर) भी है और अगोचर (छिपा) भी, और उसे हर चीज़ का ज्ञान है। वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिनों में पैदा किया और फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। उसके ज्ञान में है जो कुछ ज़मीन में जाता है और जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है। वह तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम हो। जो काम भी तुम करते हो उसे वह देख रहा है। वही ज़मीन और आसमानों के राज्य का मालिक है और सारे मामले फ़ैसले के लिए उसी की ओर लौटाए जाते हैं।" (क़ुरआन, सूरा-57 अल-हदीद, आयतें-1 से 5)

"अल्लाह, वह जीवन्त शाश्वत सत्ता, जो सम्पूर्ण जगत् को सँभाले हुए है, उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है। वह न सोता है और न उसे ऊँघ लगती है। ज़मीन और आसमानों में जो कुछ है, उसी का है। कौन है जो उसके सामने उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके? जो कुछ बन्दों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है, उसे भी वह जानता है और उसके ज्ञान में से कोई चीज़ उनके ज्ञान की पकड़ में नहीं आ सकती, यह और बात है कि किसी चीज़ का ज्ञान वह ख़ुद ही उनको देना चाहे। उसका राज्य आसमानों और ज़मीन पर छाया हुआ है और उनकी देख-रेख उसके लिए कोई थका देनेवाला काम नहीं है। बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है।" (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-255)

"हा-मीम। इस किताब का अवतरण अल्लाह की ओर से है जो

प्रभुत्वशाली है, सब कुछ जाननेवाला है, गुनाह माफ़ करनेवाला और तौबा क़बूल करनेवाला है, कठोर अज़ाब देनेवाला और बड़े फ़ज़्लवाला है, कोई पूज्य उसके सिवा नहीं, उसी की ओर सबको पलटना है।" (क़ुरआन, सूरा-40 अल-मोमिन, आयतें-1 से 3)

अल्लाह के गुणों और ख़ूबियों को स्पष्ट करनेवाली क़ुरआन की ये कुछ सुन्दर और सुसज्जित आयतें हैं जिनको हमने यहाँ पेश किया है। क़ुरआन अल्लाह की ख़ूबियों को विभिन्न प्रसंगों में बहुत ही सुन्दर अन्दाज़ में पेश करता है। इस सिलसिले में कुछ और मिसालें नीचे लिखी जाती हैं—

"क्या इन लोगों को मालूम नहीं है कि वह अल्लाह ही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और उनके सदक़ों (दान) को स्वीकृति प्रदान करता है, और यह कि अल्लाह बड़ा माफ़ करनेवाला और दया करनेवाला है?"

(क़ुरआन, सूरा-9 अत-तौबा, आयत-104)

"अपने बन्दों पर उसे पूरी क़ुदरत हासिल है और तुमपर निगरानी करनेवाले नियुक्त करके भेजता है, यहाँ तक कि जब तुममें से किसी की मौत का समय आ जाता है तो उसके भेजे हुए फ़रिश्ते उसकी जान निकाल लेते हैं और अपनी ज़िम्मेदारी निभाने में तनिक कमी नहीं करते, फिर सब-के-सब अल्लाह, अपने वास्तविक मालिक की ओर वापस लाए जाते हैं। सावधान हो जाओ, फ़ैसले के सारे अधिकार उसी को प्राप्त हैं और वह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है।" (क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयतें: 61-62)

"आसमानों और ज़मीन में जो कुछ छिपा हुआ है सब अल्लाह के अधिकार में है और सारा मामला उसी की तरफ़ लौटाया जाता है। अतः ऐ नबी! तू उसकी बन्दगी कर और उसी पर भरोसा रख, जो कुछ तुम लोग कर रहे हो तेरा रब उससे बेख़बर नहीं है।"

(क़ुरआन, सूरा-11 हूद, आयत-123)

"ऐ नबी! मेरे बन्दों को सूचित कर दो कि मैं बहुत माफ़

करनेवाला और दयावान हूँ। मगर इसके साथ मेरा अज़ाब भी बहुत ही दर्दनाक अज़ाब है।"

(क़ुरआन, सूरा-15 अल-हिज्र, आयतें: 49-50)

"वास्तविकता यह है कि अल्लाह ही है जो आसमानों और ज़मीन को टल जाने से रोके हुए है, और अगर वे टल जाएँ तो अल्लाह के बाद कोई दूसरा उन्हें थामनेवाला नहीं है। बेशक अल्लाह बड़ा सहनशील और माफ़ करनेवाला है।"

(क़ुरआन, सूरा-35 अल-फ़ातिर, आयत-41)

ये आयतें अल्लाह की महानता और बड़ाई को ज़ाहिर करती हैं और स्पष्ट रूप से यह बताती हैं कि अल्लाह ही सबसे बड़ा और अकेला इबादत के लायक़ है। उसकी महानता और बड़ाई को क़ुरआन में बार-बार और साफ़-साफ़ बयान कर दिया गया है—

"अल्लाह ही की तसबीह की है हर उस चीज़ ने जो आसमानों और ज़मीन में है, और वही प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।"

(क़ुरआन, सूरा-59 अल-हश्र, आयत-1)

"अल्लाह की तसबीह कर रही है हर वह चीज़ जो आसमानों में है और हर वह चीज़ जो ज़मीन में है—सम्राट है अत्यन्त पवित्र, प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी।"

(क़ुरआन, सूरा-62 अल-जुमुआ, आयत-1)

"क्या तुम्हें पता नहीं कि धरती और आकाशों का शासन अल्लाह ही के लिए है और उसके सिवा कोई तुम्हारा संरक्षक और तुम्हारा मददगार नहीं है?" (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-107)

"और यह भी सत्य है कि अल्लाह ही के अधिकार में आसमानों और ज़मीन का राज्य है, उसी के अधिकार में ज़िन्दगी और मौत है, और तुम्हारा कोई समर्थक और मददगार ऐसा नहीं है जो तुम्हें उससे बचा सके।" (क़ुरआन, सूरा-9 अत-तौबा, आयत-116)

"ज़मीन और आसमानों की सारी चीज़ों का मालिक अल्लाह है

और सारे मामले अल्लाह ही के सामने पेश होते हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-109)

"ज़मीन और आसमानों का मालिक अल्लाह है और उसकी कुदरत सबपर हावी है।"

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-189)

"उसकी पाकी और बड़ाई तो सातों आसमान और ज़मीन और वे सारी चीज़ें जो आसमानों और ज़मीन में हैं बयान कर रही हैं। कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी प्रशंसा के साथ उसकी तसबीह (पाकी बयान) न कर रही हो, मगर तुम उनकी तसबीह समझते नहीं हो। वास्तविकता यह है कि वह बड़ा ही सहनशील और माफ़ करनेवाला है।" (क़ुरआन, सूरा-17 बनी-इसराईल, आयत-44)

"आसमानों और ज़मीन की सेनाएँ अल्लाह ही के अधिकार में हैं और वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।"

(क़ुरआन, सूरा-48 अल-फ़त्ह, आयत-7)

"सावधान रहो, आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह का है। तुम जिस नीति पर भी हो अल्लाह उसको जानता है। जिस दिन लोग उसकी ओर पलटाए जाएँगे वह उन्हें बता देगा कि वे क्या कुछ करके आए हैं। वह हर चीज़ का ज्ञान रखता है।"

(क़ुरआन, सूरा-24 अन-नूर, आयत-64)

"अल्लाह की तसबीह (गुणगान) कर रही है हर वह चीज़ जो आसमानों में है और हर वह चीज़ जो ज़मीन में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए प्रशंसा है और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।" (क़ुरआन, सूरा-64 अत-तग़ाबुन, आयत-1)

"तो सर्वोच्च है अल्लाह, वास्तविक बादशाह, कोई पूज्य उसके सिवा नहीं, स्वामी है, महिमाशाली सिंहासन का।"

(क़ुरआन, सूरा-23 अल-मोमिनून, आयत-116)

"(पैग़म्बर ने) कहा, 'मेरा रब हर उस बात को जानता है जो

आसमान और ज़मीन में कही जाए। वह सुनता और जानता है' ।" (क़ुरआन, सूरा-21 अल-अंबिया, आयत-4)

"तुम चाहे अपनी बात पुकारकर कहो, वह तो चुपके से कही हुई बात, बल्कि उससे अधिक छिपी बात भी जानता है। वह अल्लाह है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, उसके लिए सर्वोत्तम नाम हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-20 ताहा, आयतें: 7-8)

"अल्लाह ज़मीन और आसमानों की हर छिपी चीज़ का ज्ञान रखता है और जो कुछ तुम करते हो वह सब उसकी दृष्टि में है।"

(क़ुरआन, सूरा-49 अल-हुजुरात, आयत-18)

"बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन की हर छिपी चीज़ से परिचित है, वह तो सीनों के छिपे हुए रहस्य तक जानता है।"

(क़ुरआन, सूरा-35 अल-फ़ातिर, आयत-38)

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! बात मानो अल्लाह की और बात मानो रसूल की और उन लोगों की जो तुममें से आदेश देने के अधिकारी हों, फिर अगर तुम्हारे बीच किसी मामले में झगड़ा खड़ा हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर फेर दो अगर तुम वास्तव में अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो। यही एक सही कार्य-प्रणाली है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है। ऐ नबी! तुमने देखा नहीं उन लोगों को जो दावा तो करते हैं कि हमने मान लिया है उस किताब को जो तुम्हारी ओर उतारी गई है और उन किताबों को जो तुमसे पहले उतारी गई थीं, मगर चाहते यह हैं कि अपने मामलों का फ़ैसला कराने के लिए बढ़े हुए फ़सादी की ओर जाएँ, जबकि उन्हें असत्य का इनकार करने का आदेश दिया गया था—शैतान उन्हें भटकाकर सीधे मार्ग से बहुत दूर ले जाना चाहता है।"

(क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयतें: 59-60)

"क्या तुम जानते नहीं कि आसमान और ज़मीन की हर चीज़

अल्लाह के ज्ञान में है? सब कुछ एक किताब में अंकित है। अल्लाह के लिए यह कुछ भी कठिन नहीं है।"

(क़ुरआन, सूरा-22 अल-हज, आयत-70)

"प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जो आसमानों और ज़मीन की हर चीज़ का मालिक है और आख़िरत में भी उसी के लिए प्रशंसा है। वह तत्वदर्शी और ख़बर रखनेवाला है। जो कुछ ज़मीन में जाता है और जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है, हर चीज़ को वह जानता है, वह दयावान और माफ़ करनेवाला है।"

(क़ुरआन, सूरा-34 सबा, आयतें:1-2)

अल्लाह की ये ख़ूबियाँ इनसान के लिए क़ुरआन के बुनियादी पैग़ाम को सकारात्मक रूप में स्पष्ट करती हैं कि अल्लाह वाहिद (अकेला) है। क़ुरआन अल्लाह के सिर्फ़ एक होने का एलान करके रुक नहीं जाता, बल्कि साफ़-साफ़ निर्विकार होने के पक्ष को भी स्पष्ट करता है कि उसके अलावा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं। (अबुल-कलाम रह॰)

यह एलान कि उसके सिवा कोई इलाह (उपास्य) नहीं, क़ुरआन में कम-से-कम तीस बार आया है। इस तरह की दो आयतें निम्नलिखित हैं—

"तुम्हारा पूज्य-प्रभु एक ही पूज्य-प्रभु है, उस करुणामय और दयावान के सिवा कोई और पूज्य-प्रभु नहीं है।"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-163)

"अल्लाह, वह जीवन्त नित्य सत्ता, जो जगत्-व्यवस्था को सँभाले हुए है, वास्तव में उसके सिवा कोई ईश-प्रभु नहीं है।"

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-2)

यह बात कि 'उसके सिवा कोई ईश-प्रभु नहीं' क़ुरआन में ऐसी सच्चाई के रूप में पेश की गई है, जिसके लिए किसी और सुबूत की ज़रूरत नहीं है। यह अपने-आपमें एक सच्चाई है—

"अल्लाह ने खुद इस बात की गवाही दी है कि उसके सिवा कोई

ख़ुदा नहीं है और फ़रिश्ते और सब ज्ञानवान भी सच्चाई और न्याय के साथ इसपर गवाह हैं कि उस बलशाली गहरी समझवाले के सिवा वास्तव में कोई ख़ुदा नहीं है।"

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-अमरान, आयत-18)

"अल्लाह वह है जिसके सिवा कोई ईश (ख़ुदा) नहीं है, वह तुम सबको उस क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा जिसके आने में कोई सन्देह नहीं, और अल्लाह की बात से बढ़कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है।" (क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-87)

मौलाना अबुल-आला मौदूदी (रह०) 'तफ़हीमुल-क़ुरआन' में लिखते हैं—

"ख़ुदा होने की वे ख़ूबियाँ (गुण) जो अल्लाह के लिए ख़ास हैं, उनमें से कुछ को दूसरों से संबद्ध करते हैं और ख़ुदा होने की हैसियत से बन्दों पर अल्लाह के जो हक़ व अधिकार हैं वे सब या उनमें से कुछ हक़ व अधिकार ये लोग उन दूसरे बनावटी ख़ुदाओं का अदा करते हैं। जैसे—क्रमबद्ध संसादनों पर शासन, ज़रूरतें पूरी करना, मुश्किल आसान करना, फ़रियाद सुनना, दुआएँ सुनना और प्रत्यक्ष-परोक्ष हर चीज़ से परिचित होना—ये सब अल्लाह के विशिष्ट गुण हैं और यह सिर्फ़ अल्लाह ही का हक़ है कि बन्दे उसी को सबसे बड़ा हाकिम और सर्वोच्चाधिकारी मानें, उसी के आगे बन्दगी स्वीकार करते हुए सिर झुकाएँ, उसी की तरफ़ अपनी ज़रूरतों के लिए रुख़ करें, उसी को मदद के लिए पुकारें, उसी पर भरोसा करें, उसी से उम्मीदें लगाएँ और उसी से खुले और छिपे में डरें। इसी तरह दुनिया के मालिक की हैसियत से यह पद भी अल्लाह ही का है कि अपनी प्रजा के लिए हलाल (विहित) और हराम (वर्जित) की हदें तय करे, उनके अधिकारों और कर्तव्यों को निर्धारित करे, उनको अच्छे काम करने और बुरे काम न करने का हुक्म दे और उन्हें यह बताए कि उसकी दी गई शक्तियों और उसके दिए हुए संसाधनों को किस तरह किन कामों में और किन मक़सदों के लिए इस्तेमाल करें। और यह सिर्फ़

अल्लाह ही का हक़ है कि बन्दे उसकी सत्ता को स्वीकार करें, उसके हुक्म को क़ानून का मूलाधार मानें, उसी की तरफ़ मुड़ें। जो आदमी ख़ुदा के इन गुणों में से किसी गुण को भी किसी दूसरे की तरफ़ सम्बद्ध करे और इन हक़ों में से कोई एक हक़ भी किसी दूसरे को देता है, वह अस्ल में उसे ख़ुदा का समकक्ष बताता है, और इसी तरह जो आदमी या जो संगठन इन ख़ूबियों में से किसी ख़ूबी का दावा करनेवाला हो और इन हक़ों में से किसी हक़ की इनसानों से माँग करता हो, वह भी अपने-आपको ख़ुदा के समान और ख़ुदा के बराबर बनाता है। चाहे ज़बान से ख़ुदा होने का दावा करे, न करे।

सूरा-112 अल-इख़लास अल्लाह को बिलकुल साफ़ और वाज़ेह (स्पष्ट) अन्दाज़ में बयान करती है—

"कहो, वह अल्लाह है, यकता। अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मुहताज हैं। न उसकी कोई सन्तान है और न वह किसी की सन्तान। और कोई उसका समकक्ष नहीं है।"

(क़ुरआन, सूरा-112 इख़लास, आयतें-1 से 4)

# 2:2 सृष्टि का निर्माण

"अल्लाह ने तो आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया और इसलिए किया है कि प्रत्येक प्राणी को उसकी कमाई का बदला दिया जाए। लोगों पर ज़ुल्म हरगिज़ न किया जाएगा।"
(क़ुरआन, सूरा-45 अल-जासिया, आयत-22)

क़ुरआन साफ़-साफ़ शब्दों में बयान करता है—

(1) इस सृष्टि का निर्माण एक पूर्ण योजना के अन्तर्गत किया गया है।

(2) यह अल्लाह के सर्वव्यापी योजना के तहत चलाई जा रही है।

(3) अल्लाह का इस पूरी सृष्टि पर पूर्ण अधिकार और नियंत्रण है।

(4) एक नियत समय पर यह सृष्टि नष्ट हो जाएगी।

(5) इनसान अल्लाह की इस महान योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसको एक ख़ास ज़िम्मेदारी देकर दुनिया में भेजा गया है और इसी लिए वह अपने कर्मों का पूरी तरह उत्तरदायी है।

क़ुरआन सृष्टि के निर्माण के बारे में हर प्रकार की अटकलों को ख़त्म कर देता है। इन अटकलों का आधार विज्ञान और दर्शनशास्त्र के अनगिनत दृष्टिकोणों पर क़ायम है। ये दृष्टिकोण हमारे चारों तरफ़ मौजूद चीज़ों से ऊपर सोचने में असक्षम हैं।

क़ुरआन इस विचारधारा का स्पष्ट रूप से खण्डन करता है कि सृष्टि का निर्माण किसी आकस्मिक घटना के कारण हुआ है। क़ुरआन इस बात को स्पष्ट रूप से पेश करता है कि इसमें मौजूद ज़िन्दगी की बुनियाद एक सर्वव्यापी योजना के अन्तर्गत है। इसमें मौजूद हर रचना का एक विशेष उद्देश्य और भूमिका है—

> "(ऐ नबी!) अपने सर्वोच्च रब के नाम की तसबीह (महिमागान) करो, जिसने पैदा किया और साम्य एवं सन्तुलन स्थापित किया, जिसने नियति (तक़दीर) बनाई, फिर राह दिखाई।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-87 अल-आला, आयतें-1 से 3)

अल्लाह ने न सिर्फ़ पूरी दुनिया और इसमें मौजूद हर चीज़ को बनाया है, बल्कि इसको एक बेहतरीन बनावट पर पैदा किया है–

> "जो चीज़ भी उसने बनाई ख़ूब ही बनाई। उसने इनसान के सृजन का आरम्भ गारे से किया।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-32 अस-सजदा, आयत-7)

> "हमने हर चीज़ एक तक़दीर के साथ पैदा की है। और हमारा आदेश बस एक ही आदेश होता है और पलक झपकाते वह क्रियान्वित हो जाता है।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-54 अल-क़मर, आयतें: 49-50)

एक जीवाणु से लेकर इनसान तक और एक एटम से लेकर अन्तरिक्ष की विशाल आकाशगंगाओं तक, हर चीज़ की रचना ख़ास मक़सद से की गई है। स्रष्टा ने हर चीज़ और प्राणी के संचालन के लिए नियम बनाए हैं, जो प्राणियों को स्रष्टा की योजना के अनुकूल बनाते हैं। उसने निर्जीव (बेजान) चीज़ों के लिए स्वाभाविक और प्राकृतिक क़ानून और नियम प्रदान किए हैं, जबकि जानवरों के लिए चेतनापरक और प्राकृतिक हिदायतों की व्यवस्था की है। इनसानों के लिए बुद्धि और समझ-बूझ प्रदान की है और इससे आगे बढ़कर अल्लाह की भेजी हुई सर्वव्यापी हिदायतें हैं जो उसको सही रास्ते पर चलने में मदद और सहयोग करती हैं–

> "....हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसकी आकृति प्रदान की, फिर उसको रास्ता बताया।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-20 ताहा, आयत-50)

इसके अलावा सृष्टि के स्रष्टा ने इसकी व्यवस्था को संयोग के रूप में या अव्यवस्थित रूप से चलने के लिए नहीं छोड़ा। इस पूरी व्यवस्था पर

उसकी पूर्ण सत्ता, अधिकार और नियंत्रण हमेशा रहता है–

"वह आसमान से ज़मीन तक दुनिया के मामलों का संचालन करता है और इस संचालन का ब्योरा ऊपर उसके पास जाता है एक ऐसे दिन में जिसकी माप तुम्हारी गणना से एक हज़ार वर्ष है। वही है हर छिपे और खुले का जाननेवाला, प्रभुत्वशाली और दयावान।" (क़ुरआन, सूरा-32 अस-सजदा, आयतें : 5-6)

"वास्तव में तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया, फिर अपने राजसिंहासन पर विराजमान हुआ। जो रात को दिन पर ढाँक देता है और फिर दिन रात के पीछे दौड़ा चला आता है। जिसने सूरज और चाँद और तारे पैदा किए, सब उसके आदेश के अधीन हैं। सावधान रहो! उसी की सृष्टि है और उसी का आदेश है। बड़ा बरकतवाला है अल्लाह, सारे जहानों का मालिक और पालनहार!"

(क़ुरआन, सूरा-7 अल-आराफ़, आयत-54)

"वह अल्लाह ही है जिसने आसमानों को ऐसे सहारों के बिना क़ायम किया जो तुमको नज़र आते हों, फिर वह अपने राजसिंहासन पर विराजमान हुआ, और उसने सूरज और चाँद को एक नियम का पाबन्द बनाया, इस सारी व्यवस्था की हर चीज़ एक निश्चित समय तक के लिए चल रही है और अल्लाह ही इस सारे काम का नियंत्रण कर रहा है। वह निशानियाँ खोल-खोलकर बयान करता है, शायद कि तुम अपने रब से मिलन का विश्वास करो!"

(क़ुरआन, सूरा-13 अर-रअ्द, आयत-2)

क़ुरआन इस मनगढ़ंत बात का कि सृष्टि का निर्माण स्रष्टा का मात्र एक खेल है, ज़ोरदार खण्डन करता है–

"हमने इस आसमान और ज़मीन को और जो कुछ इनमें है कुछ खेल के रूप में नहीं बनाया है। अगर हम कोई खिलौना बनाना चाहते और बस यही कुछ हमें करना होता तो अपने ही पास से कर लेते।" (क़ुरआन, सूरा-21 अल-अंबिया, आयतें: 16-17)

"ये आकाशों और धरती और इनके बीच की चीज़ें हमने कुछ खेल के रूप में नहीं बना दी हैं। उनको हमने हक़ के आधार पर पैदा किया है, किन्तु इनमें से अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-44 अद-दुख़ान, आयतें : 38-39)

अल्लाह ने दुनिया को बनाया और इसमें मौजूद सभी चीज़ों को इनसान के उपयोग में दे दिया—

"उसने तुम्हारी भलाई के लिए रात और दिन को और सूरज और चाँद को वशीभूत कर रखा है और सब तारे भी उसी के आदेश से वशीभूत हैं। इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-16 अन-नह्ल, आयत-12)

"क्या तुम लोग नहीं देखते कि अल्लाह ने ज़मीन और आसमानों की सारी चीज़ें तुम्हारे लिए वशीभूत कर रखी हैं और अपनी खुली और छिपी नेमतें (उपहार) तुमपर पूर्ण कर दी हैं? इसपर हाल यह है कि इनसानों में से कुछ लोग हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं बिना इसके कि उनके पास कोई ज्ञान हो या मार्गदर्शन या कोई प्रकाश दिखानेवाली किताब।"

(क़ुरआन, सूरा-31 लुक़मान, आयत-20)

"उसने ज़मीन और आसमानों की सारी ही चीज़ों को तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया, सब कुछ अपने पास से—इसमें बड़ी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करनेवाले हैं। ऐ नबी! ईमान लानेवालों से कह दो कि जो लोग अल्लाह की ओर से बुरे दिन आने की कोई आशंका नहीं रखते, उनकी हरकतों पर क्षमा से काम लें ताकि अल्लाह खुद एक गरोह को उसकी कमाई का बदला दे। जो कोई अच्छा कर्म करेगा अपने ही लिए करेगा, और जो बुराई करेगा वह खुद ही उसकी सज़ा भुगतेगा। फिर जाना तो सबको अपने रब ही की ओर है।"

(क़ुरआन, सूरा-45 अल-जासिया, आयतें-13 से 15)

आसमानों और ज़मीन में मौजूद सभी चीज़ों को इनसान के लिए वशीभूत कर देना उसके लिए न केवल एक ज़बरदस्त सम्मान और गौरव की बात है, बल्कि उसपर ज़बरदस्त ज़िम्मेदारी भी डालता है। इस ज़िम्मेदारी का ज़रूरी नतीजा जवाबदेही है। हमको इस दुनिया में एक ख़ास वक़्त तक की मोहलत दी जाती है और अनगिनत मौक़े भी दिए जाते हैं। हमपर हर वक़्त कड़ी नज़र रखी जाती है और ज़िन्दगी के हर मोड़ पर हम इम्तिहान से गुज़ारे जाते हैं। हम अल्लाह की उन नेमतों को किस तरह इस्तेमाल करते हैं, यह क़ियामत के दिन हमारी क़िस्मत का फ़ैसला करेगा—

> "और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया—जबकि इससे पहले उसका सिंहासन (अर्श) पानी पर था—ताकि तुम्हारी परीक्षा लेकर देखे कि तुममें से कौन सबसे अच्छे कर्म करनेवाला है। और (ऐ नबी!) अगर तुम कहते हो कि लोगो! मरने के बाद तुम दोबारा उठाए जाओगे, तो इनकार करनेवाले तुरन्त बोल उठते हैं कि यह तो खुली जादूगरी है।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-11 हूद, आयत-7)
>
> "हमने ज़मीन और आसमानों को और उनमें सब मौजूद चीज़ों को सत्य के सिवा किसी अन्य आधार पर पैदा नहीं किया है, और फ़ैसले की घड़ी यक़ीनन आनेवाली है, अतः (ऐ नबी!) अगर तुम (इन लोगों की अशिष्टताओं पर) शिष्टतानुकूल क्षमा से काम लो। यक़ीनन तुम्हारा रब सबका स्रष्टा है और सब कुछ जानता है।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-15 अल-हिज्र, आयतें: 85-86)

जहाँ तक संरचना जैसे महत्वपूर्ण काम का सवाल है, क़ुरआन इसका ज़िक्र अकेले नहीं करता। क़ुरआन में संरचना के काम के बारे में विवरण आम तौर पर नीचे लिखी बातचीत के सन्दर्भ में देता है—

1. हमें यह प्रेरणा देने के लिए कि हम सोच-विचार करें और दुनिया में अपने दायित्व के बारे में सोचें।
2. हमें सचेत करने के लिए कि हम अपने रिश्तों के बारे में सोचें—

(क) स्रष्टा के साथ।

(ख) उसकी सृष्टि के साथ।

3. हमें सोचने-विचारने पर उभारने का उद्देश्य यह है कि हम जवाबदेही की महत्ता को समझें।

शायद यही वजह है कि क़ुरआन में कोई अध्याय पूरी सृष्टि के निर्माण, इनसान की पैदाइश और इस तरह के सवालों के लिए ख़ास नहीं है। सृष्टि के निर्माण के पूरे स्रोतों को भी एक साथ विस्तार से बयान नहीं किया गया है। इसके बावजूद क़ुरआन विभिन्न जगहों पर संकेत के रूप में ही हमें निर्माण के विभिन्न चरण के बारे में बताता है। क़ुरआन यह भी बताता है कि ये क्रमबद्ध चरण और विकास का काम अब तक जारी है। सृष्टि के निर्माण के बारे में बताने के लिए क़ुरआन तरह-तरह के पारिभाषिक शब्दों का इस्तेमाल करता है, ताकि उससे ठीक तरह से रचना के चरणों को स्पष्ट किया जा सके। हम यहाँ पर संक्षेप में निर्माण के काम के बारे में उन पारिभाषिक शब्दों का ज़िक्र करेंगे जो क़ुरआन ने इस्तेमाल किए हैं। नीचे की व्याख्या अब्दुल्लाह यूसुफ़ अली की तफ़सीर (क़ुरआन-भाष्य) से उद्धृत है—

यह सच्चाई है कि स्रष्टा ही हर चीज़ का आरम्भ करनेवाला है। इसको क़ुरआन ने 'ब-द-अ़' (प्रथमतः पैदा करना) का शब्द इस्तेमाल करके स्पष्ट किया है—

> "वह आसमानों और ज़मीन का ईजाद (प्रथमतः पैदा) करनेवाला है, और जिस बात का वह फ़ैसला करता है, उसके लिए बस वह आदेश देता है कि 'हो जा' और वह हो जाती है।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-117)

> "वह तो आसमानों और ज़मीन का ईजाद करनेवाला है। उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है, जबकि कोई उसका जीवन-साथी ही नहीं है! उसने हर चीज़ को पैदा किया है और उसे हर चीज़ का ज्ञान है। यह है अल्लाह, तुम्हारा रब, कोई ख़ुदा उसके सिवा नहीं है, हर चीज़ का स्रष्टा। अतः तुम उसी की बन्दगी करो और वह

हर चीज़ का ज़िम्मेदार है।"

(क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयतें: 101-102)

क़ुरआन ने इस चीज़ को स्पष्ट करने के लिए एक दूसरा शब्द 'फ़-त-रह' (मूल तत्व) भी इस्तेमाल किया है। यह शब्द अर्थ की दृष्टि से 'ब-द-अ़' से मिलता-जुलता है। इससे बिलकुल एक नई चीज़ के निर्माण का संकेत मिलता है। 'फ़-त-रह' शब्द सम्भवतः अस्ल या बुनियादी चीज़ों के निर्माण को दर्शाता है, जिसमें बाद में भी पूर्णता का काम चलता रहता है। इस शब्द में एक बड़ी चीज़ के टुकड़े करने की प्रक्रिया का पहलू भी शामिल है–

"तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जो आसमानों और ज़मीन का बनानेवाला और फ़रिश्तों को सन्देशवाहक नियुक्त करनेवाला है, (ऐसे फ़रिश्ते) जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार भुजाएँ हैं। वह अपनी सृष्टि-संरचना में जैसी चाहता है अभिवृद्धि करता है। यक़ीनन अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।"

(सूरा-35 अल-फ़ातिर, आयत-1)

इस आयत में बदा-अ (जो ब-द-अ़ से भिन्न शब्द है) निर्माण के आरम्भ को बताता है–

"वही है जो सृष्टि का आरम्भ करता है, फिर वही उसकी पुनरावृत्ति करेगा और यह उसके लिए ज़्यादा आसान है। आसमानों और ज़मीन में उसका गुण सर्वोच्च है और वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।" (क़ुरआन, सूरा-30 अर-रूम, आयत-27)

"जो चीज़ भी उसने बनाई ख़ूब ही बनाई। उसने इनसान के सृजन का आरम्भ गारे से किया।"

(क़ुरआन, सूरा-32 अस-सजदा, आयत-7)

इस आयत में 'ब-र-अ' बतलाता है 'किसी चीज़ से दूसरी चीज़ के निर्माण को'–जैसे कि इनसान का निर्माण गारे से किया गया।

"वह अल्लाह ही है जो सृष्टि की योजना बनानेवाला और उसको लागू करनेवाला और उसके अनुसार रूप बनानेवाला है। उसके

लिए उत्तम नाम हैं। हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है उसकी तसबीह (गुणगान) कर रही है, और वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।" (क़ुरआन, सूरा-59 अल-हश्र, आयत-24)

"कोई मुसीबत ऐसी नहीं जो ज़मीन में या तुम्हारे अपने ऊपर उतरती हो और हमने उसको पैदा करने से पहले एक किताब (भाग्य-पत्र) में लिख न रखा हो। ऐसा करना अल्लाह के लिए बहुत आसान है।" (क़ुरआन, सूरा-57 अल-हदीद, आयत-22)

एक भौतिकवादी दार्शनिक यह कह सकता है कि मूल तत्व तो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। इसकी कई शक्लें और सूरतें जो हमें दिखती हैं, वे किसी-न-किसी समय ख़त्म हो जाएँगी। जब ये सूरतें और शक्लें ख़त्म होंगी, वे फिर मूल तत्व में परिवर्तित हो जाएँगी, जो अस्ल चीज़ थी। लेकिन हम इससे पहले की बात करेंगे। अगर हम इस मूल तत्व (जिसको वे प्राचीनतम कहते हैं) की बात करें तो मूल तत्व भी अल्लाह की रचना है। अगर यह बात क़बूल है तो हम आगे बढ़ते हुए यह कहेंगे कि बनने का मरहला (चरण) अभी पूरा नहीं हुआ। हम देखते हैं कि हमारे सामने नई-नई चीज़ें, नए-नए विचार बनते रहते हैं। यह विकास या निर्माण प्रक्रिया का हिस्सा है। क़ुरआन इसको स्पष्ट करने के लिए जिस शब्द का इस्तेमाल करता है वह है—'ख़-ल-क़' (निर्माण या सृजन)। इस क्रिया में नापना और दूसरी चीज़ों के साथ सामंजस्य क़ायम करना भी शामिल है।

"हमने हर चीज़ एक तक़दीर के साथ पैदा की है।"

(क़ुरआन, सूरा-54 अल-क़मर, आयत-49)

एक और विशेष शब्द जिसको क़ुरआन इस्तेमाल करता है। वह है 'अम्र'। यह शब्द ऐसी रचना के लिए प्रयोग किया गया है जिसमें कोई भी वक़्त नहीं लगता। यह काम अकस्मात हो जाता है।

"और हमारा आदेश बस एक ही आदेश होता है और पलक झपकाते वह क्रियान्वित हो जाता है।"

(क़ुरआन, सूरा-54 अल-क़मर, आयत-50)

एक और विशेष पारिभाषिक शब्द जो क़ुरआन में निर्माण या सृजन के लिए इस्तेमाल होता है, वह 'ज-अ्-ल' है। इस शब्द से तात्पर्य नई शक्ल और नया रूप देना है।

> "बड़ी बरकतवाला है वह जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें एक चराग़ और एक चमकता चाँद प्रकाशमान किया। वही है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे का स्थानापन्न बनाया, हर उस व्यक्ति के लिए जो शिक्षा लेनी चाहे, या कृतज्ञ होना चाहे।"
> (क़ुरआन, सूरा-25 अल-फ़ुरक़ान, आयतें : 61-62)

एक अगला काम जो नफ़्स (आत्मा या इन्द्रिय) के निर्माण से सम्बन्धित है उसको शब्द 'सव्वा' के ज़रिए से स्पष्ट किया गया है। निर्माण का यह मरहला रूह और नफ़्स (आत्मा और इन्द्रिय) को भलाई और बुराई में अन्तर (भेद) करने की क्षमता प्रदान करता है। अच्छाई और बुराई में भेद कर पाना इनसान के लिए अल्लाह की सबसे बड़ी दौलत और सबसे बड़ा एहसान है।

> "जो चीज़ भी उसने बनाई ख़ूब ही बनाई। उसने इनसान के सृजन का आरम्भ गारे से किया, फिर उसकी नस्ल एक सत से चलाई जो तुच्छ पानी की तरह का है, फिर उसकी नोक-पलक को संवारा और उसके भीतर अपनी रूह फूँक दी, और तुमको कान दिए, आँखें दीं और दिल दिए। तुम लोग कम ही कृतज्ञता दिखाते हो।" (क़ुरआन, सूरा-32 अस-सजदा, आयतें-7 से 9)

ऊपर दी गई व्याख्या से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि क़ुरआन सृष्टि के निर्माण के काम को निरंतर जारी रहनेवाला काम बताता है। यह ऐसा काम नहीं है, जो एक समय में पूरा हो गया हो।

क़ुरआन में निर्माण या सृजन के मरहले के बारे में एक अहम बात यह है कि क़ुरआन निर्माण के बारे में कालानुक्रम अन्दाज़ में बात नहीं करता, बल्कि क़ुरआन कहता है कि निर्माण का शुरुआती मरहला 'छः दिनों' में हुआ। इसके लिए क़ुरआन 'यौम' शब्द का प्रयोग करता है, लेकिन 'यौम'

यानी दिन को समय या काल-अवधि के अर्थ में इस्तेमाल किया गया है। क़ुरआन इसकी व्याख्या खुद इन शब्दों में करता है—

> "मगर तेरे रब के यहाँ का एक दिन तुम्हारी गणना के हज़ार वर्ष के बराबर हुआ करता है।" (क़ुरआन, सूरा-22 अल-हज, आयत-47)

> "वह आसमान से ज़मीन तक दुनिया के मामलों का संचालन करता है और इस संचालन का ब्योरा ऊपर उसके पास जाता है एक ऐसे दिन में जिसकी माप तुम्हारी गणना से एक हज़ार वर्ष है।" (क़ुरआन, सूरा-32 अस-सजदा, आयत-5)

> "फ़रिश्ते और 'रूह' उसके पास चढ़कर जाते हैं एक ऐसे दिन में जिसकी माप पचास हज़ार वर्ष है।"
> (क़ुरआन, सूरा-70 अल-मआरिज़, आयत-4)

क़ुरआन न सिर्फ़ इस हक़ीक़त को बयान करता है कि निर्माण का काम छः दौरों (कालावधियों) में हुआ है, जो काफ़ी लम्बे थे, यह हमें यह भी बताता है कि इनमें कुछ मरहले साथ-साथ घटित हुए।

> "ऐ नबी! इनसे कहो, क्या तुम उस ईश्वर के प्रति इनकार की नीति अपनाते हो और दूसरों को उसका समकक्ष ठहराते हो जिसने ज़मीन को दो दिनों में बना दिया? वही तो सारे जहानवालों का रब है। उसने (ज़मीन को पैदा करने के बाद) ऊपर से उसपर पहाड़ जमा दिए और उसमें बरकतें रख दीं और उसके अन्दर सब माँगनेवालों के लिए हर एक की माँग और ज़रूरत के अनुसार ठीक अन्दाज़े से ख़ुराक की सामग्री जुटा दी। यह सब काम चार दिन में हो गए। फिर उसने आसमान की ओर रुख़ किया जो उस समय सिर्फ़ धुआँ था। उसने आसमान और ज़मीन से कहा, 'अस्तित्व ग्रहण करो, चाहे तुम चाहो या न चाहो।' दोनों ने कहा, 'हम आ गए आज्ञाकारियों की तरह।' तब उसने दो दिन के अन्दर सात आसमान बना दिए, और हर आसमान में उसके क़ानून की प्रकाशना कर दी। और दुनिया के आसमान को हमने दीपकों से सुसज्जित किया और उसे ख़ूब सुरक्षित कर दिया। यह

सब कुछ एक प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ सत्ता की परियोजना है।"

(क़ुरआन, सूरा-41 हा मीम अस-सजदा, आयतें-9 से 12)

एक अह्म बात निर्माण की बहस में यह है कि वे चीज़ें जिनको वैज्ञानिक क़ुरआन के अवतरण के बाद अब तक मालूम कर चुके हैं या जिनको भविष्य में मालूम करेंगे उनको क़ुरआन में बिलकुल साफ़, ठीक-ठीक पेश किया गया है।

उन चीज़ों को बहुत ही सादा अन्दाज़ में बयान कर दिया गया है, ताकि आम आदमी उसको आसानी से समझ ले। इसी के साथ-साथ क़ुरआन विज्ञान के विभिन्न विभागों के विशेषज्ञों को भी चिन्तन-मनन का निमंत्रण देता है—

"क्या वे लोग जिन्होंने (नबी की बात मानने से) इनकार कर दिया है विचार नहीं करते कि ये सब आसमान और ज़मीन परस्पर मिले हुए थे, फिर हमने इन्हें अलग किया, और पानी से हर ज़िन्दा चीज़ पैदा की? क्या वे (हमारे इस रचनाकार्य की कुशलता को) नहीं मानते? और हमने ज़मीन में पहाड़ जमा दिए ताकि वह इन्हें लेकर लुढक न जाए, और उसमें चौड़े-विस्तृत रास्ते बना दिए, शायद कि लोग अपना मार्ग मालूम कर लें! और हमने आसमान को एक सुरक्षित छत बना दिया। मगर ये हैं कि ब्रह्माण्ड की निशानियों की ओर ध्यान ही नहीं देते। और वह अल्लाह ही है जिसने रात और दिन बनाए और सूरज और चाँद की रचना की। सब एक-एक कक्ष में तैर रहे हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-21 अल-अंबिया, आयतें-30 से 33)

"और अल्लाह ने हर जीवधारी को एक तरह के पानी से पैदा किया। कोई पेट के बल चल रहा है तो कोई दो टाँगों पर और कोई चार टाँगों पर। जो कुछ वह चाहता है पैदा करता है, उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।"

(क़ुरआन, सूरा-24 अन-नूर, आयत-45)

"और वही है जिसने पानी से एक आदमी पैदा किया, फिर उससे वंश और ससुराल के दो अलग-अलग सिलसिले चलाए। तेरा रब बड़ा ही सामर्थ्यवान है।"

(क़ुरआन, सूरा-25 अल-फ़ुरक़ान, आयत-54)

"धरती और आकाशों की रचना में और रात और दिन के बारी-बारी से आने में उन बुद्धिमानों के लिए बहुत निशानियाँ हैं जो उठते-बैठते और लेटते, हर हाल में अल्लाह को याद करते हैं और आकाशों और धरती की संरचना में सोच-विचार करते हैं। (वे बोल उठते हैं) "हमारे रब! ये सब कुछ तूने व्यर्थ और बेमक़सद नहीं बनाया है, तू पाक है इससे कि निरर्थक कार्य करे! अतः ऐ रब! हमें नरक की यातना से बचा ले!"

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयतें: 190-191)

ऊपर दी गई बातचीत की रौशनी में हम यह बात कह सकते हैं कि क़ुरआन के मुताबिक़—

1. दुनिया की रचना छः चरणों में हुई।
2. पूरी दुनिया एक ही पदार्थ के भण्डार से अस्तित्व में आई।
3. ज़मीन और पूरी अन्तरिक्ष-व्यवस्था का विकास साथ-साथ हुआ और विकास की प्रक्रिया अभी चल रही है, ख़त्म नहीं हुई है।
4. ज़मीन, आसमान और अन्तरिक्ष की विभिन्न व्यवस्थाओं और आकाशगंगाओं के बीच में पदार्थ या तत्व मौजूद है।

सबसे अहम बात जिसका क़ुरआन बार-बार एलान करता है, वह यह कि दुनिया और मनुष्य की रचना में अल्लाह को कोई मेहनत और कोशिश नहीं करनी पड़ी थी कि वह थक जाए—

"हमने ज़मीन और आसमानों को और उनके बीच की सारी चीज़ों को छः दिनों में पैदा कर दिया और हमें कोई थकान न छू सकी।" (क़ुरआन, सूरा-50 क़ाफ़, आयत-38)

# 2:3 मनुष्य की रचना

"फिर ज़रा उस समय की कल्पना करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा था कि मैं धरती में एक ख़लीफ़ा (स्थानापन्न) बनानेवाला हूँ।" (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-30)

अल्लाह का यह स्पष्ट एलान मनुष्य की महत्ता को इस हद तक ऊँचा करता है, जिस मक़ाम तक कोई दूसरा जानदार नहीं पहुँच सकता। मनुष्य को बुद्धि, समझ-बूझ और प्रतिभा दी गई है। उसे वह सलाहियत दी गई है कि आसपास के माहौल को बड़ी हद तक बदलकर रख दे। उसे वह ज्ञान दिया गया है जिससे भविष्य की मंसूबाबन्दी कर सकता है और इस मंसूबाबन्दी को अपनी मेहनत और अथक कोशिश से सच का रूप दे सकता है। उसे वह शक्ति दी गई है कि आसपास की चीज़ों और इलाक़ों को अपने वश में कर सकता है—

"हमने तुम्हें ज़मीन में अधिकारों के साथ बसाया और तुम्हारे लिए वहाँ जीवन-सामग्री जुटाई, मगर तुम लोग कृतज्ञता कम ही दिखाते हो।" (सूरा-7 अल-आराफ़, आयत-10)

सबसे अच्छा तरीक़ा जिससे हम अपने रब का शुक्र अदा कर सकते हैं, वह यह है कि हम उन सभी नेमतों (अनुकम्पाओं) को जो उसने हमें दी हैं, उसी के आदेशों के अनुसार इस्तेमाल करें। ये आदेश अल्लाह ने हमारे मार्गदर्शन के लिए भेजे हैं। हम अपने लोभ और लालच में इनको भूल न जाएँ। ऐसा न हो कि ये उपहार हमारी बरबादी का कारण बन जाएँ।

"(ऐ नबी!) अपने सर्वोच्च रब के नाम की तसबीह (महिमागान) करो, जिसने पैदा किया और सन्तुलन स्थापित किया। जिसने नियति (तक़दीर) बनाई, फिर राह दिखाई।"

(क़ुरआन, सूरा-87 अल-आला, आयतें-1 से 3)

"क़सम है इंजीर और ज़ैतून की, और तूरे-सीना (सीना पहाड़) और इस शान्तिपूर्ण शहर (मक्का) की, हमने इनसान को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया, फिर उसे उलटा फेरकर हमने सब नीचों से नीच कर दिया, सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म करते रहे कि उनके लिए कभी समाप्त न होनेवाला बदला है।" (क़ुरआन, सूरा-95 अत-तीन, आयतें-1 से 6)

मनुष्य की सृष्टि के बारे में क़ुरआन में बार-बार इसलिए ध्यान दिलाया गया है, ताकि मनुष्य अपने पैदा किए जाने के उद्देश्य से परिचित हो। इस दुनिया की रचना की तरह ही क़ुरआन मनुष्य के क्रमिक विकास को सम्बोधित नहीं करता। वह मनुष्य के धरती पर भेजे जाने के कारण और उद्देश्य पर बात करता है।

मनुष्य की रचना के काम को बुनियादी तौर पर क़ुरआन के तीन महत्वपूर्ण विषयों के सन्दर्भ में पेश किया जाता है–

एकेश्वरवाद, पैग़म्बरी (ईशदूतत्व) और आख़िरत (हिसाब का दिन)। इसके बाद मनुष्य को सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाया जाता है।

मनुष्य की रचना के काम को क़ुरआन में कई जगहों पर स्पष्ट किया गया है।

(1) अल्लाह के एकत्व और ईश्वरत्व को मन में बिठाने के लिए कहा गया है–

"उसी ने तुमको एक जान से पैदा किया, फिर वही है जिसने उस जान से उसका जोड़ा बनाया। और उसी ने तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ नर और मादा पैदा किए। वह तुम्हारी माओं के पेटों में तीन-तीन अंधकारमय परदों के भीतर तुम्हें एक के बाद एक रूप देता चला जाता है। यही अल्लाह (जिसके ये कार्य हैं) तुम्हारा रब है, राज उसी का है, कोई पूज्य उसके सिवा नहीं है, फिर तुम किधर फिरे जा रहे हो?" (क़ुरआन, सूरा-39 अज़-ज़ुमर, आयत-6)

(2) मनुष्य के घमण्ड और हठधर्मी पर चोट लगाने के लिए, उसके

जन्म की शुरुआत की तरफ़ इशारा करते हुए कहा गया है—

"उसने मनुष्य को एक ज़रा-सी बूँद से पैदा किया और देखते-देखते स्पष्टतः वह एक झगड़ालू प्राणी बन गया।"

(क़ुरआन, सूरा-16 अन-नह्ल, आयत-4)

"क्या मनुष्य पर अनन्तकाल का एक ऐसा समय भी बीता है जब वह कोई उल्लेखनीय वस्तु न था? हमने मनुष्य को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया ताकि उसकी परीक्षा लें और इस उद्देश्य के लिए हमने उसे सुनने और देखनेवाला बनाया। हमने उसे मार्ग दिखा दिया, चाहे कृतज्ञ बने या इनकार करनेवाला।"

(क़ुरआन, सूरा-76 अद-दह्र, आयतें-1 से 3)

(3) मनुष्य को उसकी सही जगह और जवाबदेही का पात्र ठहराते हुए कहा गया है—

"यह तो हमारी कृपा है कि हमने आदम की सन्तान को श्रेष्ठता दी और उन्हें थल और जल (समुद्र) में सवारियाँ प्रदान कीं और उनको पाक चीज़ों से जीविका दी और अपने बहुत-से पैदा किए हुए प्राणियों पर स्पष्ट श्रेष्ठता प्रदान की। फिर ध्यान में लाओ वह दिन जबकि हम मनुष्य के हर गिरोह को उसके नेता (पेशवा) के साथ बुलाएँगे। उस समय जिन लोगों को उनका कर्म-पत्र सीधे हाथ में दिया गया, वह अपना लेखा-जोखा पढ़ेंगे और उनपर कण-भर अन्याय न होगा।"

(क़ुरआन, सूरा-17 बनी-इसराईल, आयतें: 70-71)

"हमने मनुष्य को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया, फिर उसे उलटा फेरकर हमने सब नीचों से नीच कर दिया, सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और अच्छे कर्म करते रहे कि उनके लिए कभी समाप्त न होनेवाला बदला है। अतः (ऐ नबी!) इसके बाद कौन अच्छे बदले और सज़ा के सम्बन्ध में तुमको झुठला सकता है? क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है?"

(क़ुरआन, सूरा-95 अत-तीन, आयतें-4 से 8)

(6) मृत्यु के बाद जीवन की सच्चाई पर ज़ोर देने के लिए कहा गया है–

"लोगो! अगर तुमको मौत के बाद की ज़िन्दगी के बारे में कुछ शक है तो तुम्हें मालूम हो कि हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है, फिर वीर्य से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर मांस की बोटी से जो शक्लवाली भी होती है और बेशक्ल भी। (यह हम इसलिए बता रहे हैं) ताकि तुमपर सच्चाई स्पष्ट करें। हम जिस (वीर्य) को चाहते हैं एक नियत समय तक गर्भाशयों में ठहराए रखते हैं, फिर तुमको एक बच्चे के रूप में निकाल लाते हैं (फिर तुम्हारा पालन-पोषण करते हैं) ताकि तुम अपनी जवानी (युवावस्था) को पहुँचो। और तुममें से कोई पहले ही वापस बुला लिया जाता है और कोई निकृष्टतम आयु की ओर फेर दिया जाता है ताकि सबकुछ जानने के बाद फिर कुछ न जाने। और तुम देखते हो कि ज़मीन सूखी पड़ी है, फिर जहाँ हमने उसपर पानी बरसाया कि यकायक वह फबक उठी और फूल गई और उसने हर तरह की सुदृश्य वनस्पतियाँ उगानी शुरू कर दीं। यह सबकुछ इसलिए है कि अल्लाह ही सत्य है, और वह मुरदों को ज़िन्दा करता है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है, और यह (इस बात का प्रमाण है) कि क़ियामत की घड़ी आकर रहेगी, इसमें किसी शक की गुंजाइश नहीं, और अल्लाह ज़रूर उन लोगों को उठाएगा जो क़ब्रों में जा चुके हैं।" (क़ुरआन, सूरा-22 अल-हज, आयत-5 से 7)

इस तरह हमें दुनिया में हमारी ज़िम्मेदारियों और पैदाइश के मक़सद को बार-बार याद दिलाया गया है और हमें ज़रूरी मार्गदर्शन भी दिया गया है। हमें इसकी आज़ादी दी गई है कि जिस तरह चाहें अल्लाह के इनामों और प्राकृतिक संसाधनों को इस्तेमाल करें–

"क्या तुम लोग नहीं देखते कि अल्लाह ने ज़मीन और आसमानों की सारी चीज़ें तुम्हारे लिए वशीभूत कर रखी हैं और अपनी खुली और छिपी नेमतें (अनुकम्पाएँ) तुमपर पूर्ण कर दी हैं? इसपर हाल

> यह है कि मनुष्यों में से कुछ लोग हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं बिना इसके कि उनके पास कोई ज्ञान हो, या मार्गदर्शन, या कोई प्रकाश दिखानेवाली किताब।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-31 लुक़मान, आयत-20)

मनुष्य अपनी अदूरदर्शिता की वजह से इन इनामों को ग़लत अन्दाज़ से ले लेता है और यह सोचने लगता है कि यह उसकी योग्यता और मेहनतों का बदला है। वह मानव-संस्कृति के द्वारा हासिल कामयाबी को मनुष्य की दुनिया में सबसे बड़ी कामयाबी के रूप में स्वीकार करता है और समझता है कि उसे सभी मामलों में पूरा अधिकार प्राप्त है और वह अल्लाह को सर्वोच्चाधिकारी और सर्वेसर्वा मानने से इनकार करने लगता है।

हमें साफ़-साफ़ यह चेतावनी दी जाती है कि इस आज़ादी के ग़लत इस्तेमाल से क्या नतीजे निकलनेवाले हैं। हमपर यह स्पष्ट कर दिया गया है कि हम अपने एक-एक काम के लिए जवाबदेह (उत्तरदायी) हैं। हम अपने ग़लत कामों के लिए न सिर्फ़ इस दुनिया में, बल्कि आख़िरत में भी ज़िम्मेदार ठहराए जाएँगे।

क़ुरआन बहुत ख़ूबसूरत अन्दाज़ से इन लोगों के मानसिक दशा के बारे में बताता है जो मनुष्य को अपने सभी मामलों में पूरी तरह आज़ाद मानते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि इस तरह के लोग इतिहास के हर दौर में रहे हैं। क़ुरआन उनके बारे में कहता है—

> "अल्लाह अपनी ये निशानियाँ तुम्हें दिखा रहा है, आख़िर तुम उसकी किन-किन निशानियों का इनकार करोगे। फिर क्या ये ज़मीन में चले-फिरे नहीं हैं कि इनको उन लोगों का परिणाम दिखाई देता जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं? वे इनसे तादाद में ज़्यादा थे, इनसे बढ़कर शक्तिशाली थे, और ज़मीन में इनसे ज़्यादा भव्य स्मृति-चिह्न छोड़ गए हैं। जो कुछ कमाई उन्होंने की थी, आख़िर वह उनके किसी काम न आई?"
>
> (क़ुरआन, सूरा-40 अल-मोमिन, आयतें: 81-82)

क़ुरआन साफ़-साफ़ कहता है कि अस्ल क़ानून बनानेवाला सिर्फ़-और-सिर्फ़ वास्तविक स्रष्टा अल्लाह है। उसने न सिर्फ़ मनुष्य की रचना की, बल्कि मनुष्य को एक ख़ास उद्देश्य के लिए पैदा किया और फिर उसने इस बात को यक़ीनी बनाया कि हर ज़माने में मनुष्य के सही मार्गदर्शन की व्यवस्था रहे, ताकि मनुष्य इस उद्देश्य को हासिल कर सके जिसके लिए उसको पैदा किया गया है। इसी उद्देश्य को समझाने के लिए इतिहास के हर दौर में पैग़म्बर और नबी भेजे गए हैं—

> "हमने हर उम्मत (समुदाय) में एक रसूल भेज दिया, और उसके द्वारा सबको सूचित कर दिया कि 'अल्लाह की बन्दगी करो और बढ़े हुए अवज्ञाकारी (तागूत) की बन्दगी से बचो।' इसके बाद उनमें से किसी को अल्लाह ने मार्ग दिखाया और किसी पर गुमराही छा गई। फिर तनिक ज़मीन में चल-फिरकर देख लो कि झुठलानेवालों का क्या अंजाम हो चुका है!"
>
> (क़ुरआन, सूरा-16 अन-नह्ल, आयत-36)

ये पैग़म्बर और नबी स्पष्ट निशानियों के साथ मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिए भेजे गए, जिन लोगों ने आज्ञापालन और पैरवी की और अपने-आपका मूल्यांकन और आकलन किया, वही लोग कामयाब हैं—

> "और मानवीय आत्मा की और उस सत्ता की क़सम जिसने उसे ठीक-ठाक किया, फिर उसकी बुराई और परहेज़गारी उसके दिल में डाल दी, यक़ीनन सफलता पा गया वह जिसने आत्मा को विशुद्ध एवं विकसित किया, और असफल हुआ वह जिसने उसको दबा दिया।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-91 अश-शम्स, आयतें-7 से 10)

अध्याय-3

# अल्लाह के विशिष्ट पैग़म्बर (दूत)

**3:1 साझा सन्देश**

**3:2 पैग़म्बर आदम (अलैहिस्सलाम)**

**3:3 पैग़म्बर नूह (अलैहिस्सलाम)**

**3:4 पैग़म्बर इबराहीम (अलैहिस्सलाम)**

**3:5 पैग़म्बर मूसा (अलैहिस्सलाम)**

**3:6 पैग़म्बर ईसा (अलैहिस्सलाम)**

**3:7 पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)**

# 3:1 साझा सन्देश

"हमने तुमसे पहले जो भी रसूल भेजा है, उसको यही प्रकाशना (वह्य) की है कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है, अतः तुम लोग मेरी ही बन्दगी करो।" (क़ुरआन, सूरा-21 अल-अंबिया, आयत-25)

क़ुरआन इस बात को ज़ोरदार और स्पष्ट अन्दाज़ में कहता है कि इस ज़मीन पर आरम्भ ही से अल्लाह ने इनसानों के मार्गदर्शन का अपने पैग़म्बरों और नबियों के द्वारा इन्तिज़ाम किया। पैग़म्बरों में सबसे पहले हज़रत आदम (अलैहि॰) हैं, जो कि इस ज़मीन में बसनेवाले सबसे पहले इनसान थे और हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) आख़िरी पैग़म्बर हैं। हालाँकि क़ुरआन में सिर्फ़ 25 पैग़म्बरों का उल्लेख हुआ है, लेकिन हदीसों से यह पता चलता है कि लगभग एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बरों और नबियों को इस दुनिया में इनसानों की रहनुमाई के लिए भेजा गया। ये पैग़म्बर और नबी अलग-अलग समयों में अलग-अलग जगहों में भेजे गए, ताकि लोगों को सीधे रास्ते पर चलने के लिए बुलाएँ और उनका मार्गदर्शन करें।

"हमने हर उम्मत (समुदाय) में एक रसूल भेज दिया, और उसके द्वारा सबको सूचित कर दिया कि अल्लाह की बन्दगी करो और बढ़े हुए अवज्ञाकारी (ताग़ूत) की बन्दगी से बचो। इसके बाद उनमें से किसी को अल्लाह ने मार्ग दिखाया और किसी पर गुमराही छा गई। फिर तनिक ज़मीन में चल-फिरकर देख लो कि झुठलानेवालों का क्या अंजाम हो चुका है!"

(क़ुरआन, सूरा-16 अन-नह्ल, आयत-36)

क़ुरआन इस परिकल्पना का पूरी शक्ति से खण्डन करता है कि इनसानी संस्कृति में ख़ुदा की अवधारणा बहुदेव और बहुदेववादी विचारों से

पैदा हुई और फिर क्रमशः एकेश्वरवाद तक पहुँची। इस सोच के मुताबिक़ जैसे-जैसे इनसानी संस्कृति तरक़्क़ी करेगी, वह नास्तिकता तक पहुँचेगी।

क़ुरआन साफ़ शब्दों में कहता है—

"शुरू में सब लोग एक ही तरीक़े पर थे। (फिर यह हालत बाक़ी न रही और विभेद प्रकट हुए) तब अल्लाह ने नबी भेजे जो सीधे मार्ग पर चलने पर ख़ुशख़बरी देनेवाले और टेढ़ी चाल के परिणामों से डरानेवाले थे, और उनके साथ सत्य पर आधारित पुस्तक उतारी ताकि सत्य के विषय में लोगों के बीच जो विभेद उत्पन्न हो गए थे, उनका फ़ैसला करे—(और इन विभेदों के प्रकट होने का कारण यह न था कि शुरू में लोगों को सत्य का ज्ञान कराया ही नहीं गया था। नहीं,) विभेद उन लोगों ने किया, जिन्हें सत्य का ज्ञान दिया जा चुका था। उन्होंने स्पष्ट आदेश पा लेने के बाद केवल इसलिए सत्य को छोड़कर विभिन्न रास्ते निकाले कि वे परस्पर ज़्यादती करना चाहते थे—अतः जिन लोगों ने पैग़म्बरों को माना, उन्हें अल्लाह ने अपनी अनुमति से उस सत्य का रास्ता दिखा दिया, जिसमें लोगों ने विभेद किया था। अल्लाह जिसे चाहता है, सीधा मार्ग दिखा देता है।"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-213)

क़ुरआन इस बात को बार-बार दोहराता है कि सारे पैग़म्बर और रसूल एक ही पैग़ाम के साथ आए।

"ऐ नबी! हमने तुम्हारी ओर उसी तरह 'वह्य' (प्रकाशना) भेजी है जिस तरह नूह और उसके बाद के पैग़म्बरों की ओर भेजी थी। हमने इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़, याक़ूब और याक़ूब की सन्तान, ईसा, अय्यूब, यूनुस, हारून और सुलैमान की ओर प्रकाशना भेजी। हमने दाऊद को ज़बूर दी।"

(क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-163)

"मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ, अतः तुम अल्लाह से

डरो और मेरी आज्ञा का पालन करो। मैं इस काम पर तुमसे किसी पारिश्रमिक की माँग नहीं करता। मेरा पारिश्रमिक तो सारे जहान के रब के ज़िम्मे है।"

(क़ुरआन, सूरा-26 अश-शोअरा, आयतें-107 से 109)

ऊपर की आयतों में हज़रत नूह (अलैहि०) अपनी क़ौम को दावत दे रहे हैं। यही संबोध ठीक इन्हीं शब्दों में कई जगह सूरा-26 अश-शोअरा में आया है। आयत-125 से 127 में हज़रत हूद (अलैहि०), आयत-143 से 145 में हज़रत सॉलेह (अलैहि०), आयत-162 से 164 में हज़रत लूत (अलैहि०), आयत-178 से 180 में हज़रत शुऐब (अलैहि०) इन्हीं शब्दों में अपना सन्देश सुना रहे हैं।

इसके साथ-साथ हर पैग़म्बर ने साफ़-साफ़ बता दिया कि वे केवल इनसान हैं। क़ुरआन में इस बात का कई जगह उल्लेख हुआ है।

"उनके रसूलों ने उनसे कहा, 'वास्तव में हम कुछ नहीं हैं, मगर तुम ही जैसे इनसान। लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है अपना कृपापात्र बनाता है, और यह हमारे अधिकार में नहीं है कि तुम्हें कोई प्रमाण लाकर दें। प्रमाण तो अल्लाह ही की अनुज्ञा से आ सकता है और अल्लाह ही पर ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए'।" (क़ुरआन, सूरा-14 इबराहीम, आयत-11)

"किसी इनसान का यह काम नहीं कि अल्लाह तो उसको किताब और निर्णय-शक्ति और पैग़म्बरी प्रदान करे और वह लोगों से कहे कि अल्लाह को छोड़कर तुम मेरे बन्दे बन जाओ। वह तो यही कहेगा कि सच्चे 'रब्बानी' (प्रभु-सेवक) बनो जैसा कि उस किताब की शिक्षा का तक़ाज़ा (माँग) है जिसे तुम पढ़ते और पढ़ाते हो। वह तुमसे कभी भी यह न कहेगा कि फ़रिश्तों को या पैग़म्बरों को अपना रब बना लो। क्या यह सम्भव है कि एक नबी तुम्हें अधर्म का आदेश दे, जबकि तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो?"

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयतें : 79-80)

नबियों और पैग़म्बरों के पदानुकूल काम क्या थे? क़ुरआन कहता है कि

उनकी ज़िम्मेदारी सिर्फ़ पैग़ाम पहुँचाने की थी। वे अपने समुदायों (उम्मतों) के बहुदेववाद और उनकी पथभ्रष्टता पर नहीं पकड़े जाएँगे। हक़ के पैग़ाम को क़बूल करना आदमी की निजी ज़िम्मेदारी है, क्योंकि हममें से हर एक अपने कर्मों का ख़ुद ही जवाबदेह है—

"कहो, 'अल्लाह के आज्ञाकारी बनो और रसूल के आदेशाधीन बनकर रहो,' लेकिन अगर तुम मुँह फेरते हो तो ख़ूब समझ लो कि रसूल पर जिस कर्तव्य का भार रखा गया है, उसका ज़िम्मेदार वह है और तुमपर जिस कर्तव्य का बोझ डाला गया है उसके ज़िम्मेदार तुम हो। उसकी आज्ञा का पालन करोगे तो ख़ुद ही मार्ग पाओगे वरना रसूल की ज़िम्मेदारी इससे ज़्यादा कुछ नहीं है कि स्पष्ट रूप से सन्देश पहुँचा दे'।"

(क़ुरआन, सूरा-24 अन-नूर, आयत-54)

"हम जो रसूल भेजते हैं इसी लिए तो भेजते हैं कि वे नेक चरित्रवाले लोगों के लिए ख़ुशख़बरी देनेवाले और बुरे चरित्रवाले लोगों के लिए डरानेवाले हों। फिर जो लोग उनकी बात मान लें और अपनी नीति का सुधार कर लें, उनके लिए किसी डर और रंज का कोई मौक़ा नहीं है। और जो हमारी आयतों को झुठलाएँ, वे अपनी नाफ़रमानियों (अवज्ञा) के बदले में सज़ा भुगतकर रहेंगे।" (क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयतें: 48-49)

"रसूल की ज़िम्मेदारी तो सिर्फ़ सन्देश पहुँचा देने की है, आगे तुम्हारी खुली और छिपी हालतों का जाननेवाला अल्लाह है।"

(क़ुरआन, सूरा-5 अल-माइदा, आयत-99)

दुनिया में पैग़म्बरों को ख़ुशख़बरी देनेवाला और डरानेवाला बनाकर भेजा गया है, लेकिन आख़िरत में हिसाब के दिन यही बात उन लोगों से पूछी जाएगी, जिन्होंने हक़ (सच) का इनकार किया। वे अपनी हठधर्मी और अहंकार का कोई जवाब नहीं दे पाएँगे।

"हमने उन रसूलों पर भी प्रकाशना अवतरित की जिनकी चर्चा

हम इससे पहले तुमसे कर चुके हैं और उन रसूलों पर भी जिनकी चर्चा तुमसे नहीं की। हमने मूसा से इस तरह बातचीत की जिस तरह बातचीत की जाती है। ये सारे रसूल ख़ुशख़बरी देनेवाले और डरानेवाले बनाकर भेजे गए थे ताकि उनको भेज देने के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुक़ाबले में कोई तर्क न रहे और अल्लाह हर हाल में प्रभावशाली और तत्वदर्शी है।"

(क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयतें: 164-165)

क़ियामत के दिन जब हिसाब-किताब होगा, अल्लाह के उन पैग़म्बरों को बुलाया जाएगा ताकि वे गवाह रहें कि अल्लाह जो सबसे बड़ा और मेहरबान, दयालु और कृपालु है, जिसने इनसान को पैदा किया, उसको अच्छाई और बुराई में फ़ैसला करने की ताक़त दी और उसको अपना मार्ग चुनने का अधिकार दिया, उसने उसके मार्गदर्शन के लिए अपने पैग़म्बरों के द्वारा हिदायत और रहनुमाई का भी इन्तिज़ाम किया था।

"(इन्हें कुछ होश भी है कि उस दिन क्या बनेगी) जबकि हम हर उम्मत (समूह) में से एक गवाह खड़ा करेंगे, फिर सत्य के इनकारियों को न तर्क प्रस्तुत करने का अवसर दिया जाएगा, न उनसे तौबा और माफ़ी ही की माँग की जाएगी। ज़ालिम लोग जब एक बार अज़ाब (दण्ड) देख लेंगे तो उसके बाद न उनके अज़ाब में कोई कमी की जाएगी और न उन्हें एक क्षण-भर मुहलत दी जाएगी।" (क़ुरआन, सूरा-16 अन-नह्ल, आयतें: 84-85)

अब अगर हम ध्यान करेंगे कि लोगों ने पैग़म्बरों के साथ क्या सुलूक किया, तो हम देखते हैं कि लोगों ने आम तौर पर इतिहास के लगभग हर मोड़ पर पैग़म्बरों का इनकार किया। इस काम में घमण्डी लोग और धनी लोग सबसे आगे थे।

"ऐ नबी! हम तुमसे पहले बहुत-सी गुज़री हुई क़ौमों में रसूल भेज चुके हैं। कभी ऐसा नहीं हुआ कि उनके पास कोई रसूल आया हो और उन्होंने उसकी हँसी न उड़ाई हो।"

(क़ुरआन, सूरा-15 अल-हिज्र, आयतें : 10-11)

"क्या तुम्हें उन क़ौमों के हालात नहीं पहुँचे जो तुमसे पहले गुज़र चुकी हैं: नूह की क़ौम, आद, समूद और उनके बाद में आनेवाली बहुत-सी क़ौमें जिनकी गिनती अल्लाह को ही मालूम है? उनके रसूल जब उनके पास साफ़-साफ़ बातें और खुली-खुली निशानियाँ लिए हुए आए तो उन्होंने अपने मुँह में हाथ दबा लिए और कहा कि 'जिस सन्देश के साथ तुम भेजे गए हो हम उसको नहीं मानते और जिस चीज़ का तुम हमें आमंत्रण देते हो, उसकी ओर से हम बहुत संशय एवं दुविधाजनक सन्देह में पड़े हुए हैं।' उनके रसूलों ने कहा, 'क्या अल्लाह के बारे में शक है जो आसमानों और ज़मीन का स्रष्टा है? वह तुम्हें बुला रहा है ताकि तुम्हारे गुनाह माफ़ करे और तुमको नियत समय तक मुहलत दे।' उन्होंने जवाब दिया, 'तुम कुछ नहीं हो, मगर वैसे ही इनसान, जैसे हम हैं। तुम हमें उन हस्तियों की बन्दगी (पूजा) से रोकना चाहते हो जिनकी बन्दगी बाप-दादा से होती चली आ रही है। अच्छा, तो लाओ कोई स्पष्ट प्रमाण।' उनके रसूलों ने उनसे कहा, 'वास्तव में हम कुछ नहीं हैं, मगर तुम ही जैसे इनसान। लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है, अपना कृपापात्र बनाता है, और यह हमारे अधिकार में नहीं है कि तुम्हें कोई प्रमाण लाकर दें। प्रमाण तो अल्लाह ही की अनुज्ञा से आ सकता है और अल्लाह ही पर ईमानवालों को भरोसा करना चाहिए। और हम क्यों न अल्लाह पर भरोसा करें जबकि हमारी ज़िन्दगी की राहों में उसने हमारा पथ-प्रदर्शन किया है? जो तकलीफ़ें तुम लोग हमें दे रहे हो उनपर हम सब्र से काम लेंगे और भरोसा करनेवालों का भरोसा अल्लाह ही पर होना चाहिए।' आख़िरकार इनकार करनेवालों ने अपने रसूलों से कह दिया कि 'या तो तुम्हें हमारे समुदाय में लौट आना होगा वरना हम तुम्हें अपने देश से निकाल देंगे।' तब उनके रब ने उनकी ओर प्रकाशना (वह्य) की कि 'हम इन ज़ालिमों को तबाह कर देंगे और उनके बाद तुम्हें ज़मीन में

बसाएँगे। यह इनाम है उसका जो मेरे सामने जवाबदेही का डर रखता हो और मेरी चेतावनी से डरता हो।' उन्होंने फ़ैसला चाहा था (तो यूँ उनका फ़ैसला हुआ) और हर पाषाणहृदय, सत्य के बैरी ने मुँह की खाई।"

(क़ुरआन, सूरा-14 इबराहीम, आयतें-9 से 15)

वे लोग, जिनके दिल इस पैग़ाम और मार्गदर्शन की तरफ़ आकर्षित हुए, जिसको लेकर अल्लाह के पैग़म्बर और नबी आए, उनकी गिनती बहुत कम थी। आम तौर पर ये समाज के दबे-कुचले और कमज़ोर लोग थे। हालाँकि दुनिया की दृष्टि से ये ग़रीब लोग थे, लेकिन उनके पास ईमान और समझ-बूझ का बड़ा ख़ज़ाना था। क़ुरआन उनके आज्ञाकारी स्वभाव का ज़िक्र करते हुए कहता है—

"रसूल (ईश्वरीय सन्देशवाहक) ने उस मार्गदर्शन को माना जो उसके रब की ओर से उसपर उतरा है। और जो लोग इस रसूल के माननेवाले हैं, उन्होंने भी उस मार्गदर्शन को दिल से मान लिया है। ये सब अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों को मानते हैं और इनका कहना यह है कि 'हम अल्लाह के रसूलों को एक-दूसरे से अलग नहीं करते, हमने हुक्म सुना और आज्ञाकारी हुए। मालिक! हम तुझसे माफ़ी चाहते हैं और हमें तेरी ही ओर पलटना है'।"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-285)

# 3:2 पैग़म्बर आदम (अलैहिस्सलाम)

"फिर ज़रा उस समय की कल्पना करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा था कि 'मैं धरती में एक ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) बनानेवाला हूँ।' उन्होंने निवेदन किया, 'क्या आप धरती में किसी ऐसे को नियुक्त करनेवाले हैं जो उसकी व्यवस्था को बिगाड़ देगा और रक्तपात करेगा? आपकी तारीफ़ और प्रशंसा के साथ तसबीह (महिमागान) और आपकी पवित्रता का वर्णन तो हम कर ही रहे हैं।' (अल्लाह ने) कहा, 'मैं जानता हूँ, जो कुछ तुम नहीं जानते'।"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-30)

इस आयत के साथ क़ुरआन इनसान की नस्ल का बयान शुरू करता है। हालाँकि इनसान की शारीरिक संरचना के बारे में इससे पहले बात हो चुकी है। यहाँ हम इसके रूहानी (आध्यात्मिक) पहलू पर बात करेंगे। इस्लामी विद्वानों ने इस आयत के अर्थ और विश्लेषणों पर विस्तार से बातचीत की है। इस आयत की रौशनी में हमें विचार करना चाहिए कि–

(1) इनसान पर ज़मीन में अल्लाह ने ख़िलाफ़त (प्रतिनिधित्व) की अहम ज़िम्मेदारी डाली है। क्या वह इस पद का सही इस्तेमाल कर रहा है? क्या वह अल्लाह के हुक्मों का पालन कर रहा है या दूसरों के बनाए हुए क़ानूनों की पैरवी कर रहा है?

(2) क्या हम फ़रिश्तों के ख़याल को सही साबित कर रहे हैं और अपने पैदा करनेवाले के इस यक़ीन को झुठला रहे हैं जो सृष्टि के बनानेवाले ने ज़ाहिर किया था? क्या यह बात सही नहीं है कि हममें से अक्सर इस बात को अपनी दशा से साबित कर रहे हैं कि हम इस बड़ी ज़िम्मेदारी के योग्य नहीं हैं, जो ज़िम्मेदारी स्रष्टा ने हमारे ऊपर डाली थी?

आइए इसकी अगली आयतों पर भी नज़र डालें—

"इसके बाद अल्लाह ने आदम (अलैहि॰) को सारी चीज़ों के नाम सिखाए, फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया और कहा, 'यदि तुम्हारा विचार सही है (कि किसी ख़लीफ़ा की नियुक्ति से व्यवस्था बिगड़ जाएगी), तो तनिक इन चीज़ों के नाम बताओ।' उन्होंने कहा, 'ऐबों (त्रुटि) से पाक तो आप ही की हस्ती है, हमें तो बस उतना ही ज्ञान है, जितना आपने हमको दे दिया है। वास्तव में सब कुछ जाननेवाला और समझनेवाला आपके सिवा कोई नहीं।' फिर अल्लाह ने आदम से कहा, 'तुम इन्हें इनके नाम बताओ।' जब उसने उनको इन सबके नाम बता दिए, तो अल्लाह ने कहा, 'मैंने तुमसे कहा न था कि मैं आकाशों और धरती के वे सारे तथ्य जानता हूँ जो तुमसे छिपे हैं, जो कुछ तुम स्पष्ट रूप से करते हो, वह भी मुझे मालूम है और जो कुछ तुम छिपाते हो, उसे भी मैं जानता हूँ।' फिर जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे झुक जाओ, तो सब झुक गए, मगर इबलीस ने इनकार किया। वह अपनी बड़ाई के घमण्ड में पड़ गया और अवज्ञाकारियों में शामिल हो गया।"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयतें-31 से 34)

अब इन आयतों के पैग़ाम पर ग़ौर करते हैं—

(1) इनसान को ज्ञान और समझ दी गई है जिसकी उसको अल्लाह के ख़लीफ़ा की हैसियत से ज़रूरत थी। इस ज्ञान की बुनियाद रूहानी (आध्यात्मिक) है और हर ज्ञान की बुनियाद अल्लाह के पक्के ज्ञान और तत्वदर्शिता पर है। इसलिए इनसान के सारे ज्ञान और कला को इसी रूहानी ज्ञान की बुनियाद पर परखना चाहिए। इस बात को हर समय मन में रखना चाहिए कि रचना के अवसर पर ही इनसान को पूरा ज्ञान और विवेक दे दिया गया था, ताकि अपने ऊपर डाली गई ज़िम्मेदारियों की बेहतरीन अन्दाज़ में अदाएगी कर सके।

(2) हालाँकि फ़रिश्ते अपने सीमित ज्ञान की बुनियाद पर हक्का-बक्का थे परन्तु उन्होंने अपनी ग़लती को फ़ौरन मान लिया और अल्लाह के हुक्म से हज़रत आदम (अलैहि०) के आगे झुक गए। इससे उनकी सच्चाई का प्रमाण मिलता है।

(3) इबलीस अपनी हठधर्मी की वजह से सच को देखने में नाकाम रहा और अपने पैदा करनेवाले के हुक्म को मानने से इनकार कर दिया। यही वजह है कि सदा-सर्वदा की नाकामी और बदनसीबी और रुसवाई उसके हिस्से में आई।

इस व्यवहार की मिसाल हमें इनसानी समाज में भी मिलती है। नेक और भले लोग हमेशा अल्लाह की दुनिया और दूसरी चीज़ों की रचना में सोच- विचार करते हैं। क़ुरआन तो हमें बार-बार इसपर उभारता है कि दुनिया और सृष्टि की रचना पर ग़ौर करें और फिर अपनी इच्छा से सृष्टि के बनानेवाले के आगे अपना सिर झुका दें।

इसके विपरीत बहुत-से लोग हैं जो समझते हैं कि इनसान की बुद्धि से बढ़कर कोई चीज़ नहीं। अपनी अज्ञानता और हठधर्मी से अल्लाह की सर्वोच्च सत्ता को स्वीकार नहीं करते और उसके हुक्मों को मानने से इनकार करते हैं। विनाश ही उनका स्पष्ट अंजाम है।

इबलीस सिर्फ़ अवज्ञा पर ही नहीं रुका। अपनी अज्ञानता और नाकामी की वजह से उसने क़सम खाई कि पूरी मानव-जाति को भटकाएगा, ताकि यह सिद्ध कर सके कि वह इनसानों से श्रेष्ठ है—

> "रब ने कहा, 'ऐ इबलीस! तुझे क्या चीज़ उसको सजदा करने में रोक बनी जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया है? तू बड़ा बन रहा है या तू है ही कुछ उच्च श्रेणी की हस्तियों में से?' उसने जवाब दिया, 'मैं इससे अच्छा हूँ, आपने मुझको आग से पैदा किया है और इसको मिट्टी से।' कहा, 'अच्छा तू यहाँ से निकल जा, तू तिरस्कृत है और तेरे ऊपर बदला दिए जाने के दिन तक मेरी लानत है।' वह बोला, 'ऐ मेरे रब! यह बात है तो फिर उस

समय तक के लिए मुझे मुहलत दे दे जब ये लोग दोबारा उठाए जाएँगे।' कहा, 'अच्छा, तुझे उस दिन तक की मुहलत है जिसका समय मुझे मालूम है।' उसने कहा, 'तेरे प्रताप की सौगंध! मैं इन सब लोगों को बहकाकर रहूँगा, सिवाए तेरे उन बन्दों के जिन्हें तूने ख़ालिस कर लिया है।' कहा, 'तो सत्य यह है, और मैं सत्य ही कहता हूँ कि मैं नरक को तुझसे और उन सब लोगों से भर दूँगा जो इन इनसानों में से तेरा अनुसरण करेंगे'।"

(क़ुरआन, सूरा-38 सॉद, आयतें-75 से 85)

ये आयतें हमें बताती हैं—

(1) इबलीस अपनी हठधर्मी से अपने-आपको इनसान से श्रेष्ठ समझ बैठा। उसकी बातचीत की पूरी बुनियाद इनसान की ज़ाहिरी (ऊपरी) बनावट पर थी। उसने इनसान की अच्छाइयों और विशेषताओं पर ध्यान करने की कोशिश ही नहीं की।

(2) यद्यपि उसने अल्लाह की दूसरी रचना की श्रेष्ठता को मानने से इनकार कर दिया, उसने अल्लाह की बड़ाई को पूरी तरह स्वीकार किया और अल्लाह तआला की क़सम खाकर ही उसने प्रतिज्ञा की कि वह अल्लाह तआला की दी हुई ताक़त को इस्तेमाल करके इनसान को गुमराह करने की कोशिश करेगा। उसके व्यक्तित्व का यह विरोधाभास बहुत ही शिक्षाप्रद है। उसका आज्ञापालन सशर्त है। वह इसको सिर्फ़ इस शर्त पर क़बूल करेगा अगर उसकी अपनी श्रेष्ठता पर आँच नहीं आए।

(3) अपनी सारी कोशिशों और दाँव-पेंच के बावजूद इबलीस, अल्लाह के उन बन्दों को बहकाने में बिलकुल नाकाम है जो परहेज़गारी अपनाते और उसी से डरते हैं।

इससे यह बात बिलकुल साफ़ हो जाती है कि अल्लाह ने इनसान को वह ताक़त दी है जिससे वह हर लालच और धोखे का सामना कर सके जो इबलीस उसके सामने लेकर आए।

लेकिन दो स्थितियों में इनसान आसानी से इबलीस का शिकार हो

सकता है। पहले तो अगर उसके दिल में बुराई जगह बना ले। दूसरे अगर बुराई को अच्छाई के रूप में पेश किया जाए।

लेकिन हर दो स्थितियों में आरोप इनसान खुद अपने-आपपर लगाए। हज़रत आदम (अलैहि०) को शैतान ने दूसरे रूप में बहकाया था। क़ुरआन साफ़-साफ़ बताता है कि इबलीस ने हज़रत आदम (अलैहि०) को किस तरह बहकाया था—

"याद करो वह समय जबकि हमने फ़रिश्तों से कहा था कि आदम को सजदा करो। वे सब तो सजदा कर गए, मगर एक इबलीस था कि इनकार कर बैठा। इसपर हमने आदम से कहा कि 'देखो, यह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है, ऐसा न हो कि यह तुम्हें जन्नत से निकलवा दे और तुम मुसीबत में पड़ जाओ। यहाँ तो तुम्हें ये सुख-सुविधाएँ प्राप्त हैं कि न भूखे-नंगे रहोगे, न प्यास और धूप तुम्हें सताएगी।' लेकिन शैतान ने उसको फुसलाया, कहने लगा, 'आदम! बताऊँ तुम्हें वह पेड़ जिससे हमेशा की ज़िन्दगी और अपतनशील राज्य प्राप्त होता है?' आख़िरकार दोनों (पति-पत्नी) उस पेड़ का फल खा गए। नतीजा यह हुआ कि तुरन्त ही उनके गुप्तांग एक-दूसरे के आगे खुल गए और लगे दोनों अपने-आपको जन्नत के पत्तों से ढाँकने। आदम ने अपने रब की नाफ़रमानी की और सीधे रास्ते से भटक गया।"

(क़ुरआन, सूरा-20 ताहा, आयतें-116 से 121)

इस घटना का उल्लेख सूरा-7 अल-आराफ़ में इस तरह है—

"फिर शैतान ने उनको बहकाया ताकि उनकी गुप्त इन्द्रियाँ जो एक-दूसरे से छिपाई गई थीं, उनके सामने खोल दे। उसने उनसे कहा, 'तुम्हारे रब ने तुम्हें जो इस पेड़ से रोका है इसका कारण इसके सिवा कुछ नहीं है कि कहीं तुम फ़रिश्ते न बन जाओ या तुम्हें हमेशा की ज़िन्दगी प्राप्त न हो जाए।' और उसने क़सम खाकर उनसे कहा कि मैं तुम्हारा सच्चा हितैषी हूँ। इस तरह धोखा

देकर वह उन दोनों को धीरे-धीरे अपने ढबपर ले आया। आख़िरकार जब उन्होंने उस पेड़ का मज़ा चखा तो उनकी गुप्त इन्द्रियाँ एक-दूसरे के सामने ख़ुल गईं और वे अपने शरीरों को जन्नत के पत्तों से ढाँकने लगे। तब उनके रब ने उन्हें पुकारा, 'क्या मैंने तुम्हें इस पेड़ से न रोका था और न कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है?' दोनों बोल उठे, 'ऐ रब! हमने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, अब अगर तूने हमें माफ़ न किया और दया न की तो यक़ीनन हम तबाह हो जाएँगे'।"

(क़ुरआन, सूरा-7 अल-आराफ़, आयतें-20 से 23)

आइए इन आयतों की महत्वपूर्ण शिक्षाओं पर ग़ौर करें—

(1) हज़रत आदम (अलैहि॰) को पहले ही आनेवाले ख़तरे से अवगत कर दिया गया था। उनको सृष्टि के रचनाकार ने यह बात साफ़-साफ़ बता दी थी कि सिर्फ़ उसके हुक्मों की पाबन्दी करें और इबलीस से होशियार रहें। क़ुरआन बताता है कि हर जीवधारी से दुनिया में आने से पहले यह वचन लिया गया था कि वह सिर्फ़ अल्लाह के हुक्मों की पाबन्दी करेगा। और शैतान से बचे रहने के लिए अल्लाह की पनाह हासिल करेगा। लेकिन इसके बावजूद हममें से अकसर इबलीस के बनाए हुए फन्दे में फँस जाते हैं—

"और याद करो वह समय जबकि तुम्हारे रब ने आदम के बेटों की पीठों से उनकी नस्ल को निकाला था और उन्हें ख़ुद उनके ऊपर गवाह बनाते हुए पूछा था, 'क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?' उन्होंने कहा, 'ज़रूर आप ही हमारे रब हैं, हम इसपर गवाही देते हैं।' यह हमने इसलिए किया कि कहीं तुम क़ियामत के दिन यह न कह दो कि हम तो इस बात से बेख़बर थे या यह न कहने लगो कि 'शिर्क' (बहुदेववाद) का आरम्भ तो हमारे बाप-दादा ने हमसे पहले किया था और हम उसके पश्चात् उनकी नस्ल से पैदा हुए, फिर क्या आप हमें उस अपराध में पकड़ते हैं जो ग़लतकार लोगों ने किया था? देखो, इस तरह हम निशानियाँ स्पष्ट रूप से बताते

हैं। और ऐसा इसलिए करते हैं कि ये लोग पलट आएँ।"

(क़ुरआन, सूरा-7 अल-आराफ़, आयतें-172 से 174)

(2) एक बहुत ही महत्वपूर्ण सच्चाई जो ऊपर लिखी आयतों से ज़ाहिर है, वह यह कि हज़रत आदम (अलैहि॰) को भटकानेवाली हज़रत हव्वा नहीं थीं, बल्कि उन दोनों को शैतान ने बहकाया। सूरा-20 ता॰हा॰ की आयत-120 स्पष्ट शब्दों में कहती है कि इस विचार को इबलीस ने सबसे पहले आदम (अलैहि॰) के दिल में डाला और हज़रत आदम (अलैहि॰) ही बड़ी हद तक अपने और हव्वा के जन्नत से निकलवाने के ज़िम्मेदार थे। ये आयतें इस झूठ की जड़ें काट देती हैं कि हज़रत हव्वा (या फिर औरत) हज़रत आदम (अलैहि॰) (या मर्द) को जन्नत से निकलवाने की ज़िम्मेदार थीं।

(3) इन आयतों से यह बात भी स्पष्ट है कि इनसानी स्वभाव बुनियादी तौर पर अच्छाई को पसन्द करता है और बुराई को नापसन्द। हज़रत आदम (अलैहि॰) को धोखे से वह उम्मीद दिलाई गई कि वह हमेशा की ज़िन्दगी और फ़रिश्तों की हैसियत हासिल कर सकते हैं। धोखा देने का यह अन्दाज़ शैतानी ताक़तों ने हमेशा अपनाया है। आम तौर पर बुराई को लोग इसलिए क़बूल करते हैं कि वह इनसानों के सामने अच्छाई के रूप में पेश की जाती है। बहुत कम हालतों में ऐसा होता है कि बुराई को बुराई समझकर कोई आदमी अपनाए और उसमें अपराध का एहसास पैदा न हो। लेकिन अगर ग़लत काम बार-बार किया जाए तो अपराध का एहसास भी ख़त्म हो जाता है।

(4) सबसे ख़ास चीज़ जो हज़रत आदम (अलैहि॰) और इबलीस के बीच फ़र्क़ करती है, वह यह कि इबलीस न सिर्फ़ हठधर्मी था, बल्कि हठधर्मिता में अपने बनाने या पैदा करनेवाले को ही अपने कर्मों का ज़िम्मेदार ठहरा रहा था।

"बोला, 'अच्छा तो जिस तरह तूने मुझे गुमराही में डाला है मैं भी अब तेरी सीधी राह पर इन इनसानों की घात में लगा रहूँगा'।"

(क़ुरआन, सूरा-7 अल-आराफ़, आयत-16)

बिलकुल यही अन्दाज़ उन लोगों का है जो गुनाह करने के बाद इसका ज़िम्मेदार दूसरों को ठहराते हैं या वे कहते हैं कि वे अपने कर्मों के ज़िम्मेदार नहीं और अपनी क़िस्मत पर इसकी ज़िम्मेदारी डालते हैं।

इस आदत के विपरीत मिसाल हज़रत आदम (अलैहि॰) की है। जब वे इबलीस के फन्दे में फँस गए तो उन्होंने तुरन्त ही अपनी ग़लती की पूरी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। हज़रत आदम (अलैहि॰) और हज़रत हव्वा (अलैहि॰) की दुआ देखिए—

> "दोनों बोल उठे, 'ऐ रब! हमने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, अब अगर तूने हमें माफ़ न किया और दया न की तो यक़ीनन हम तबाह हो जाएँगे'।" (क़ुरआन, सूरा-7 अल-आराफ़, आयत-23)

क़ुरआन हमको यह भी स्पष्ट रूप से बताता है कि ये शब्द आदम (अलैहि॰) और हव्वा (अलैहि॰) को उनके पैदा करनेवाले ने सिखाए।

सबके बनाने या पैदा करनेवाले ने आदम (अलैहि॰) और हव्वा (अलैहि॰) की ग़लती पर तौबा को क़बूल किया, लेकिन इसके बाद उनको ज़मीन पर भेज दिया गया। ज़मीन पर उनका भेजा जाना उनके लिए सज़ा नहीं था, बल्कि सारे इनसानों के लिए इम्तिहान की योजना का एक हिस्सा था। इनसान की नस्ल को दुनिया के अन्त तक इसी संसार में रहना है। वे लोग जो अपने-आपको शैतान के फन्दों में फँसने से बचाते हैं और अल्लाह के आज्ञाकारी बनते हैं, वही लोग कामयाब और ख़ुशक़िस्मत हैं और वे लोग जो सही रास्ते से भटक जाते हैं और शैतान के फन्दों में आसानी से फँस जाते हैं, वही लोग नाकाम और अभागे हैं।

> "उस समय आदम ने अपने रब से कुछ शब्द सीखकर तौबा (क्षमायाचना) की, जिसको उसके रब ने स्वीकार कर लिया, क्योंकि वह बड़ा क्षमा करनेवाला और दया करनेवाला है। हमने कहा कि तुम सब यहाँ से उतर जाओ। फिर मेरी ओर से जो मार्गदर्शन तुम्हारे पास पहुँचे, तो जो लोग मेरे उस बताए मार्गदर्शन पर चलेंगे, उनके लिए किसी भय और दुख का मौक़ा न होगा,

> और जो उसे स्वीकार करने से इनकार करेंगे और हमारी आयतों को झुठलाएँगे, वे आग (नरक) में जानेवाले हैं, जहाँ वे हमेशा रहेंगे।" (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयतें-37 से 39)

भले लोगों के लिए आदम (अलैहि॰) के इस क़िस्से में एक ख़ास सन्देश छिपा हुआ है। ऐसे भले और नेक लोग जिनसे कोई गुनाह का काम हो जाए तो उसी वक़्त वे हठधर्मिता दिखाने के बजाए अपनी ग़लती को मान लेते हैं, अल्लाह से क्षमायाचना करते हैं। वे अपनी ग़लती पर पछतावा करते हुए दयावान अल्लाह से दया की भीख माँगते हैं।

ऐसे लोगों के पछतावे तथा माफ़ी की दरख़ास्त पर अल्लाह का जवाब क्या होता है? वह हमेशा ऐसे बन्दों को माफ़ करने के लिए तैयार रहता है, जो पूरी निर्मलता और निष्ठा से पछतावा प्रकट करते हैं–

> "(ऐ नबी!) कह दो कि ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है, अल्लाह की दयालुता से निराश न हो जाओ, यक़ीनन अल्लाह सारे गुनाह माफ़ कर देता है, वह तो अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है। पलट आओ अपने रब की ओर और आज्ञाकारी बन जाओ उसके, इससे पहले कि तुमपर अज़ाब (प्रकोप) आ जाए और फिर कहीं से तुम्हें सहायता न मिल सके।" (क़ुरआन, सूरा-39 अज़-ज़ुमर, आयतें : 53-54)

# 3:3 पैग़म्बर नूह (अलैहिस्सलाम)

"हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा और वह पचास कम एक हज़ार वर्ष उनके बीच रहा। आख़िरकार उन लोगों को तूफ़ान ने आ घेरा इस हाल में कि वे ज़ालिम थे। फिर नूह को और नाववालों को हमने बचा लिया और उसे दुनियावालों के लिए शिक्षा की एक निशानी बनाकर रख दिया।"

(क़ुरआन, सूरा-29 अल-अनकबूत, आयतें : 14-15)

हज़रत आदम (अलैहि॰) के बाद हज़रत नूह (अलैहि॰) दुनिया के सबसे पहले बड़ी हिम्मतवाले (दृढ़संकल्पी) पैग़म्बर हैं जिनको इनसानों की रहनुमाई के लिए भेजा गया था। वे 950 साल तक लोगों को सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाते रहे। बार-बार हठधर्मिता दिखाने पर उनकी क़ौम अल्लाह की तरफ़ से एक बड़ी बाढ़ (अज़ीम सैलाब) के विनाश की हक़दार ठहरी।

इस ज़बरदस्त सैलाब या बाढ़ की कहानी किसी-न-किसी रूप में दुनिया के विभिन्न देशों, यूनान, भारत और चीन में पाई जाती है। अमेरिकन-इण्डियन कम्यूनिटी में, अब्दुल्लाह यूसुफ़ अली के मुताबिक़, यह रिवायत (कथा) बिलकुल आम थी।

क़ुरआन में इसका विवरण कई स्थान पर आया है—

"हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा था। (उसने कहा,) 'मैं तुम लोगों को स्पष्ट रूप से ख़बरदार करता हूँ कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो। नहीं तो मुझे आशंका है कि तुमपर एक दिन दर्दनाक अज़ाब आएगा।' जवाब में उसकी क़ौम के सरदार, जिन्होंने उसकी बात मानने से इनकार किया था, बोले, 'हमारी नज़र में तो तुम इसके सिवा कुछ नहीं हो कि बस एक इनसान हो हम जैसे। और हम देख रहे हैं कि हमारी क़ौम में से

बस वे लोग जो हमारे यहाँ सबसे तुच्छ थे बिना सोचे-समझे तुम्हारे पीछे चलने लगे हैं। और हम कोई चीज़ भी ऐसी नहीं पाते जिसमें तुम लोग हमसे कुछ बढ़े हुए हो, बल्कि हम तो तुम्हें झूठा समझते हैं।'

उसने कहा, 'ऐ क़ौम के भाइयो! तनिक सोचो तो सही कि अगर मैं अपने रब की ओर से एक स्पष्ट गवाही पर क़ायम था और फिर उसने मुझको अपनी विशेष दयालुता भी प्रदान की मगर वह तुमको दिखाई न दी, तो आख़िर हमारे पास क्या साधन है कि तुम मानना न चाहो और हम ज़बरदस्ती उसको तुम्हारे सिर चिपका दें?

और ऐ क़ौम के भाइयो! मैं इस काम पर तुमसे कोई माल नहीं माँगता, मेरा पारिश्रमिक तो अल्लाह के ज़िम्मे है। और मैं उन लोगों को धक्के देने से भी रहा जिन्होंने मेरी बात मानी है। वे ख़ुद ही अपने रब के पास जानेवाले हैं। मगर मैं देखता हूँ कि तुम लोग अज्ञानी हो। और ऐ मेरी क़ौम! अगर मैं इन लोगों को धुतकार दूँ, तो अल्लाह की पकड़ से कौन मुझे बचाने आएगा? तुम लोगों की समझ में क्या इतनी बात भी नहीं आती? और मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, न यह कहता हूँ कि मैं ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान रखता हूँ, न यह मेरा दावा है कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और यह भी मैं नहीं कह सकता कि जिन लोगों को तुम्हारी आँखें उपेक्षा से देखती हैं, उन्हें अल्लाह ने कोई भलाई नहीं दी। उनके जी का हाल अल्लाह ही ख़ूब जानता है। अगर मैं ऐसा कहूँ तो ज़ालिम होऊँगा।'

आख़िरकार उन लोगों ने कहा कि 'ऐ नूह! तुमने हमसे झगड़ा किया और बहुत कर लिया। अब बस वह अज़ाब (यातना) ले आओ जिसकी तुम हमें धमकी देते हो अगर सच्चे हो।' नूह ने जवाब दिया, 'वह तो अल्लाह ही लाएगा अगर चाहेगा, और तुम इतना बल-बूता नहीं रखते कि उसे रोक दो। अब अगर मैं तुम्हारा कुछ हित भी चाहूँ, तो मेरा हित चाहना तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता जबकि अल्लाह ही ने तुम्हें भटका देने का इरादा कर

लिया हो। वही तुम्हारा रब है और उसी की तरफ़ तुम्हें पलटना है।' ऐ नबी! क्या ये लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने ये सब कुछ खुद घड़ लिया है? इनसे कहो, 'अगर मैंने यह ख़ुद घड़ा है, तो मुझपर अपने अपराध की ज़िम्मेदारी है, और जो अपराध तुम कर रहे हो उसकी ज़िम्मेदारी से मैं बरी (मुक्त) हूँ।'

नूह पर प्रकाशना (वह्य) की गई कि तुम्हारी क़ौम में से जो लोग ईमान ला चुके, बस वे ला चुके, अब कोई माननेवाला नहीं है। उनकी करतूतों पर ग़म खाना छोड़ो और हमारी निगरानी में हमारी प्रकाशना के मुताबिक़ एक नाव बनाना शुरू कर दो। और देखो जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है उनके लिए मुझसे कोई सिफ़ारिश न करना, ये सारे-के-सारे अब डूबनेवाले हैं।

नूह नाव बना रहा था और उसकी क़ौम के सरदारों में से जो कोई उसके पास से गुज़रता था, वह उसकी हँसी उड़ाता था। उसने कहा, 'अगर तुम हमपर हँसते हो तो हम भी तुमपर हँस रहे हैं, जल्द ही तुम्हें ख़ुद मालूम हो जाएगा कि किसपर वह यातना आती है जो उसे अपमानित कर देगी और किसपर वह बला टूट पड़ती है जो टाले न टलेगी।'

यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ गया और तंदूर (तन्नूर) उबल पड़ा तो हमने कहा, 'हर प्रकार के जानवरों का एक-एक जोड़ा नाव में रख लो, अपने घरवालों को भी—सिवाए उन लोगों के जिनके बारे में पहले बताया जा चुका है—उसमें सवार करा दो और उन लोगों को भी बिठा लो जो ईमान लाए हैं।' और थोड़े ही लोग थे जो नूह के साथ ईमान लाए थे। नूह ने कहा, 'सवार हो जाओ इसमें, अल्लाह ही के नाम से इसका चलना भी और इसका ठहरना भी, मेरा रब बड़ा क्षमाशील और दयावान है।' नाव इन लोगों को लिए चली जा रही थी और एक-एक लहर पहाड़ की तरह उठ रही थी। नूह का बेटा दूर फ़ासिले पर था। नूह ने पुकारकर कहा, 'बेटा! हमारे साथ सवार हो जा! अधर्मियों के

साथ न रह!' उसने पलटकर जवाब दिया, 'मैं अभी एक पहाड़ पर चढ़ जाता हूँ जो मुझे पानी से बचा लेगा।' नूह ने कहा, 'आज कोई चीज़ अल्लाह के आदेश से बचानेवाली नहीं है सिवाए इसके कि अल्लाह ही किसी पर दया करे।' इतने में एक लहर दोनों के बीच आ गई और वह भी डूबनेवालों में शामिल हो गया। आदेश हुआ, 'ऐ ज़मीन! अपना सारा पानी निगल जा और ऐ आसमान! रुक जा।' अतएव पानी ज़मीन में बैठ गया, फ़ैसला चुका दिया गया, नाव जूदी (पहाड़) पर टिक गई, और कह दिया गया कि दूर हुई ज़ालिमों की क़ौम! नूह ने अपने रब को पुकारा, कहा, 'ऐ रब! मेरा बेटा मेरे घरवालों में से है और तेरा वादा सच्चा है और तू सब हाकिमों से बड़ा और सबसे अच्छा हाकिम है।' जवाब में कहा गया, 'ऐ नूह! वह तेरे घरवालों में से नहीं है, वह तो एक बिगड़ा हुआ कर्म है, अतः मुझसे उस बात की प्रार्थना न कर जिसकी हक़ीक़त तू नहीं जानता, मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि अपने-आपको जाहिलों की तरह न बना ले।' नूह ने तुरन्त निवेदन किया, 'ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इससे कि वह चीज़ तुझसे माँगूँ जिसका मुझे ज्ञान नहीं! अगर तूने मुझे माफ़ न किया और दया न की तो मैं बरबाद हो जाऊँगा!' आदेश हुआ, 'ऐ नूह! उतर जा! हमारी ओर से सलामती और बरकतें हैं तुझपर और उन गरोहों पर जो तेरे साथ हैं! और कुछ गरोह ऐसे भी हैं जिनको हम कुछ समय तक ज़िन्दगी का सामान प्रदान करेंगे, फिर उन्हें हमारी ओर से दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा।''

(क़ुरआन, सूरा-11 हूद, आयतें-25 से 48)

हज़रत नूह (अलैहि०) के क़िस्से से नीचे लिखे नतीजे निकाले जा सकते हैं—

(1) हमें हर नई विचारधारा को खुली मानसिकता के साथ देखना चाहिए और उसपर सोच-विचार या चिन्तन-मनन करना चाहिए।

(2) हमारा सामाजिक स्थान या वंश अल्लाह के यहाँ कोई काम न आएगा। हिसाब के दिन सिर्फ़ अल्लाह का डर और नेक कर्म ही हमारे काम आएँगे।

(3) पैग़म्बरों के ऊपर सिर्फ़ पैग़ाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी है। वे इस बात के ज़िम्मेदार नहीं हैं कि वे किसी को ईमानवाला बना लें, चाहे वह उनका सगा रिश्तेदार ही क्यों न हो। इस पैग़ाम को क़बूल करने की ज़िम्मेदारी हर आदमी पर निजी तौर पर आती है कि वह पैग़ाम को खुले दिल से सुने और क़बूल करे।

(4) अगर अल्लाह किसी आदमी या गरोह के बारे में अज़ाब का फ़ैसला कर दे तो उस आदमी या गरोह को अल्लाह के अज़ाब से दुनिया की कोई ताक़त भी नहीं बचा सकती।

(5) पैग़म्बर और नबी इनसान थे और उनके अन्दर प्यार और मुहब्बत जैसी इनसानी भावनाएँ थीं। एक बाप होने के नाते से नूह (अलैहि॰) ने अपने बेटे की सुरक्षा के लिए अपनी चिन्ता व्यक्त की, लेकिन अल्लाह ने इस बारे में उनको ख़बरदार किया, तो उन्होंने अल्लाह से माफ़ी माँगी और उसकी पनाह के इच्छुक हुए।

(6) अल्लाह के लिए हमारी बन्दगी सदा सर्वदा के लिए होनी चाहिए। अल्लाह के लिए हमारी मुहब्बत और सम्बन्ध सारी मुहब्बतों और सम्बन्धों से ऊँचा होना चाहिए। अगर हमारे सामने यह चुनौती हो कि हम अपनी दुनिया के सम्बन्धों और रिश्तों और अल्लाह से रिश्तों के बीच किसी एक का चुनाव करें तो हमें हमेशा रहनेवाले रब और पालनहार के रिश्ते को चुनना चाहिए, क्योंकि क़ुरआन कहता है–

"आख़िरकार जब वह कान बहरे कर देनेवाली आवाज़ ऊँची होगी– उस दिन आदमी अपने भाई और अपनी माँ और अपने बाप और अपनी पत्नी और अपनी औलाद से भागेगा। उनमें से हर व्यक्ति पर उस दिन ऐसा समय आ पड़ेगा कि उसे अपने सिवा किसी का होश न होगा।" (क़ुरआन, सूरा-80 अ-ब-स, आयतें-33 से 37)

# 3:4 पैग़म्बर इबराहीम (अलैहिस्सलाम)

"उस आदमी से बेहतर और किसकी जीवन-प्रणाली हो सकती है जिसने अल्लाह के आगे सिर झुका दिया और अपना आचरण नेक रखा और एकचित होकर इबराहीम के तरीक़े का अनुसरण किया, उस इबराहीम के तरीक़े का जिसे अल्लाह ने अपना मित्र बना लिया था!" (क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-125)

हज़रत इबराहीम (अलैहि०) हज़रत नूह (अलैहि०) के बाद आनेवाले दूसरे दृढ़निश्चयी पैग़म्बर हुए हैं। उनके बाद आनेवाले सभी पैग़म्बर उनकी औलाद में से हुए। यही वजह थी कि उनको अबुल-अंबिया (पैग़म्बरों के पिता) भी कहा जाता है।

क़ुरआन ने उनको एक ख़ास उपाधि 'ख़लीलुल्लाह' (अल्लाह का दोस्त) दी है।

"जिसे अल्लाह ने अपना मित्र बना लिया था।"

(क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-125)

इबराहीम (अलैहि०) के आज्ञापालन और समर्पण को क़ुरआन यूँ बयान करता है—

"उसका हाल यह था कि जब उसके रब ने उससे कहा, 'मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो जा,' तो उसने तुरन्त कहा, 'मैं जगत के स्वामी का मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो गया।' इसी तरीक़े पर चलने का आदेश उसने अपनी औलाद को दिया था और इसी की वसीयत याक़ूब अपनी सन्तान को कर गया था। उसने कहा था कि 'मेरे

बच्चो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही धर्म पसन्द किया है। अतः मरते समय तक मुस्लिम (आज्ञाकारी) ही रहना।' फिर क्या तुम उस समय मौजूद थे जब याक़ूब इस संसार से विदा हो रहा था? उसने मरते समय अपने बेटों से पूछा, 'बच्चो! मेरे पीछे तुम किसकी बन्दगी करोगे?' उन सबने उत्तर दिया, 'हम उसी एक खुदा की बन्दगी करेंगे जिसे आपने और आपके पूर्वज इबराहीम, इसमाईल और इसहाक़ ने ख़ुदा माना है और हम उसी के मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं। वे कुछ लोग थे, जो जा चुके। जो कुछ उन्होंने कमाया, वह उनके लिए है और जो कुछ तुम कमाओगे, वह तुम्हारे लिए है। तुमसे यह न पूछा जाएगा कि वे क्या करते थे।"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयतें-131 से 134)

"वास्तविकता यह है कि इबराहीम अपनी ज़ात से एक पूरा समुदाय (उम्मत) था, अल्लाह का आज्ञाकारी और एकाग्र। वह कभी मुशरिक (बहुदेववादी) न था। अल्लाह के कृपादानों का आभार प्रकट करनेवाला था। अल्लाह ने उसे चुन लिया और सीधा मार्ग दिखा दिया। दुनिया में उसको भलाई दी और आख़िरत में वह यक़ीनन अच्छे लोगों में से होगा। फिर हमने तुम्हारी ओर यह प्रकाशना की कि एकाग्र होकर इबराहीम के पथ पर चलो और वह मुशरिकों (बहुदेववादियों) में से न था।"

(क़ुरआन, सूरा-16 अन-नह्ल, आयतें-120 से 123)

अल्लाह से सीधे रास्ते को पा लेने के बाद यह बात बिलकुल स्वाभाविक थी कि हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) इस रास्ते पर दूसरों को बुलाएँ। उन्होंने इसकी शुरुआत अपने क़रीबी रिश्तेदारों से की। सबसे पहले उन्होंने अपने पिता को बहुत मुहब्बत और करुणा से सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाया। उन्होंने इस बात का ख़ास ख़याल रखा कि उनके बाप का आत्म-सम्मान प्रभावित न हो। और वह ख़ुद भी अपनी पूरी बात बेहतरीन तरीक़े से कर सकें—

"और इस किताब में इबराहीम का क़िस्सा बयान करो। बेशक वह एक सच्चा इनसान और एक नबी था। (इन्हें ज़रा उस

अवसर की याद दिलाओ) जबकि उसने अपने बाप से कहा कि 'पिता जी! आप क्यों उन चीज़ों की उपासना करते हैं जो न सुनती हैं, न देखती हैं और न आपका कोई काम बना सकती हैं? पिता जी! मेरे पास एक ऐसा ज्ञान आया है जो आपके पास नहीं आया, आप मेरे पीछे चलें, मैं आपको सीधा मार्ग बताऊँगा। पिता जी! आप शैतान की बन्दगी न करें, शैतान तो करुणामय (ईश्वर) का अवज्ञाकारी है। पिता जी! मुझे डर है कि कहीं आप करुणामय (ईश्वर) के अज़ाब में न ग्रस्त हो जाएँ और शैतान के साथी बनकर रहें।' बाप ने कहा, 'इबराहीम! क्या तू मेरे उपास्यों से फिर गया है? अगर तू बाज़ न आया तो मैं तुझे संगसार (पत्थर मारकर काम तमाम) कर दूँगा। बस तू हमेशा के लिए मुझसे अलग हो जा।' इबराहीम ने कहा, 'सलाम है आपको! मैं अपने रब से दुआ करूँगा कि आपको माफ़ कर दे, मेरा रब मुझपर बड़ा मेहरबान है। मैं आप लोगों को भी छोड़ता हूँ और उन हस्तियों को भी जिन्हें आप लोग अल्लाह को छोड़कर पुकारा करते हैं। मैं तो अपने रब ही को पुकारूँगा, उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकारकर नामुराद न रहूँगा'!" (क़ुरआन, सूरा-19 मरयम, आयतें-41 से 48)

हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) का अपनी क़ौम को आह्वान बिलकुल साफ़ और बिना किसी लाग-लपेट के था। अल्लाह के दूसरे सारे पैग़म्बरों और नबियों की तरह इबराहीम (अलैहि॰) को भी इस रास्ते में उन लोगों के विरोध का सामना करना पड़ा जो अपने बाप-दादाओं (पूर्वजों) का अंधानुकरण करते थे–

"उसकी क़ौम उससे झगड़ने लगी तो उसने क़ौम से कहा, 'क्या तुम लोग अल्लाह के मामले में मुझसे झगड़ते हो? हालाँकि उसने मुझे सही मार्ग दिखा दिया है। और मैं तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों से नहीं डरता, हाँ अगर मेरा रब कुछ चाहे तो वह ज़रूर हो सकता है, मेरे रब का ज्ञान हर चीज़ पर छाया हुआ है, फिर क्या तुम होश में न आओगे? और आख़िर मैं तुम्हारे ठहराए हुए

साझीदारों से कैसे डरूँ जबकि तुम अल्लाह के साथ उन चीज़ों को ईश्वरत्व में साझीदार बनाते हुए नहीं डरते जिनके लिए उसने तुमपर कोई प्रमाण अवतरित नहीं किया है? हम दोनों दलों में से कौन अधिक निडरता व निश्चिन्तता का अधिकारी है? बताओ अगर तुम्हें कुछ ज्ञान है। वास्तव में तो निश्चिन्तता (अम्न) उन्हीं के लिए है और सही मार्ग पर वही हैं जो ईमान लाए और जिन्होंने अपने ईमान को ज़ुल्म के साथ मिलाया नहीं'।"

(क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयतें-80 से 82)

हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने उस समय के शासक को भी सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाया, लेकिन दूसरे राष्ट्राध्यक्षों की तरह वह घमण्ड और अहंकार में अन्धा हो रहा था। वह हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) के बुलावे को मज़ाक़ में उड़ाने की कोशिश में बुरी तरह अपमानित हुआ—

"क्या तुमने उस आदमी के हाल पर विचार नहीं किया, जिसने इबराहीम से झगड़ा किया था? झगड़ा इस बात पर कि इबराहीम का रब कौन है, और इस कारण कि उस व्यक्ति को अल्लाह ने हुकूमत दे रखी थी। जब इबराहीम ने कहा कि 'मेरा रब वह है जिसके अधिकार में ज़िन्दगी और मौत है।' तो उसने जवाब दिया, 'ज़िन्दगी और मौत मेरे अधिकार में है।' इबराहीम ने कहा, 'अच्छा, अल्लाह सूरज को पूरब से निकालता है, तू तनिक उसे पश्चिम से निकाल ला।' यह सुनकर वह सत्य-विरोधी चकित रह गया, और अल्लाह ज़ालिमों को सीधा रास्ता नहीं दिखाया करता।" (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-258)

हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) ने पैग़म्बर की हैसियत से अपनी ज़िम्मेदारी पूरी की। उन्होंने अपने रिश्तेदारों, आम लोगों और तत्कालीन शासक को सीधे रास्ते की तरफ़ दावत देकर यह दायित्व पूरा किया। अल्लाह के पैग़म्बरों की सबसे अहम ज़िम्मेदारी यह थी कि वे साफ़-साफ़ और स्पष्ट शब्दों में अल्लाह के पैग़ाम को लोगों तक पहुँचाएँ और उनको उसे स्वीकार कराने की कोशिश करें। अगर लोग अब भी इस पैग़ाम को मानने से इनकार करते हैं

तो इसके उत्तरदायी वे स्वयं होंगे, पैग़म्बरों ने तो अपना काम पूरा कर दिया। पैग़म्बरों ने बिना लाग-लपेट के अल्लाह के पैग़ाम को पहुँचाकर उस ज़िम्मेदारी को पूरा किया जो अल्लाह ने उनपर डाली थी।

> ''याद करो वह समय जब इबराहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा था कि तुम जिनकी बन्दगी करते हो मेरा उनसे कोई सम्बन्ध नहीं। मेरा सम्बन्ध सिर्फ़ उससे है जिसने मुझे पैदा किया, वही मुझे राह दिखाएगा। और इबराहीम यही शब्द अपने पीछे अपनी औलाद में छोड़ गया, ताकि वे (अल्लाह की ओर) लौटें।''
>
> (क़ुरआन, सूरा-43 अज़-ज़ुख़रुफ़, आयतें-26 से 28)

# 3:5 पैग़म्बर मूसा (अलैहिस्सलाम)

"....हमने मूसा से इस तरह बातचीत की जिस तरह बातचीत की जाती है।" (क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-164)

हज़रत मूसा (अलैहि०) वे प्रतिष्ठित पैग़म्बर हैं, जिनका क़ुरआन में सबसे ज़्यादा उल्लेख हुआ है। उनका नाम क़ुरआन में 35 सूरतों में 136 बार आया है। पैग़म्बरों में वे इकलौते हैं जिनसे अल्लाह ने सीधे-सीधे बात की।

क़ुरआन में विभिन्न जगहों पर हज़रत मूसा (अलैहि०) की ज़िन्दगी के बारे में चर्चा की गई है। सूरा-28 अल-क़सस में उनकी पूरी ज़िन्दगी का सार-संक्षेप बेहतरीन अन्दाज़ में पेश किया गया है—

"हम मूसा और फ़िरऔन का कुछ हाल ठीक-ठीक तुम्हें सुनाते हैं ऐसे लोगों के लाभ के लिए जो ईमान लाएँ। वास्तविकता यह है कि फ़िरऔन ने ज़मीन में सिर उठाया और उसके निवासियों को गरोहों में बाँट दिया। उनमें से एक गरोह को वह अपमानित करता था, उसके लड़कों को क़त्ल करता और उसकी लड़कियों को जीता रहने देता था। वास्तव में वह बिगाड़ पैदा करनेवाले लोगों में से था। और हम यह इरादा रखते थे कि दया करें उन लोगों पर जो ज़मीन में अपमानित करके रखे गए थे और उन्हें पेशवा बना दें और उन्हीं को वारिस बनाएँ और ज़मीन में उनको प्रभुत्व प्रदान करें और उनसे फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाओं को वही कुछ दिखलाएँ जिसका उन्हें डर था। हमने मूसा की माँ को इशारा किया कि इसको दूध पिला, फिर जब तुझे उसकी जान का ख़तरा हो तो उसे दरिया में डाल दे और कुछ डर और चिन्ता न कर, हम उसे तेरे ही पास ले आएँगे और उसे पैग़म्बरों में शामिल करेंगे। आख़िरकार फ़िरऔन के घरवालों ने उसे (दरिया से) निकाल लिया

ताकि वह उनका दुश्मन और उनके लिए दुख का कारण बने, निस्सन्देह फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाएँ (अपने उपायों में) बड़ी कार्य-भ्रष्ट थीं। फ़िरऔन की बीवी ने (उससे) कहा कि 'यह मेरे और तेरे लिए आँखों की ठण्डक है, इसे क़त्ल न करो, आश्चर्य नहीं कि यह हमारे लिए लाभदायक सिद्ध हो या हम इसे बेटा ही बना लें।' और वे परिणाम से बेख़बर थे। उधर मूसा की माँ का दिल उड़ा जा रहा था। वह उसका भेद खोल देती अगर हम उसकी ढारस न बँधा देते ताकि वह (हमारे वादे पर) ईमान लानेवालों में से हो। उसने बच्चे की बहन से कहा, 'इसके पीछे-पीछे जा।' अतएव वह अलग से उसको इस तरह देखती रही कि (दुश्मनों को) इसका पता न चला। और हमने बच्चे पर पहले ही दूध पिलानेवालियों की छातियाँ हराम कर रखी थीं। (यह हालत देखकर) उस लड़की ने उनसे कहा कि 'मैं तुम्हें ऐसे घर का पता बताऊँ जिसके लोग इसके पालन-पोषण का ज़िम्मा लें और इसे भली-भाँति रखें?' इस तरह हम मूसा को उसकी माँ के पास पलटा लाए ताकि उसकी आँखें ठण्डी हों और वह शोकाकुल न हो और जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा था, मगर ज़्यादातर लोग इस बात को नहीं जानते।

जब मूसा अपनी पूरी जवानी को पहुँच गया और उसका विकास पूरा हो गया तो हमने उसे निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया, हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। (एक दिन) वह शहर में ऐसे समय दाख़िल हुआ जबकि शहरवाले बेख़बर सो रहे थे। वहाँ उसने देखा कि दो आदमी लड़ रहे हैं। एक उसकी अपनी क़ौम का था और दूसरा उसकी दुश्मन क़ौम से सम्बन्ध रखता था। उसकी क़ौम के आदमी ने दुश्मन क़ौम के व्यक्ति के विरुद्ध उसे सहायता के लिए पुकारा। मूसा ने उसको एक घूँसा मारा और उस आदमी ने वहीं दम तोड़ दिया। (यह हरकत हो जाते ही) मूसा ने कहा कि यह शैतान की कार्यवाई है, वह बड़ा दुश्मन और खुला

पथभ्रष्ट करनेवाला है। फिर वह कहने लगा, 'ऐ मेरे रब! मैंने अपने-आपपर ज़ुल्म कर डाला, मुझे माफ़ कर दे।' अतएव अल्लाह ने उसे माफ़ कर दिया, वह माफ़ करनेवाला, अत्यन्त दयावान है। मूसा ने प्रतिज्ञा की कि ऐ मेरे रब! यह उपकार जो तूने मुझपर किया है इसके बाद अब मैं कभी अपराधियों का सहायक न बनूँगा। दूसरे दिन वह सुबह-सवेरे डरता और हर ओर से ख़तरा भाँपता हुआ शहर में जा रहा था कि अचानक क्या देखता है कि वही व्यक्ति जिसने कल उसे मदद के लिए पुकारा था, आज फिर उसे पुकार रहा है। मूसा ने कहा कि तू तो बड़ा ही बहका हुआ आदमी है। फिर जब मूसा ने इरादा किया कि दुश्मन क़ौम के आदमी पर हाथ डाले तो वह (फ़रयादी) पुकार उठा, 'ऐ मूसा! क्या आज तू मुझे उसी तरह क़त्ल करने लगा है जिस तरह कल एक व्यक्ति को क़त्ल कर चुका है? तू इस देश में बहुत ही निर्दयी, अत्याचारी बनकर रहना चाहता है, सुधार करना नहीं चाहता।' इसके बाद एक आदमी शहर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया और बोला, 'मूसा! सरदारों में तेरे क़त्ल के लिए विचार हो रहे हैं, यहाँ से निकल जा, मैं तेरा हितैषी हूँ।' यह ख़बर सुनते ही मूसा डरता और सहमता निकल खड़ा हुआ और उसने दुआ की कि 'ऐ मेरे रब! मुझे ज़ालिमों से बचा।'

(मिस्र से निकलकर) जब मूसा ने मदयन का रुख़ किया तो उसने कहा, 'उम्मीद है मेरा रब मुझे ठीक रास्ते पर डाल देगा!' और जब वह मदयन के कुएँ पर पहुँचा तो उसने देखा कि बहुत-से लोग अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं और उनसे अलग एक ओर दो औरतें अपने जानवरों को रोक रही हैं। मूसा ने उन औरतों से पूछा, 'तुम्हें क्या परेशानी है?' उन्होंने कहा कि 'हम अपने जानवरों को पानी नहीं पिला सकतीं जब तक ये चरवाहे अपने जानवर न निकाल ले जाएँ, और हमारे बाप एक बहुत बूढ़े आदमी हैं।' यह सुनकर मूसा ने उनके जानवरों को पानी पिला दिया, फिर

एक छाया के स्थान पर जा बैठा और बोला, 'पालनहार! जो भलाई भी तू मुझपर उतार दे मैं उसका मुहताज हूँ!' (कुछ देर न हुई थी कि) उन दोनों औरतों में से एक शर्म व लज्जा के साथ चलती हुई उसके पास आई और कहने लगी, 'मेरे बाप आपको बुला रहे हैं ताकि आपने हमारे लिए जानवरों को जो पानी पिलाया है उसका बदला आपको दें।' मूसा जब उसके पास पहुँचा और अपना सारा क़िस्सा उसे सुनाया तो उसने कहा, 'कुछ भय न करो, अब तुम ज़ालिम लोगों से बच निकले हो।' उन दोनों औरतों में से एक ने अपने बाप से कहा, 'अब्बा जान! इस व्यक्ति को नौकर रख लीजिए, सबसे अच्छा आदमी जिसे आप काम के लिए रखें वही हो सकता है जो बलवान और अमानतदार हो।' उसके बाप ने मूसा से कहा, 'मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो बेटियों में से एक की शादी तुम्हारे साथ कर दूँ, शर्त यह है कि तुम आठ साल तक मेरे यहाँ नौकरी करो, और अगर दस साल पूरे कर दो तो यह तुम्हारी इच्छा है। मैं तुमपर सख़्ती नहीं करना चाहता। तुम अगर अल्लाह ने चाहा तो मुझे नेक आदमी पाओगे।' मूसा ने जवाब दिया, 'यह बात मेरे और आपके बीच तय पा चुकी। इन दोनों अवधि में से जो मैं पूरी कर दूँ, उसके बाद फिर कोई ज़्यादती मुझपर न हो, और जो कुछ समझौता हम कर रहे हैं अल्लाह उसपर वकील (साक्षी) है।' जब मूसा ने अवधि पूरी कर दी और वह अपने बाल-बच्चों को लेकर चला तो तूर की ओर उसको एक आग दिखाई दी। उसने अपने घरवालों से कहा, 'ठहरो! मैंने एक आग देखी है, शायद मैं वहाँ से कोई ख़बर ले आऊँ या उस आग से कोई अंगारा ही उठा लाऊँ जिससे तुम ताप सको!' वहाँ पहुँचा तो घाटी के दाहिने किनारे पर शुभ क्षेत्र में एक पेड़ की ओर से पुकारा गया कि 'ऐ मूसा! मैं ही अल्लाह हूँ, सारे जहानवालों का मालिक।' और (आदेश दिया गया कि) 'फेंक दे अपनी लाठी।' ज्यों ही कि मूसा ने देखा कि वह लाठी साँप की तरह बल खा रही

है तो वह पीठ फेरकर भागा और उसने मुड़कर भी न देखा। (कहा गया) 'मूसा! पलट आ और भय न खा! तू बिलकुल सुरक्षित है। अपना हाथ गरेबान में डाल, चमकता हुआ निकलेगा बिना किसी ख़राबी के। और भय से बचने के लिए अपनी भुजा भींच ले। ये दो खुली निशानियाँ हैं तेरे रब की ओर से फ़िरऔन और उसके दरबारियों के सामने प्रस्तुत करने के लिए, वे बड़े अवज्ञाकारी लोग हैं।'

मूसा ने निवेदन किया, 'मेरे स्वामी! मैं तो उनके एक आदमी को क़त्ल कर चुका हूँ, डरता हूँ कि वे मुझे मार डालेंगे, और मेरा भाई हारून मुझसे अच्छा वक्ता है, उसे मेरे साथ सहायक के रूप में भेज ताकि वह मेरा समर्थन करे, मुझे आशंका है कि वे लोग मुझे झुठलाएँगे।' कहा, 'हम तेरे भाई के द्वारा तेरा हाथ मज़बूत करेंगे और तुम दोनों को ऐसा प्रताप प्रदान करेंगे कि वे तुम्हारा कुछ न बिगाड़ सकेंगे। हमारी निशानियों के बल से तुम और तुम्हारे अनुयायी ही ऊपर रहेंगे।' फिर जब मूसा उन लोगों के पास हमारी खुली-खुली निशानियाँ लेकर पहुँचा तो उन्होंने कहा कि 'यह कुछ नहीं है मगर बनावटी जादू। और ये बातें तो हमने अपने बाप-दादा के समय में कभी सुनी ही नहीं।'

मूसा ने जवाब दिया, 'मेरा रब उस व्यक्ति के हाल से अच्छी तरह परिचित है जो उसकी ओर से मार्गदर्शन लेकर आया है और वही अच्छी तरह जानता है कि अन्तिम परिणाम किसका अच्छा होना है, सत्य यह है कि ज़ालिम कभी सफल नहीं होते।' और फ़िरऔन ने कहा, 'ऐ दरबारवालो! मैं तो अपने सिवा तुम्हारे किसी रब को नहीं जानता। हामान (फ़िरऔन का मंत्री)! तनिक ईंटें पकवाकर मेरे लिए एक ऊँचा भवन तो बनवा! शायद कि उसपर चढ़कर मैं मूसा के रब को देख सकूँ! मैं तो इसे झूठा समझता हूँ।' उसने और उसकी सेनाओं ने ज़मीन में बिना किसी हक़ के अपनी बड़ाई का घमण्ड किया और समझे कि उन्हें कभी हमारी ओर पलटना

नहीं है। आख़िरकार हमने उसे और उसकी सेनाओं को पकड़ा और समुद्र में फेंक दिया। अब देख लो कि उन ज़ालिमों का कैसा परिणाम हुआ! हमने उन्हें नरक की ओर निमंत्रण देनेवाला पेशवा बना दिया और क़ियामत के दिन वे कहीं से कोई सहायता न पा सकेंगे। हमने इस दुनिया में उनके पीछे लानत (फिटकार) लगा दी और क़ियामत के दिन वे बड़ी बदहाली में ग्रस्त होंगे। पिछली नस्लों को विनष्ट करने के बाद हमने मूसा को किताब प्रदान की, लोगों के लिए अन्तर्दृष्टियों की सामग्री बनाकर, मार्गदर्शन और दयालुता बनाकर, ताकि शायद लोग शिक्षा ग्रहण करें!"

(क़ुरआन, सूरा-28 अल-क़सस, आयतें-3 से 43)

रहे वे लोग जिनपर हज़रत मूसा (अलैहि॰) के बाद उनकी दावत और पैग़ाम को फैलाने की ज़िम्मेदारी दी गई थी, क़ुरआन ने उनकी कमियाँ और ख़राबियाँ साफ़-साफ़ शब्दों में बयान की हैं। क़ुरआन ने इतिहास के हवाले से उनकी त्रुटियों को स्पष्ट किया है और उनको आमंत्रित किया है कि अपनी ग़लतियों को सुधारें और सीधे रास्ते पर लौटें।

"ऐ इसराईल की सन्तान! तनिक याद करो मेरी उस नेमत को जो मेरी ओर से तुमपर हुई। मेरे साथ तुम्हारी जो प्रतिज्ञा थी, उसे तुम पूरा करो तो मेरी जो प्रतिज्ञा तुम्हारे साथ थी, उसे मैं पूरा करूँ, और मुझ ही से तुम डरो। और मैंने जो किताब भेजी है, उसपर ईमान लाओ। यह उस किताब की पुष्टि में है जो तुम्हारे पास पहले से मौजूद थी, अतः सबसे पहले तुम ही उसके इनकार करनेवाले न बनो। थोड़े मूल्य पर मेरी आयतों को न बेच डालो और मेरे प्रकोप से बचो। असत्य का रंग चढ़ाकर सत्य को संदिग्ध न बनाओ और न जानते-बूझते सत्य को छिपाने का प्रयास करो।" (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयतें-40 से 42)

# 3:6 पैग़म्बर ईसा (अलैहि०)

"अल्लाह के नज़दीक ईसा की मिसाल आदम जैसी है कि अल्लाह ने उसे मिट्टी से पैदा किया और आदेश दिया कि हो जा और वह हो गया। यह मूल तथ्य है जो तुम्हारे रब की ओर से बताया जा रहा है, और तुम उन लोगों में सम्मिलित न हो जो इसमें सन्देह करते हैं।" (क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयतेंः 59-60)

हज़रत ईसा (अलैहि०) बनी-इसराईल (इसराईल की औलादों) के सिलसिले के आख़िरी नबी हैं। यूँ तो हज़रत ईसा (अलैहि०) से बहुत-से चमत्कार जुड़े हैं, लेकिन सबसे अहम चमत्कार उनकी माँ मरयम का बिना किसी मर्द के सम्पर्क के गर्भ ठहरना था। क़ुरआन स्पष्ट रूप से कहता है कि उनका जन्म हज़रत आदम (अलैहि०) की तरह ही एक चमत्कार था। हज़रत आदम (अलैहि०) को बिना किसी माँ और बाप के अल्लाह ने पैदा किया था।

हज़रत ईसा (अलैहि०) की चमत्कारिक पैदाइश यह स्पष्ट करती है कि अल्लाह हर तरह से पैदा करने का अधिकार रखता है। उसने हज़रत आदम (अलैहि०) को बिना माँ-बाप के, बीबी हव्वा को बिना किसी माँ के और हज़रत ईसा (अलैहि०) को बिना बाप के पैदा किया।

हज़रत ईसा (अलैहि०) की पैदाइश (जन्म) का ज़िक्र इस सूरा में जिसका नाम उनकी माँ मरयम पर है, निम्नलिखित है—

"और ऐ नबी! इस किताब में मरयम का हाल बयान करो, जबकि वह अपने लोगों से अलग होकर पूरब की ओर एकान्तवासी हो गई थी और परदा डालकर उनसे छिप बैठी थी। इस हालत में हमने उसके पास अपनी एक आत्मा को (अर्थात् फ़रिश्ते को) भेजा और वह उसके सामने एक पूरे इनसान के रूप में प्रकट हो

गया। मरयम सहसा बोल उठी कि 'अगर तू कोई ईश्वर से डरनेवाला आदमी है तो मैं तुझसे करुणामय ईश्वर की पनाह माँगती हूँ।' उसने कहा, 'मैं तो तेरे रब का भेजा हुआ हूँ और इसलिए भेजा गया हूँ कि तुझे एक पवित्र लड़का दूँ।' मरयम ने कहा, 'मेरे यहाँ कैसे लड़का होगा जबकि मुझे किसी मर्द ने छुआ तक नहीं है और मैं कोई चरित्रहीन औरत नहीं हूँ!' फ़रिश्ते ने कहा, 'ऐसा ही होगा, तेरा रब कहता है कि ऐसा करना मेरे लिए बहुत आसान है, और हम यह इसलिए करेंगे कि उस लड़के को लोगों के लिए एक निशानी बनाएँ और अपनी ओर से एक दयालुता। और यह काम होकर रहना है।' मरयम को उस बच्चे का गर्भ रह गया और वह उस गर्भ को लिए हुए एक दूर के स्थान पर चली गई। फिर प्रसव-पीड़ा ने उसे एक खजूर के पेड़ के नीचे पहुँचा दिया। वह कहने लगी, 'क्या ही अच्छा होता कि मैं इससे पहले ही मर जाती और मेरा नामो-निशान न रहता।' फ़रिश्ते ने पाँयती से उसको पुकारकर कहा, 'ग़म न कर! तेरे रब ने तेरे नीचे एक स्रोत बहा दिया है और तू तनिक इस पेड़ के तने को हिला, तेरे ऊपर रस-भरी ताज़ा खजूरें टपक पड़ेंगी। अतः तू खा और पी और अपनी आँखें ठण्डी कर! फिर अगर कोई आदमी तुझे दिखाई दे तो उससे कह दे कि मैंने करुणामय (ईश्वर) के लिए रोज़े (उपवास) की मन्नत मानी है, इसलिए आज मैं किसी से न बोलूँगी।'

फिर वह उस बच्चे को लिए हुए अपनी क़ौम में आई। लोग कहने लगे, 'ऐ मरयम! यह तो तूने बड़ा पाप कर डाला! ऐ हारून की बहन! न तेरा बाप कोई बुरा आदमी था और न तेरी माँ ही कोई चरित्रहीन औरत थी!' मरयम ने बच्चे की ओर इशारा कर दिया। लोगों ने कहा, 'हम इससे क्या बात करें जो पालने में पड़ा हुआ एक बच्चा है?' बच्चा बोल उठा, 'मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझे किताब दी, और नबी बनाया, और बरकतवाला किया जहाँ

भी मैं रहूँ। नमाज़ और ज़कात की पाबन्दी का हुक्म दिया जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ, और अपनी माँ का हक़ अदा करनेवाला बनाया, और मुझको ज़ालिम और अत्याचारी नहीं बनाया। सलाम है मुझपर जबकि मैं पैदा हुआ और जबकि मैं मरूँ और जबकि ज़िन्दा करके उठाया जाऊँ!' यह है मरयम का बेटा ईसा और यह है उसके बारे में वह सच्ची बात जिसमें लोग शक कर रहे हैं। अल्लाह का यह काम नहीं कि वह किसी को अपना बेटा बनाए। वह पवित्र है। वह जब किसी बात का निर्णय करता है तो कहता है कि हो जा, और बस वह हो जाती है। (और ईसा ने कहा था कि) 'अल्लाह मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी, अतः तुम उसी की बन्दगी करो, यही सीधा मार्ग है'।"

(क़ुरआन, सूरा-19 मरयम, आयतें-16 से 36)

अपनी पूरी ज़िन्दगी में हज़रत ईसा (अलैहि॰) से अनगिनत चमत्कार हुए हैं, लेकिन उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिया है कि सारे चमत्कार प्रतापवान अल्लाह की तरफ़ से थे—

".....(और जब वह रसूल के रूप में इसराईलियों के पास आया तो उसने कहा) 'मैं तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे पास निशानी लेकर आया हूँ। मैं तुम्हारे सामने मिट्टी से पक्षी के रूप की एक आकृति बनाता हूँ और उसमें फूँक मारता हूँ; वह अल्लाह के आदेश से पक्षी बन जाता है। मैं अल्लाह के हुक्म से जन्मान्ध और कोढ़ी को अच्छा करता हूँ और उसकी अनुज्ञा से मुर्दे को जीवित करता हूँ। मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम क्या खाते हो और क्या अपने घरों में इकट्ठा करके रखते हो। इसमें तुम्हारे लिए काफ़ी निशानी है अगर तुम ईमानवाले हो। और मैं उस शिक्षा और पथ-प्रदर्शन की पुष्टि करनेवाला बनकर आया हूँ जो तौरात में से इस समय मेरे ज़माने में मौजूद है। और इसलिए आया हूँ कि तुम्हारे लिए कुछ उन चीज़ों को वैध (हलाल) कर दूँ जो तुम्हारे लिए अवैध (हराम) कर दी गई हैं। देखो, मैं तुम्हारे रब की ओर

से तुम्हारे पास निशानी लेकर आया हूँ, अतः अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो। अल्लाह मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी, अतः तुम उसी की बन्दगी अपनाओ, यही सीधा मार्ग है'।"

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयतें-49 से 51)

क़ुरआन इस बात का स्पष्ट रूप से खण्डन करता है कि हज़रत ईसा (अलैहि॰) को सूली पर चढ़ाया गया था। क़ुरआन के मुताबिक़ अल्लाह ने अपने नबी को सूली से बचा लिया था और उनको अपनी तरफ़ उठा लिया।

"फिर अपने इनकार में ये इतने बढ़े कि मरयम पर बड़ा लांछन लगाया, और ख़ुद कहा कि 'हमने मसीह ईसा, मरयम के बेटे, अल्लाह के रसूल का क़त्ल कर दिया है'—हालाँकि वास्तव में उन्होंने न उसकी हत्या की, न सूली पर चढ़ाया बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध कर दिया गया। और जिन लोगों ने इस विषय में मतभेद किया है वे भी वास्तव में शक में पड़े हुए हैं, उनके पास इस मामले में कोई ज्ञान नहीं है, सिर्फ़ अटकल पर चल रहे हैं। उन्होंने मसीह को, यक़ीनन क़त्ल नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने उसको अपनी ओर उठा लिया, अल्लाह ज़बरदस्त ताक़त रखनेवाला और तत्वदर्शी है।"

(क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयतें-156 से 158)

क़ुरआन हज़रत ईसा (अलैहि॰) को सुदृढ़ रहनेवाले नबियों की सूची में रखता है। लेकिन इसी के साथ-साथ यह एलान भी करता है कि अपनी पूरी ज़िन्दगी में हज़रत ईसा (अलैहि॰) ने कभी भी न तो अपने लिए और न अपनी माँ मरयम के लिए ईश्वरत्व में साझीदार होने का दावा किया। क़ुरआन कहता है कि जब हिसाब के दिन हज़रत ईसा (अलैहि॰) से इस बारे में पूछा जाएगा, वह इस बात का साफ़ इनकार करेंगे, जैसा कि उनके दर्जे के पैग़म्बर को करना चाहिए—

"सारांश यह कि जब (ये एहसान याद दिलाकर) अल्लाह कहेगा कि 'ऐ मरयम के बेटे ईसा! क्या तूने लोगों से कहा था कि अल्लाह के सिवा मुझे और मेरी माँ को भी ईश्वर बना लो?' तो

वह जवाब में कहेगा कि 'पाक है अल्लाह! मेरा यह काम न था कि वह बात कहता जिसके कहने का मुझे अधिकार न था, अगर मैंने ऐसी बात कही होती तो आपको ज़रूर मालूम होता, आप जानते हैं जो कुछ मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता जो कुछ आपके दिल में है, आप तो सारी छिपी हक़ीक़तों (सत्य) के ज्ञाता हैं। मैंने उनसे इसके सिवा कुछ नहीं कहा जिसका आपने आदेश दिया था, यह कि अल्लाह की बन्दगी करो जो मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी। मैं उसी समय तक उनका निगराँ था जब तक मैं उनके बीच था। जब आपने मुझे वापस बुला लिया तो आप उनपर निगराँ थे और आप तो सारी ही चीज़ों पर निगराँ हैं'।"

(क़ुरआन, सूरा-5 अल-माइदा, आयतें : 116-117)

न केवल हज़रत ईसा (अलैहि॰) ने दूसरे पैग़म्बरों की तरह लोगों को एक वास्तविक स्रष्टा की बन्दगी की तरफ़ बुलाया और अपने इनसानी वुजूद (अस्तित्व) के बारे में स्पष्ट रूप से बताया, बल्कि उन्होंने आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के आने की ख़ुशख़बरी भी दी। क़ुरआन कहता है—

"और याद करो मरयम के बेटे ईसा की वह बात जो उसने कही थी कि 'ऐ इसराईल के बेटो! मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ, पुष्टि करनेवाला हूँ उस तौरात की जो मुझसे पहले आई हुई मौजूद है, और ख़ुशख़बरी देनेवाला हूँ एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, जिसका नाम अहमद होगा।' मगर जब वह उनके पास खुली-खुली निशानियाँ लेकर आया तो उन्होंने कहा, 'यह तो खुला धोखा है!' अब भला उस व्यक्ति से बड़ा ज़ालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा आरोप लगाए जबकि उसे इस्लाम (अल्लाह के आज्ञापालन) का निमंत्रण दिया जा रहा हो? ऐसे ज़ालिमों को अल्लाह राह नहीं दिखाया करता।"

(क़ुरआन, सूरा-61 अस-सफ़्फ़, आयतें : 6-7)

# 3:7 पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

"ऐ नबी! हमने तो तुमको समस्त दुनियावालों के लिए रहमत बनाकर भेजा है।" (क़ुरआन, सूरा-21 अल-अंबिया, आयत-107)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह की तरफ़ से भेजे गए पैग़म्बरों में आख़िरी पैगम्बर हैं। इसलिए उनके द्वारा भेजा गया हिदायत का पैग़ाम पूरी इनसानियत और सभी ज़मानों के लिए है। उनको सबसे बड़ा चमत्कार (मोजिज़ा) जो दिया गया वह क़ुरआन है। अल्लाह ने जिबरील (अलैहि॰) के ज़रिए उनपर क़ुरआन उतारा। जब हज़रत जिबरील (अलैहि॰) पहली बार उनके पास तशरीफ़ लाए उस समय वे वह्य (प्रकाशना) के इन आयतों के साथ आए थे—

"पढ़ो (ऐ नबी!), अपने रब के नाम के साथ जिसने पैदा किया। जमे हुए ख़ून के एक लोथड़े से इनसान की रचना की। पढ़ो, और तुम्हारा रब बड़ा उदार है। जिसने क़लम के द्वारा ज्ञान की शिक्षा दी। इनसान को वह ज्ञान दिया जिसे वह न जानता था।"
(क़ुरआन, सूरा-96 अल-अलक़, आयतें-1 से 5)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को इस पैग़ाम को पूरी इनसानियत (मानवता) तक पहुँचाना था। यह बात उनपर जल्द स्पष्ट हो गई कि यह ज़िम्मेदारी अति महत्वपूर्ण है। न सिर्फ़ उनको इस ज़िम्मेदारी की महत्ता का अन्दाज़ा था, बल्कि उनको अपनी मानवीय हदों का, इनसान की हैसियत से, अन्दाज़ा था। वे अपने चारों तरफ़ के ख़राब माहौल को देख-देखकर परेशान थे। लोग अल्लाह के पैग़ाम को अपनाने के लिए तैयार नहीं थे। वे हक़ (सत्य) का इनकार करते थे और विनाश की ओर बिना सोचे-समझे, दौड़े जा रहे थे। इनसानियत से मुहब्बत और ज़िम्मेदारी के एहसास की वजह से कभी-कभी

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अपने-आपको इस हालत का ज़िम्मेदार भी समझने लगते। ऐसे वक़्त में अल्लाह ने उनकी हिम्मत बढ़ाई और बताया कि वे तो सिर्फ़ पैग़म्बर (सन्देष्टा) हैं—

"(इससे बढ़कर निशानी क्या होगी कि) हमने तुमको सच्चे ज्ञान के साथ ख़ुशख़बरी देनेवाला और डरानेवाला बनाकर भेजा। अब जो लोग नरक से सम्बन्ध जोड़ चुके हैं, उनकी ओर से तुम उत्तरदायी नहीं हो।" (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-119)

"रसूल की ज़िम्मेदारी तो सिर्फ़ सन्देश पहुँचा देने की है, आगे तुम्हारी खुली और छिपी हालतों का जाननेवाला अल्लाह है।"
(क़ुरआन, सूरा-5 अल-माइदा, आयत-99)

"ऐ नबी! शायद तुम इस ग़म में अपनी जान खो दोगे कि ये लोग ईमान नहीं लाते! हम चाहें तो आसमान से ऐसी निशानी उतार सकते हैं कि इनकी गरदनें उसके आगे झुक जाएँ।"
(क़ुरआन, सूरा-26 अश-शोअरा, आयतें: 3-4)

"ऐ नबी! हमने तुम्हें भेजा है गवाह बनाकर, ख़ुशख़बरी देनेवाला, और डरानेवाला बनाकर, अल्लाह की अनुमति से उसकी ओर निमंत्रण देनेवाला बनाकर और प्रकाशमान प्रदीप बनाकर।"
(क़ुरआन, सूरा-33 अल-अहज़ाब, आयतें: 45-46)

"हमने तुमको सत्य के साथ भेजा है ख़ुशख़बरी देनेवाला और डरानेवाला बनाकर। और कोई समुदाय (उम्मत) ऐसा नहीं हुआ है जिसमें कोई चेतावनी देनेवाला न आया हो। अब अगर ये लोग तुम्हें झुठलाते हैं तो इनसे पहले गुज़रे हुए लोग भी झुठला चुके हैं। उनके पास उनके रसूल खुले प्रमाण और पुस्तकें और स्पष्ट आदेश देनेवाली किताब लेकर आए थे। फिर जिन लोगों ने न माना, उनको मैंने पकड़ लिया और देख लो कि मेरी सज़ा कैसी कठोर थी!" (क़ुरआन, सूरा-35 अल-फ़ातिर, आयतें-24 से 26)

और वह क्या पैग़ाम था, जिसके साथ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को भेजा गया?

"ऐ नबी! कहो मेरे रब ने निश्चय ही मुझे सीधा मार्ग दिखा दिया है, बिलकुल ठीक धर्म जिसमें कोई टेढ़ नहीं, इबराहीम का तरीक़ा जिसे एकाग्र होकर उसने अपनाया था और वह मुशरिकों (बहुदेववादियों) में से न था। कहो, 'मेरी नमाज़, मेरी इबादत-सम्बन्धी सारे तरीक़े, मेरा जीना और मेरा मरना सब कुछ अल्लाह, सारे संसार के रब, के लिए है जिसका कोई साझीदार नहीं। इसी का मुझे आदेश दिया गया है और सबसे पहले आज्ञाकारी होनेवाला मैं हूँ।' कहो, 'क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब तलाश करूँ हालाँकि वही हर चीज़ का रब है!' हर आदमी जो कुछ कमाता है उसका ज़िम्मेदार वह ख़ुद है, कोई बोझ उठानेवाला दूसरे का बोझ नहीं उठाता, फिर तुम सबको अपने रब की ओर पलटना है, उस समय वह तुम्हारे मतभेदों की हक़ीक़त तुमपर खोल देगा। वही है जिसने तुमको ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया, और तुममें से कुछ लोगों को कुछ लोगों के मुक़ाबले में ज़्यादा ऊँचे दर्जे दिए, ताकि जो कुछ तुमको दिया है, उसमें तुम्हारी परीक्षा करे। बेशक तुम्हारा रब सज़ा देने में भी बहुत तीव्र है और बहुत क्षमाशील और दयावान भी है।"

(क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयतें-161 से 165)

"उसने तुम्हारे लिए धर्म की वही पद्धति नियत की है जिसका आदेश उसने नूह को दिया था, और जिसे (ऐ मुहम्मद!) अब तुम्हारी ओर हमने प्रकाशना (वह्य) के द्वारा भेजी है, और जिसका आदेश हम इबराहीम और मूसा और ईसा को दे चुके हैं, इस ताकीद (आदेश) के साथ कि क़ायम करो इस सत्य-धर्म को और इसमें अलग-अलग न हो जाओ। यही बात इन बहुदेववादियों को बहुत अप्रिय लगी है जिसकी ओर (ऐ मुहम्मद!) तुम उन्हें आमंत्रण दे रहे हो। अल्लाह जिसे चाहता है अपना कर लेता है, और वह अपनी ओर आने का मार्ग उसी को दिखाता है जो उसकी ओर रुजू करे (बढ़े)। लोगों में जो विभेद उत्पन्न हुआ वह

इसके बाद हुआ कि उनके पास ज्ञान आ चुका था, और इस कारण हुआ कि वे परस्पर एक-दूसरे पर ज़्यादती करना चाहते थे। अगर तेरा रब पहले ही यह न कह चुका होता कि एक नियत समय तक फ़ैसला स्थगित रखा जाएगा तो उनका झगड़ा चुका दिया गया होता। और वास्तविकता यह है कि अगलों के बाद जो लोग किताब के उत्तराधिकारी बनाए गए, वे उसकी ओर से बड़े विकलताजनक सन्देह में पड़े हुए हैं। (चूँकि यह हालत पैदा हो चुकी है) इसलिए ऐ नबी! अब तुम उसी धर्म की ओर निमंत्रण दो, और जिस तरह तुम्हें आदेश दिया गया है, उसी पर मज़बूती से जम जाओ, और इन लोगों की इच्छाओं का अनुपालन न करो, और इनसे कह दो कि 'अल्लाह ने जो किताब भी उतारी है मैं उसपर ईमान लाया। मुझे आदेश हुआ है कि मैं तुम्हारे बीच इनसाफ़ करूँ। अल्लाह ही हमारा रब भी है और तुम्हारा रब भी। हमारे कर्म हमारे लिए हैं और तुम्हारे कर्म तुम्हारे लिए। हमारे बीच कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह एक दिन हम सबको इकट्ठा करेगा और उसी की ओर सबको जाना है'।"

(क़ुरआन, सूरा-42 अश-शूरा, आयतें-13 से 15)

यह बात पूरी तरह स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को भी इस पैग़ाम (अल्लाह के सिवा कोई माबूद या उपास्य नहीं) के साथ भेजा गया था, जिस पैग़ाम के साथ दूसरे सभी पैग़म्बरों को भेजा गया था। उनकी ज़िम्मेदारी इस पैग़ाम को साफ़-साफ़ बिना किसी मिलावट के, लोगों तक पहुँचाना था। वे ख़ुशख़बरी देनेवाले थे, उन लोगों के लिए जिन्होंने इस पैग़ाम को क़बूल करने के बाद सिर झुका दिया। वे डराने और आगाह (सचेत) करनेवाले थे, उन लोगों के लिए जिन्होंने सर्वव्यापी पैग़ाम का इनकार किया। वे इस पैग़ाम का इनकार करनेवालों के कर्मों के बिलकुल भी ज़िम्मेदार नहीं हैं। वे सिर्फ़ पैग़म्बर (सन्देष्टा) थे। इस हक़ के पैग़ाम के क़बूल करने और न करने की ज़िम्मेदारी हर आदमी की निजी है। उससे निजी जवाबदेही और हमारे कर्मों की हमपर ज़िम्मेदारी स्पष्ट रूप से ज़ाहिर होती है।

अल्लाह के पैग़म्बर (सन्देष्टा) होने की विशिष्टता के अलावा हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने किसी दूसरी विशिष्ट हैसियत का कभी भी दावा नहीं किया। इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह का पैग़म्बर होना स्वयं में एक महान प्रतिष्ठा है, जो अल्लाह ने उनको अपनी ख़ास मेहरबानी से प्रदान किया था। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) से इस बात का खुले अन्दाज़ में एलान करने का ख़ुद अल्लाह ने क़ुरआन में हुक्म दिया—

"ऐ नबी! इनसे कहो, 'मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं। न मुझे ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान है, और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ। मैं तो सिर्फ़ उस प्रकाशना (वह्य) का अनुसरण करता हूँ जो मुझपर अवतरित होती है।' फिर इनसे पूछो, 'क्या अन्धा और आँखोंवाला दोनों बराबर हो सकते हैं? क्या तुम सोच-विचार नहीं करते'?"

(क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयत-50)

"ऐ नबी! उनसे कहो कि 'मुझे अपने-आपके लिए किसी लाभ और हानि का अधिकार प्राप्त नहीं, अल्लाह ही जो कुछ चाहता है, वह होता है और अगर मुझे परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञान होता तो मैं बहुत-से लाभ अपने लिए प्राप्त कर लेता और मुझे कभी कोई हानि न पहुँचती। मैं तो सिर्फ़ एक सचेतकर्ता और ख़ुशख़बरी सुनानेवाला हूँ उन लोगों के लिए जो मेरी बात मानें'।"

(क़ुरआन, सूरा-7 अल-आराफ़, आयत-188)

लेकिन इस ख़ुशख़बरी के साथ-साथ क़ुरआन इस बात को भी साफ़ करता है कि मुहम्मद (सल्ल॰) का स्थान सारे इनसानों से बुलन्द है और पूरी मानवता को उनके अनुकरण का हुक्म देता है—

"वास्तव में तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श था, प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को ज़्यादा याद करे।"

(क़ुरआन, सूरा-33 अल-अहज़ाब, आयत-21)

अध्याय-4

# क़ुरआन का पैग़ाम मानवता के नाम

4:1 निष्ठा की शपथ

4:2 व्यक्तिगत जवाबदेही

4:3 क़ुरआन का सन्देश मानवता के नाम

4:4 फ़ैसले का दिन

# 4:1 निष्ठा की शपथ

"और ऐ नबी! लोगों को याद दिलाओ वह समय जबकि तुम्हारे रब ने आदम के बेटों की पीठों से उनकी नस्ल को निकाला था और उन्हें ख़ुद उनके ऊपर गवाह बनाते हुए पूछा था, 'क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?' उन्होंने कहा, 'ज़रूर आप ही हमारे रब हैं, हम इसपर गवाही देते हैं।' यह हमने इसलिए किया कि कहीं तुम क़ियामत के दिन यह न कह दो कि 'हम तो इस बात से बेख़बर थे, या यह न कहने लगो कि शिर्क (बहुदेववाद) का आरम्भ तो हमारे बाप-दादा ने हमसे पहले किया था और हम उसके पश्चात् उनकी नस्ल से पैदा हुए, फिर क्या आप हमें उस अपराध में पकड़ते हैं जो ग़लतकार लोगों ने किया था?' देखो, इस तरह हम निशानियाँ स्पष्ट रूप से पेश करते हैं। और इसलिए करते हैं कि ये लोग पलट आएँ।" (क़ुरआन, सूरा-7 अल-आराफ़, आयतें-172 से 174)

क़ुरआन की पेश की हुई धारणाओं में से एक अहम धारणा यह है कि इनसान के बनाने या पैदा करने के बाद, इनसान को ज़मीन पर भेजने से पहले, दुनिया में पैदा होनेवाले सारे इनसानों को इकट्ठा किया गया और उनसे यह पक्का वचन (वादा) लिया गया कि वे केवल अल्लाह की बन्दगी करेंगे और उसी के आज्ञाकारी बनकर रहेंगे। इसलिए हर आदमी इस वचन को पूरा करने का ज़िम्मेदार है। बदले के दिन कोई भी यह नहीं कह सकेगा कि वह अपने आसपास की परिस्थिति से या बाप-दादा से प्रभावित होकर भटक गया।

कोई पूछ सकता है, क्या कारण है कि लोग इस समझौते या वादे से अनभिज्ञ हैं?

जवाब आसान और बिलकुल सादा है। अल्लाह ने इनसान को पैदा

किया और उसने समस्त सृष्टि में मात्र इनसान को सोचने और कर्म की आज़ादी दी और इनसान खुद ही उस समझौते या वादे को पूरा करने के लिए तैयार हो गया। निश्चय ही यह एक बहुत भारी ज़िम्मेदारी थी—

> "हमने इस अमानत को आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने प्रस्तुत किया तो वे इसे उठाने के लिए तैयार न हुए और इससे डर गए, मगर इनसान ने इसे उठा लिया, बेशक वह बड़ा ज़ालिम और जाहिल है। (इस अमानत के बोझ को उठाने का तार्किक परिणाम है) ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) मर्दों और औरतों और अनेकेश्वरवादी मर्दों और औरतों को सज़ा दे और ईमानवाले मर्दों और औरतों की तौबा क़बूल करे, अल्लाह माफ़ करनेवाला और दयावान है।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-33 अल-अहज़ाब, आयतें: 72-73)

इसलिए यह बात बिलकुल वास्तविक थी कि इस वादे को इनसान की चेतना से ओझल कर दिया जाए और हर आदमी इसको अपनी समझ और बुद्धि के अनुसार पूरा करने की कोशिश करे। तभी आदमी इनाम का सच्चा हक़दार हो सकता है—

> "अल्लाह ने तो आसमानों और ज़मीन को हक़ (सत्य) के साथ पैदा किया और इसलिए किया है कि प्रत्येक प्राणी को उसकी कमाई का बदला दिया जाए। लोगों पर ज़ुल्म हरगिज़ (कभी भी) न किया जाएगा।" (क़ुरआन, सूरा-45 अल-जासिया, आयत-22)

लेकिन अगर फिर भी हम बग़ावत (विद्रोह) पर उतर आएँ तो सिर्फ़ हम अपना अंजाम ही बिगाड़ते हैं—

> "जो लोग अल्लाह की प्रतिज्ञा को मज़बूत बाँध लेने के बाद तोड़ देते हैं, अल्लाह ने जिसे जोड़ने का आदेश दिया है, उसे काटते हैं, और धरती में बिगाड़ पैदा करते हैं। वास्तव में यही लोग घाटे में हैं।" (क़ुरआन, सूरा-2 बक़रा, आयत-27)

आख़िरत के दिन जब बाग़ी अपनी ग़लती महसूस करेंगे तो वे अल्लाह

से दरख़ास्त (प्रार्थना) करेंगे कि उनको दुनिया में दोबारा भेज दिया जाए, ताकि वे अपनी ग़लती सुधार सकें, लेकिन उस वक़्त तक बहुत देर हो चुकी होगी—

"काश! तुम देखो वह समय जब ये अपराधी सिर झुकाए अपने रब के सामने खड़े होंगे। (उस समय ये कह रहे होंगे) कि 'ऐ हमारे रब! हमने ख़ूब देख लिया और सुन लिया, अब हमें वापस भेज दे ताकि हम अच्छा कर्म करें, हमें अब विश्वास आ गया है'।"
(क़ुरआन, सूरा-32 अस-सजदा, आयत-12)

हालाँकि यह वादा जो हमने अल्लाह से किया, हमारी याद्दाश्त (स्मरण-शक्ति) से अल्लाह ने अपनी विशाल योजना के तहत मिटा दिया, लेकिन अस्ल सच्चाई का अंश हमारी बुद्धि और समझ में सुरक्षित रखा है। यह इनसान के ऊपर है कि उसको सक्रिय करने की कोशिश करे और अल्लाह का आज्ञापालन करे या उसे दबा हुआ रहने दे और दुष्टता में आकर सत्य का इनकारी बना रहे—

"और मानवीय आत्मा की और उस सत्ता की क़सम जिसने उसे ठीक-ठाक किया, फिर उसकी बुराई और परहेज़गारी उसके दिल में डाल दी! यक़ीनन सफलता पा गया वह जिसने आत्मा को विशुद्ध एवं विकसित किया और असफल हुआ वह जिसने उसको दबा दिया!" (क़ुरआन, सूरा-91 अश-शम्स, आयतें-7 से 10)

अल्लाह ने अपनी सृष्टि से अपार मुहब्बत के कारण इनसान पर मेहरबानी करते हुए सच्चाई की तलाश में उसको अकेला नहीं छोड़ दिया। उसने निरन्तर अपने पैग़म्बर भेजे जो इनसानों को सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाते रहे। अब, जबकि अल्लाह का आख़िरी पैग़म्बर और अल्लाह का आख़िरी पैग़ाम हमारे पास आ चुका है तो यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम ख़ुद सीधे रास्ते पर चलें और दूसरों को भी सीधे रास्ते पर चलने के लिए कहें—

"ज़माने की क़सम! इनसान वास्तव में घाटे में है, सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए, और अच्छे कर्म करते रहे, और एक-दूसरे को हक़ की नसीहत और सब्र की प्रेरणा देते रहे!"
(क़ुरआन, सूरा-103 अल-अस्र, आयतें-1 से 3)

# 4:2 व्यक्तिगत जवाबदेही

"ज़मीन और आसमानों में जो भी हैं सब उसकी सेवा में बन्दों की हैसियत से पेश होनेवाले हैं। सबको वह अपने घेरे में लिए हुए है और उसने उनको गिन रखा है। सब क़ियामत के दिन अकेले-अकेले उसके सामने हाज़िर होंगे।"

(क़ुरआन, सूरा-19 मरयम, आयतें-93 से 95)

यह बात बिलकुल स्वाभाविक है कि जब हर आदमी से व्यक्तिगत रूप से पक्का वचन लिया गया है कि वह केवल-और-केवल सर्वशक्तिमान अल्लाह को ही समर्पित होगा तो हर आदमी की निजी जवाबदेही का मामला बिलकुल स्पष्ट हो जाता है। क़ुरआन इस बात का साफ़-साफ़ एलान करता है कि हर आदमी को अपने कर्मों (आमाल) का जवाब देना होगा और उसे उसके अनुसार हिसाब के दिन या तो सज़ा दी जाएगी या वह इनाम का हक़दार ठहरेगा–

"(इन सबका फ़ैसला उस दिन होगा) जबकि हर व्यक्ति अपने ही बचाव की चिन्ता में लगा हुआ होगा और हर एक को उसके किए का बदला पूरा-पूरा दिया जाएगा और किसी पर कण-भर ज़ुल्म न होने पाएगा।" (क़ुरआन, सूरा-16 अन-नह्ल, आयत-111)

"जो कोई अच्छा कर्म करेगा अपने ही लिए अच्छा करेगा, जो बुराई करेगा उसका वबाल उसी पर होगा, और तेरा रब अपने बन्दों के हक़ में ज़ालिम नहीं है।"

(क़ुरआन, सूरा-41 हा॰मीम॰अस-सजदा, आयत-46)

"जो कोई अच्छा कर्म करेगा अपने ही लिए करेगा, और जो बुराई करेगा वह ख़ुद ही उसकी सज़ा भुगतेगा। फिर जाना तो सबको

अपने रब ही की ओर है।"

(क़ुरआन, सूरा-45 अल-जासिया, आयत-15)

क़ुरआन क्षतिपूर्ति का स्थानापन्न या प्रायश्चित का स्थानापन्न होने की विचारधारा का खण्डन करता है। क़ुरआन स्पष्ट शब्दों में कहता है कि सारे पैग़म्बर और रसूल सिर्फ़ ख़ुशख़बरी सुनानेवाले और अल्लाह से डरानेवाले की हैसियत से दुनिया में आए। उनमें से किसी के ऊपर भी ज़िम्मेदारी नहीं कि वह इनसानों के गुनाहों का बोझ अपने कन्धों पर उठाए—

> "हर इनसान का शकुन हमने उसके अपने गले मे लटका रखा है, और क़ियामत के दिन हम एक लेख्य उसके लिए निकालेंगे जिसे वह खुली किताब की तरह पाएगा। पढ़ अपना कर्म-पत्र, आज अपना हिसाब लगाने के लिए तू ख़ुद की काफ़ी है। जो कोई सीधा मार्ग अपनाए, उसका सीधे मार्ग को अपनाना उसके अपने ही लिए लाभकारी है, और जो पथ-भ्रष्ट हो उसकी पथ-भ्रष्टता का वबाल उसी पर है। कोई बोझ उठानेवाला दूसरे का बोझ न उठाएगा। और हम अज़ाब (दण्ड) देनेवाले नहीं हैं जब तक कि (लोगों को सत्य और असत्य का अन्तर समझाने के लिए) एक सन्देशवाहक न भेज दें।"

(क़ुरआन, सूरा-17 बनी-इसराईल, आयतें-13 से 15)

यदि हम लोगों के रवैये को देखें तो, यह बात बहुत ही हैरत में डालनेवाली है कि जब ज़्यादातर लोग दुनिया के मामलों में अपने भविष्य को सँवारने के लिए व्यक्तिगत रूप से पूरी तैयारी करते हैं और अपने कौशल तथा योग्यता का भरपूर इस्तेमाल करते हैं और विचार की आज़ादी को अपना मूल अधिकार समझते हैं, वहाँ वे धर्म के मामले में दूसरों के पीछे बिना सोचे-समझे चलने में कोई संकोच नहीं करते। हमें यह बात अपने ध्यान में साफ़ रखनी चाहिए कि हमारा यह बहाना कि हमने बाप-दादों को एक ख़ास तरीक़े की पैरवी (पालन) करते पाया और हम उनकी बिना सोचे-समझे पैरवी करते रहे, हमारे किसी काम नहीं आएगा—

"वे कुछ लोग थे जो जा चुके। जो कुछ उन्होंने कमाया, वह उनके लिए है और जो कुछ तुम कमाओगे, वह तुम्हारे लिए है। तुमसे यह न पूछा जाएगा कि वे क्या करते थे।"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-134)

कुछ ऐसे लोग भी हो सकते हैं जो समाज में कमज़ोर हों, उनका कोई रुतबा न हो, और दुनिया के मामले में दूसरे के पीछे चलने पर मजबूर हों। उनके अंजाम के बारे में क़ुरआन कहता है–

"और ये लोग जब इकट्ठे अल्लाह के सामने खुलकर आ जाएँगे तो उस समय उनमें से जो दुनिया में कमज़ोर थे, वे उन लोगों से जो बड़े बने हुए थे, कहेंगे, 'दुनिया में हम तुम्हारे पीछे चलते थे, अब क्या तुम अल्लाह के अज़ाब (दण्ड) से हमको बचाने के लिए भी कुछ कर सकते हो?' वे जवाब देंगे, 'अगर अल्लाह ने हमें छुटकारे की कोई राह दिखाई होती तो हम ज़रूर तुम्हें दिखा देते। अब तो समान है चाहे हम हाय-हाय करें या सब्र, किसी हाल में भी हमारे बचने का कोई उपाय नहीं'।"

(क़ुरआन, सूरा-14 इबराहीम, आयतें : 21-22)

अब स्पष्ट रूप से यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपनी जवाबदेही की तैयारी ख़ुद करें, ताकि बदले के दिन हम हमेशा-हमेशा के अज़ाब से अपने-आपको सुरक्षित रख सकें और अल्लाह की ख़ुशी के हक़दार हो सकें और इस बात को हमेशा नज़र के सामने रखें कि कहीं हम अपनी जान के दुश्मन ख़ुद तो नहीं बन रहे हैं?

"वास्तविकता यह है कि अल्लाह लोगों पर ज़ुल्म नहीं करता, लोग ख़ुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-10 यूनुस, आयत-44)

# 4:3 क़ुरआन का सन्देश मानवता के नाम

"यह एक बड़ी बरकतवाली किताब है जो (ऐ नबी!) हमने तुम्हारी ओर अवतरित की है ताकि ये लोग इसकी आयतों पर विचार करें और बुद्धि और समझ रखनेवाले इससे शिक्षा लें।"

(क़ुरआन, सूरा-38 सॉद, आयत-29)

अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को सारे इनसानों के लिए सरासर रहमत (करुणा) और मार्गदर्शक बनाकर भेजा। उनके द्वारा भेजी गई किताब सारे इनसानों के लिए मार्गदर्शन का स्रोत है।

सूरा-2 अल-बक़रा के शुरू में ही इनसानों के अपने पैदा करनेवाले से रिश्ते में अलग-अलग प्रवृत्ति और धारणा रखनेवाले गरोहों का वर्णन करने के बाद पूरी इनसानियत को यह पैग़ाम दिया गया है—

"लोगो! बन्दगी इख़्तियार करो अपने उस रब की जो तुम्हारा और तुमसे पहले जो लोग हुए हैं, उन सबका पैदा करनेवाला है, तुम्हारे बचने की आशा इसी रूप में हो सकती है!"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-21)

इस सर्वव्यापी पैग़ाम के बाद क़ुरआन में बार-बार लोगों को आह्वान किया गया है कि एक अकेले ख़ुदा पर ईमान लाएँ। उसके पैग़म्बर के द्वारा दी गई शिक्षाओं पर चलें और नेक काम करें, ताकि इस दुनिया में भी कामयाब हों और आख़िरत में भी कामयाब लोगों में शामिल हों—

"लोगो! यह रसूल तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से सत्य लेकर आ गया है, ईमान ले आओ, तुम्हारे ही लिए बेहतर है, और अगर

इनकार करते हो तो जान लो कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह का है और अल्लाह सब कुछ जाननेवाला भी है और सर्वज्ञानी भी।" (क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-170)

"लोगो! तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे पास खुला प्रमाण आ गया है। और हमने तुम्हारी ओर ऐसा प्रकाश भेज दिया है जो तुम्हें साफ़-साफ़ रास्ता दिखानेवाला है। अब जो लोग अल्लाह की बात मान लेंगे और उसकी पनाह ढूँढ़ेंगे उनको अल्लाह अपनी रहमत और अपने अनुग्रह व अनुदान की छाया में ले लेगा और अपनी ओर आने का सीधा मार्ग उनको दिखा देगा।"

(क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयतें : 174-175)

"लोगो! अपने रब के ग़ज़ब (प्रकोप) से बचो! वास्तविकता यह है कि क़ियामत का भूकम्प बड़ी (भयंकर) चीज़ है। जिस दिन तुम उसे देखोगे, हाल यह होगा कि हर दूध पिलानेवाली अपने दूधपीते बच्चे को भूल जाएगी, हर गर्भवती का गर्भ गिर जाएगा, और लोग तुम्हें मदहोश दिखेंगे, हालाँकि वे नशे में न होंगे, बल्कि अल्लाह का अज़ाब ही कुछ ऐसा कठोर होगा। कुछ लोग ऐसे हैं जो ज्ञान के बिना अल्लाह के बारे में विवाद करते हैं और हर उपद्रवी शैतान का अनुसरण करने लगते हैं, हालाँकि उसके तो भाग्य ही में यह लिखा है कि जो उसको मित्र बनाएगा, उसे वह गुमराह करके छोड़ेगा और नरक के प्रकोप का मार्ग दिखाएगा। लोगो! अगर तुम्हें मौत के बाद की ज़िन्दगी के बारे में कुछ शक है तो तुम्हें मालूम हो कि हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है, फिर वीर्य से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर मांस की बोटी से जो शक्लवाली भी होती है और बेशक्ल भी। (यह हम इसलिए बता रहे हैं) ताकि तुमपर सच्चाई स्पष्ट करें। हम जिसको चाहते हैं एक नियत समय तक गर्भाशयों में ठहराए रखते हैं, फिर तुमको एक बच्चे के रूप में निकाल लाते हैं (फिर तुम्हारा पालन-पोषण करते हैं) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो। और तुममें से कोई पहले ही वापस

बुला लिया जाता है और कोई निकृष्टतम आयु की ओर फेर दिया जाता है ताकि सब कुछ जानने के बाद फिर कुछ न जाने। और तुम देखते हो कि ज़मीन सूखी पड़ी है, फिर जहाँ हमने उसपर पानी बरसाया कि यकायक वह फबक उठी और फूल गई और उसने हर तरह की सुदृश्य वनस्पतियाँ उगलनी शुरू कर दी। यह सब कुछ इसलिए है कि अल्लाह ही सत्य है, और वह मुर्दों को ज़िन्दा करता है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है, और यह (इस बात का प्रमाण है) कि क़ियामत की घड़ी आकर रहेगी, इसमें किसी शक की गुंजाइश नहीं, और अल्लाह ज़रूर उन लोगों को उठाएगा जो क़ब्रों में जा चुके हैं। कुछ और लोग ऐसे हैं जो किसी ज्ञान और मार्गदर्शन और प्रकाश प्रदान करनेवाली किताब के बिना गरदन अकड़ाए हुए, अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं ताकि लोगों को अल्लाह के मार्ग से भटका दें। ऐसे व्यक्ति के लिए दुनिया में रुसवाई है और क़ियामत के दिन उसको हम आग के अज़ाब का मज़ा चखाएँगे। (उससे कहा जाएगा,) 'यह है तेरा वह भविष्य जो तेरे अपने हाथों ने तेरे लिए तैयार किया है वरना अल्लाह अपने बन्दों पर ज़ुल्म करनेवाला नहीं है'।"

(क़ुरआन, सूरा-22 अल-हज, आयतें-1 से 10)

"लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारी क़ौमें और बिरादरियाँ बना दीं ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह की दृष्टि में तुममें सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे ज़्यादा परहेज़गार है। यक़ीनन अल्लाह सब कुछ जाननेवाला और ख़बर रखनेवाला है।"

(क़ुरआन, सूरा-49 अल-हुजुरात, आयत-13)

क़ुरआन के पैग़ाम को मूल रूप से चार हिस्सों में बाँटा जा सकता है—

(1) **तौहीद (एकेश्वरवाद) :** यानी सिर्फ़ एक ख़ुदा पर ईमान। क़ुरआन मौत से पहले की ज़िन्दगी और मौत के बाद की ज़िन्दगी के विषयों और

ज़िन्दगी के लिए आचारसंहिता का उल्लेख करते हुए इसी एकेश्वरवाद को बुनियाद बनाता है।

(2) **पैग़म्बरी (ईशदूतत्व) :** अल्लाह ने इनसान को बिना हिदायत के दुनिया में यूँ ही भटकता नहीं छोड़ दिया। अल्लाह समय-समय से इनसानों की हिदायत (मार्गदर्शन) के लिए उन्हीं में से अपने पैग़म्बरों को भेजता रहा जो उन्हें सीधे रास्ते की तरफ़ बुलाते रहे। हज़रत आदम (अलैहि.) पहले और हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) अल्लाह के आख़िरी पैग़म्बर हैं। अल्लाह के भेजे गए पिछले सभी पैग़म्बरों की पैग़म्बरी (ईशदूतत्व) को स्वीकार करना इस्लाम लाने की शर्त और ईमान का मूल हिस्सा है।

(3) **आख़िरत (परलोक) :** क़ुरआन बताता है कि हममें से हर एक आदमी अपने कर्मों का ज़िम्मेदार है और यह कि बदले के दिन उसे अपने अच्छे या बुरे कामों का हिसाब देना होगा।

ये तीनों (एकेश्वरवाद, पैग़म्बरी और आख़िरत) इस जीवन-व्यवस्था की बुनियादी पूँजी है, जिनपर क़ुरआन एक अच्छे और साफ़-सुथरे समाज की इमारत का निर्माण करने के लिए नैतिकता का नियम पेश करता है।

(4) **सामाजिक नैतिक नियम :** क़ुरआन हमें एक पवित्र जीवनशैली के नियम देता है, ताकि हम इस दुनिया को सारे इनसानों और दूसरे जानदारों के लिए एक बेहतर रहने की जगह बना सकें। यह हमारी रहनुमाई सीधे रास्ते की तरफ़ करता है, ताकि हम इस दुनिया और आख़िरत दोनों में कामयाबी के हक़दार हो सकें।

## तौहीद (एकेश्वरवाद)

तौहीद के अक़ीदे (सिद्धांत) की विस्तार से चर्चा पहले आ चुकी है। यहाँ पर कुछ आयतों की चर्चा पुनः अवलोकन के लिए की जा रही है—

"अल्लाह ने ख़ुद इस बात की गवाही दी है कि उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है और फ़रिश्ते और सब ज्ञानवान भी सच्चाई और न्याय के साथ इसपर गवाह हैं कि उस बलशाली गहरी समझवाले

के सिवा वास्तव में कोई ख़ुदा नहीं है।"

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-18)

"उसको छोड़कर तुम जिनकी बन्दगी कर रहे हो, वे इसके सिवा कुछ नहीं हैं कि बस कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं, अल्लाह ने उनके लिए कोई सनद नहीं उतारी। शासनाधिकार अल्लाह के सिवा किसी के लिए नहीं है। उसका आदेश है कि ख़ुद उसके सिवा तुम किसी की बन्दगी न करो। यही वास्तविक सीधी जीवन-प्रणाली है, मगर ज़्यादातर लोग जानते नहीं हैं।" (क़ुरआन, सूरा-12 यूसुफ़, आयत-40)

"कहो, वह अल्लाह है, यकता (अद्वितीय)। अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मुहताज (निर्भर) हैं। न उसकी कोई सन्तान है और न वह किसी की सन्तान। और कोई उसका समकक्ष नहीं है।"

(क़ुरआन, सूरा-112 अल-इख़लास, आयतें-1 से 4)

## शिर्क (अनेकेश्वरवाद)

शिर्क (अनेकेश्वरवाद) तौहीद (एकेश्वरवाद) का उलटा (विलोम) है। अल्लाह के अलावा यह मानना कि कोई दूसरा भी ख़ुदाई (ईश्वरत्व) में साझीदार है या उसे पालनहार या सर्वेसर्वा मानना या फिर यह मानना कि वह अल्लाह के यहाँ बदले के दिन को हमारी ख़लासी करा देगा, ये सब शिर्क की हदों में आते हैं। क़ुरआन इसे सबसे बड़ा ज़ुल्म और अत्याचार ठहराता है—

"याद करो जब लुक़मान अपने बेटे को नसीहत कर रहा था तो उसने कहा, 'बेटा! अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करना, सत्य यह है कि शिर्क (बहुदेववाद) बहुत बड़ा ज़ुल्म है'।"

(क़ुरआन, सूरा-31 लुक़मान, आयत-13)

अरबी भाषा में ज़ुल्म का अर्थ किसी चीज़ या हस्ती को उसके जाइज़ और बिलकुल ठीक जगह से हटाना होता है। अल्लाह की हस्ती और उसके ईश्वरत्व में किसी और को शरीक ठहराना इसी लिए सबसे बड़ा ज़ुल्म क़रार

पाया है। यह ऐसा गुनाह है जिसकी बिलकुल भी माफ़ी नहीं है।

> "अल्लाह बस शिर्क (साझीदार बनाने) ही को माफ़ नहीं करता, इसके सिवा दूसरे जितने गुनाह (पाप) हैं, वह जिसके लिए चाहता है माफ़ कर देता है। अल्लाह के साथ जिसने किसी और को साझी ठहराया उसने तो बहुत ही बड़ा झूठ रचा और बड़े सख़्त गुनाह की बात की।" (क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-48)

> "अल्लाह के यहाँ बस 'शिर्क' (अनेकेश्वरवाद) ही की माफ़ी नहीं है, इसके सिवा और सब कुछ माफ़ हो सकता है जिसे वह माफ़ करना चाहे। जिसने अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराया वह तो गुमराही में बहुत दूर निकल गया।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-116)

इस अपराध का सबसे ख़तरनाक पहलू यह है कि इनसान इसको करते हुए इसकी भीषण बुराई और नुक़सान का बिलकुल भी ख़याल नहीं रखता—

> "क्या उस अल्लाह को छोड़कर इन लोगों ने दूसरों को सिफ़ारिशी बना रखा है? इनसे कहो, 'क्या वे सिफ़ारिश करेंगे चाहे उनके अधिकार में कुछ हो न हो और वे समझते भी न हों?' कहो, 'सिफ़ारिश सारी-की-सारी अल्लाह के अधिकार में है। आसमानों और ज़मीन की बादशाही का वही मालिक है। फिर उसी की ओर तुम पलटाए जानेवाले हो'।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-39 अज़-ज़ुमर, आयतें: 43-44)

हालाँकि बहुईशवादी (मुशरिक) भी अपने अन्तर के किसी-न-किसी कोने में 'ईश्वर केवल एक है' की धारणा बसाए हुए होते हैं और यह उनके मन में रहता है कि वही एकमात्र ईश्वर (अल्लाह) उनका अस्ल काम बनानेवाला है, लेकिन फिर भी वे बहुदेववाद (शिर्क) के चंगुल में इसलिए फँस जाते हैं, क्योंकि शिर्क को उनके सामने एक अच्छी चीज़ की तरह पेश किया जाता है (इसका विवरण हम विस्तार से अध्याय 3.2 में कर चुके हैं)। इस सन्दर्भ में क़ुरआन हमदर्दी के साथ लोगों से माँग करता है कि अल्लाह की दी हुई अक़्ल और

समझ को इस्तेमाल करें और इस शैतानी जाल में फँसने से बचें।

"वह अल्लाह ही तो है जिसने तुम्हें सुनने और देखने की शक्तियाँ दीं और सोचने को दिल दिए। मगर तुम लोग कम ही कृतज्ञता दिखाते हो। वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया, और उसी की ओर तुम समेटे जाओगे। वही ज़िन्दगी प्रदान करता है और वही मौत देता है। रात और दिन का उलट-फेर उसी के अधिकार में है। क्या तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आती? मगर ये लोग वही कुछ कहते हैं जो इनके अगले कह चुके हैं। ये कहते हैं कि 'क्या जब हम मरकर मिट्टी हो जाएँगे और हड्डियों का पंजर बनकर रह जाएँगे तो हमको फिर ज़िन्दा करके उठाया जाएगा? हमने भी ये वादे बहुत सुने हैं और हमसे पहले हमारे बाप-दादा भी सुनते रहे हैं। ये तो बस पुरानी कहानियाँ हैं।' इनसे कहो, 'बताओ अगर तुम जानते हो कि यह ज़मीन और इसकी सारी आबादी किसकी है?' ये ज़रूर कहेंगे कि 'अल्लाह की।' कहो, 'फिर तुम होश में क्यों नहीं आते?' इनसे पूछो, 'सातों आसमानों और महान सिंहासन का मालिक कौन है?' ये ज़रूर कहेंगे, 'अल्लाह।' कहो, 'फिर तुम डरते क्यों नहीं?' इनसे कहो, 'बताओ अगर तुम जानते हो कि हर चीज़ पर प्रभुत्व किसका है? और कौन है वह जो पनाह देता है और उसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता?' ये अवश्य कहेंगे कि 'यह बात तो अल्लाह ही के लिए है।' कहो, 'फिर कहाँ से तुमको धोखा लगता है?' जो सत्य है वह हम इनके सामने ले आए हैं, और कोई शक नहीं कि ये लोग झूठे हैं। अल्लाह ने किसी को अपनी औलाद नहीं बनाया है, और कोई दूसरा ख़ुदा उसके साथ नहीं है। अगर ऐसा होता तो हर ख़ुदा अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता और फिर वे एक-दूसरे पर चढ़ दौड़ते। पाक है अल्लाह उन बातों से जो ये लोग बनाते हैं! खुले और छिपे को जाननेवाला, वह उच्चतर है उस शिर्क से जो ये कर रहे हैं। (क़ुरआन, सूरा-23 अल-मोमिनून, आयतें-78 से 92)

## पैग़म्बरी (रिसालत या ईशदूतत्व)

अल्लाह ने इनसान को यूँ ही भटकता नहीं छोड़ दिया। उसने अपने पैग़म्बर और रसूल इनसान की हिदायत के लिए भेजे, ताकि वे इनसान का सीधे रास्ते (इस्लाम) की तरफ़ मार्गदर्शन करें। अध्याय 3:1 में इस विषय पर विस्तार से बातचीत हो चुकी है। यहाँ पर हम सिर्फ़ एक आयत याद दिलाने के लिए पेश करते हैं—

> "रसूल (मुहम्मद) ने उस मार्गदर्शन को माना जो उसके रब की ओर से उसपर उतरा है। और जो लोग इस रसूल के माननेवाले हैं, उन्होंने ने भी उस मार्गदर्शन को दिल से मान लिया है। ये सब अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों को मानते हैं और इनका कहना यह है कि हम अल्लाह के रसूलों को एक-दूसरे से अलग नहीं करते, हमने हुक्म सुना और आज्ञाकारी हुए। मालिक! हम तुझसे माफ़ी चाहते हैं और हमें तेरी ही ओर पलटना है।" (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-285)

यह आयत स्पष्ट करती है कि अल्लाह का पैग़ाम हर इनसान के लिए है और उसने अपने सारे पैग़म्बरों और रसूलों को उसी पैग़ाम के साथ भेजा था जिस पैग़ाम के साथ उसने आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को भेजा।

## सामाजिक व्यवस्था और ज़िम्मेदारियाँ

> "मैंने जिन्न और इनसानों को इसके सिवा किसी काम के लिए पैदा नहीं किया है कि वे मेरी बन्दगी करें।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-51 अज़-ज़ारियात, आयत-56)

क़ुरआन के द्वारा लाई गई पूरी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था अल्लाह के द्वारा सृष्टि के निर्माण के इसी मक़सद (उद्देश्य) पर निर्भर है। क़ुरआन इनसानों के बीच अन्तर की सिर्फ़ एक बुनियाद बताता है और वह है इनसान का उसके पैदा करनेवाले से सम्बन्ध। इसके अलावा इनसान की श्रेष्ठता का कोई दूसरा पैमाना नहीं है। अगर हम अपनी ज़िन्दगी उन उसूलों के आधार पर गुज़ारेंगे, जो क़ुरआन ने हमें बताए हैं, तभी हमारी

नजात (मोक्ष) सम्भव है और तभी हमारी गिनती इज़्ज़तदार और आदरणीय लोगों में होगी। और अगर हम गुमराही में पड़ जाएँ तो हम अपनी दुनिया भी बरबाद करेंगे और आख़िरत भी।

क़ुरआन पूरी इनसानियत (मानव-जाति) के लिए हिदायत की किताब है। यह ऐसी किताब है जो हमारा मार्गदर्शन करती है कि किस तरह हम अपनी निजी और व्यावहारिक ज़िन्दगी गुज़ारें। क़ुरआन के उसूलों पर चलने में ही हमारी भलाई और मुक्ति है, वरना विनाश हमारा भाग्य होगा।

> "हम इस क़ुरआन के अवतरण-क्रम में वह कुछ अवतरित कर रहे हैं जो माननेवालों के लिए तो आरोग्य और दयालुता है, मगर ज़ालिमों के लिए घाटे के सिवा और किसी चीज़ में अभिवृद्धि नहीं करता।" (क़ुरआन, सूरा-17 बनी-इसराईल, आयत-82)

इससे पहले कि हम आगे बढ़ें और क़ुरआन के द्वारा भेजे गए ज़िन्दगी के विधानों (क़ानूनों) के बारे में बातचीत करें, हमारे लिए एक बार फिर यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि क़ुरआन, राजनीतिक दृष्टिकोणों, सामाजिक या वैज्ञानिक शोधों पर आधारित किताब नहीं है, बल्कि हिदायत (मार्गदर्शन) की किताब है। इसी लिए रहनुमाई के सारे नियम जो क़ुरआन के द्वारा हमें मिले हैं, वे हमें सर्वज्ञानी, अपार दिव्यदर्शी, सृष्टि के रचयिता और एकमात्र शासक के आगे समर्पण करने की अभिन्न शर्त के रूप में मिले हैं।

एक और अहम चीज़ जिसको समझना ज़रूरी है वह यह कि हालाँकि अल्लाह के ये क़ानून और ज़िन्दगी गुज़ारने के नियम उन लोगों के लिए हैं जो इस्लाम को मानते हैं, अल्लाह के ईश्वरत्व (उलूहियत) को मानते हैं और हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को अल्लाह का आख़िरी पैग़म्बर स्वीकार करते हैं, मगर वे लोग भी इससे इस दुनिया में फ़ायदा उठा सकते हैं जो क़ुरआन को अल्लाह की किताब माने बिना उसके बुनियादी उसूलों पर चलें।

नीचे हम इस्लाम की बनाई हुई सामाजिक व्यवस्था और शिक्षाओं पर संक्षेप में बात करेंगे।

# सामाजिक ज़िन्दगी

## वैवाहिक एवं पारिवारिक सम्बन्ध

मर्द और औरत की लैंगिक ज़रूरतें स्पष्ट एवं स्वाभाविक हैं। इसका कोई इनकार नहीं कर सकता। दूसरी शारीरिक ज़रूरतों की तरह यह भी एक आवश्यक ज़रूरत है। लेकिन इसके साथ हमको यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि सबसे अच्छा प्राणी होने के नाते हमें इसको जानवरों की प्रवृत्ति नहीं समझना चाहिए कि हम जिस तरह चाहें इस ज़रूरत को पूरी करें। जिस तरह हमें यह हुक्म है कि रोज़ी-रोटी, घर और दूसरी ज़रूरतों की पूर्ति के लिए क़ानूनी और वैध तरीक़े अपनाएँ, उसी तरह हमें यह भी हुक्म है कि लैंगिक इच्छा को पूरी करने के लिए भी वैध रास्ता अपनाएँ। पति-पत्नी का रिश्ता सिर्फ़ जानवर की-सी ज़रूरत को पूरी कर लेने का स्रोत नहीं है। यह एक गरिमापूर्ण और सम्मानित रिश्ता है और एक स्वस्थ और शालीन समाज के लिए बहुत ही ज़रूरी है। शादी के बन्धन को क़ुरआन मज़बूत समझौते का नाम देता है और इसकी पवित्रता और शालीनता बनाए रखने का आदेश देता है। एक-दूसरे के मान-सम्मान का ख़याल रखना पति-पत्नी की ज़िम्मेदारी है। लेकिन अगर कुछ कारणों के आधार पर शादी को बनाए रखना मुश्किल हो जाए तो मर्द और औरत दोनों के लिए सम्मानित तरीक़े से अलग होने का रास्ता हमेशा खुला है।

क़ुरआन ने इस बंधन की महत्ता को स्वीकार किया है और विस्तार से इसके सम्बन्ध में आदेश दिए हैं। हम यहाँ संक्षिप्त में उनमें से केवल एक का उल्लेख करते हैं।

> "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! तुम्हारे लिए यह हलाल (वैध) नहीं है कि ज़बरदस्ती औरतों के वारिस बन बैठो और न यह हलाल है कि उन्हें तंग करके उस (मह्र) का कुछ हिस्सा हड़प लेने की

कोशिश करो जो तुम उन्हें दे चुके हो। हाँ, अगर वे किसी खुली बदचलनी का काम कर बैठें (तो दूसरी बात है)। उनके साथ भले ढंग से रहो-सहो। अगर वे तुम्हें पसन्द न हों तो हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द न हो मगर अल्लाह ने उसी में बहुत कुछ भलाई रख दी हो। और अगर तुम एक बीवी की जगह दूसरी बीवी ले आने की ठान ही लो तो चाहे तुमने उसे ढेर-सा माल ही क्यों न दिया हो, उसमें से कुछ वापस न लेना। क्या तुम उसे झूठा कलंक लगाकर और खुला ज़ुल्म करके वापस लोगे? और आख़िर तुम उसे किस तरह लोगे जबकि तुम एक-दूसरे से मिलन कर चुके हो और वे तुमसे दृढ़ प्रतिज्ञा करा चुकी हैं?"

(क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयतें-19 से 21)

क़ुरआन ने शादी के बन्धन को पवित्र और सम्मानजनक ठहराया है, लेकिन काम-वासना को पूरा करने के अवैध तरीक़ों की निन्दा की है और दण्डनीय अपराध घोषित किया है–

"व्यभिचार के क़रीब न फटको। वह बहुत बुरा कर्म है और बड़ा ही बुरा रास्ता।" (क़ुरआन, सूरा-17 बनी-इसराईल, आयत-32)

"व्यभिचारिणी औरत और व्यभिचारी मर्द दोनों में से हर एक को सौ कोड़े मारो। और उनपर तरस खाने की भावना अल्लाह के धर्म के विषय में तुमको न सताए अगर तुम अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान रखते हो। और उनको सज़ा देते समय ईमानवालों का एक गरोह उपस्थित रहे।" (क़ुरआन, सूरा-24 अन-नूर, आयत-2)

## पति-पत्नी का रिश्ता

इनसानी समाज में सबसे पहला रिश्ता पति-पत्नी का है। क़ुरआन इसको बहुत ही पवित्र रिश्ते का नाम देता है और दोनों के लिए यह ज़रूरी ठहराता है कि एक-दूसरे की इज़्ज़त करें। यह दोनों को अलग-अलग अधिकार देता है और दोनों पर बहुत सारी ज़िम्मेदारियाँ भी डालता है। क़ुरआन इस रिश्ते की गम्भीरता को स्पष्ट करने के लिए इस रिश्ते की

इन्तिहाई ख़ूबसूरत उपमा देता है—

"....वे तुम्हारे लिए लिबास (वस्त्र) हैं और तुम उनके लिए लिबास हो..... ।" (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-187)

यानी जिस तरह हमें लिबास आराम और ठण्डे-गरम मौसम से सुरक्षित रखता है, हमारी सामाजिक प्रतिष्ठा प्रमाणित करता है और हमारी ख़राबियों को ढाँकता है, वैसे ही पति-पत्नी एक-दूसरे के लिए शारीरिक, मानसिक, भावात्मक तथा आत्मिक सहारे एवं सुख का स्रोत होते हैं। वे आपस में एक-दूसरे के राज़ों की हिफ़ाज़त भी करते हैं—

"और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही सहजाति से बीवियाँ बनाईं ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो और तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा कर दी। यक़ीनन इसमें बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं।" (क़ुरआन सूरा-30 अर-रूम, आयत-21)

हालाँकि यह रिश्ता आपसी प्यार-मुहब्बत, दया और बराबरी पर क़ायम है, क़ुरआन पति-पत्नी दोनों के लिए ख़ानदान में अलग-अलग भूमिका देता है।

"मर्द औरतों के मामलों के ज़िम्मेदार हैं, इस आधार पर कि अल्लाह ने उनमें से एक को दूसरे के मुक़ाबले में आगे रखा है, और इस आधार पर कि पुरुष अपने माल ख़र्च करते हैं। अतः जो भली औरतें हैं वे आज्ञाकारी होती हैं और मर्दों के पीछे अल्लाह की रक्षा और संरक्षण में उनके अधिकारों की रक्षा करती हैं।"
(क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-34)

## माँ-बाप और बच्चों का रिश्ता

मानव-समाज की उन्नति और विकास का एक मूल कारण एक पीढ़ी का दूसरी पीढ़ी से लम्बी अवधि तक सम्बन्ध भी है। समाज में निरन्तर ज्ञान और संस्कारों की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने की प्रक्रिया केवल मानव-समाज की विशेषता है।

माँ-बाप और बच्चों के सम्बन्ध इस पूरी प्रक्रिया में सबसे ज़्यादा महत्व रखते हैं। क़ुरआन हमें रहनुमा उसूल (मार्गदर्शक सिद्धान्त) देता है जिनकी रौशनी में माँ-बाप बच्चों के अधिकारों के बारे में पूर्ण मार्गदर्शन हासिल कर सकते हैं और उनका सही तरीक़े से पालन-पोषण कर सकते हैं–

"...माएँ अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष तक दूध पिलाएँ...।"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-233)

"अपनी सन्तान को निर्धनता के डर से क़त्ल न करो। हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी। वास्तव में उनका क़त्ल एक बड़ा अपराध है।" (क़ुरआन, सूरा-17 बनी-इसराईल, आयत-31)

बच्चों की बेहतरीन तरबियत (शिक्षा-दीक्षा), उनकी शारीरिक ज़रूरतों का ख़याल रखना और उनको बेहतरीन नैतिक मूल्यों की शिक्षा देना माँ-बाप की ज़िम्मेदारी है। यह ज़िम्मेदारी उन सबकी होती है जो शादी के पाकीज़ा बन्धन में यक़ीन रखते हैं और ख़ानदान के निर्माण को समाजी और नैतिक ज़िम्मेदारी समझते हैं। यह बात ध्यान में रहे कि बच्चों की परवरिश, उनकी देखभाल, ख़ानदान की ज़रूरतों का ख़याल, ये सब क़ुरआन की शिक्षाओं की रौशनी में हलाल (वैध) साधनों से किए जाएँगे। हराम (अवैध) स्रोतों का इस्तेमाल करके अपने आर्थिक स्तर को बढ़ाने की कोशिश क़ुरआन के बताए हुए तरीक़े के विरुद्ध है और हराम (निषिद्ध) है। क़ुरआन हमें इससे मना करता है–

"तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो एक आज़माइश (परीक्षा) हैं, और अल्लाह ही है जिसके पास बड़ा बदला है।"

(क़ुरआन, सूरा-64 अत-तग़ाबुन, आयत-15)

आम तौर पर माँ-बाप की बच्चों के प्रति ज़िम्मेदारियों को तो लगभग हर समाज में बुनियादी काम समझा जाता है, लेकिन जब माँ-बाप की देखभाल का सवाल उठता है तो इसमें ज़िम्मेदारी की वह मज़बूती नहीं नज़र आती। क़ुरआन हमें जताता है कि हमारे माँ-बाप, विशेषकर माँ, को हमारी पैदाइश और परवरिश में कितनी क़ुरबानियाँ देनी पड़ती हैं। क़ुरआन हमको

आदेश देता है कि हम उनकी इज़्ज़त और आदर करें और बुढ़ापे में उनका पूरा ख़याल रखें—

"तेरे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि तुम लोग किसी की बन्दगी न करो, मगर सिर्फ़ उसकी। माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, अगर तुम्हारे पास उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उन्हें उफ़् (धिक) तक न कहो, न उन्हें झिड़ककर जवाब दो, बल्कि उनसे आदर के साथ बात करो, और नम्रता और दयालुता के साथ उनके सामने झुककर रहो, और दुआ किया करो कि 'पालनहार! इनपर दया कर जिस तरह इन्होंने दयालुता और करुणा के साथ मुझे बचपन में पाला था'।"

(क़ुरआन, सूरा-17 बनी-इसराईल, आयतें : 23-24)

"और यह वास्तविकता है कि हमने इनसान को अपने माँ-बाप का हक़ पहचानने की स्वयं ताकीद की है। उसकी माँ ने कमज़ोरी-पर-कमज़ोरी झेलकर उसे अपने पेट में रखा और दो वर्ष उसका दूध छूटने में लगे। (इसी लिए हमने उसको नसीहत की कि) मेरे प्रति कृतज्ञता दिखाओ और अपने माँ-बाप के प्रति कृतज्ञ हो, मेरी ही ओर तुझे पलटना है। लेकिन अगर वे तुझपर दबाव डालें कि मेरे साथ तू किसी ऐसे की उपासना करे जिसे तू नहीं जानता तो तू उनकी बात हरगिज़ न मान। दुनिया में उनके साथ अच्छा व्यवहार करता रह मगर चल उस व्यक्ति के मार्ग पर जो मेरी ओर उन्मुख है। फिर तुम सबको पलटना मेरी ही ओर है, उस समय मैं तुम्हें बता दूँगा कि तुम कैसे कर्म करते रहे हो!"

(क़ुरआन, सूरा-31 लुक़मान, आयतें: 14-15)

माँ-बाप की बात न मानने की सिर्फ़ उसी सूरत में इजाज़त दी गई है जब वे अल्लाह की नाफ़रमानी (अवज्ञा) का हुक्म दें। ऐसी सूरत में भी क़ुरआन हमसे साफ़-साफ़ कहता है कि उनकी ज़रूरतों का ख़याल रखना अनिवार्य होगा और उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाएगा।

## आर्थिक व्यवस्था

ख़ानदान या परिवार के तुरन्त बाद एक कल्याणकारी समाज में सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण आर्थिक व्यवस्था है। क़ुरआन हमें बताता है कि वे लोग जिनके माली साधन समान नहीं हैं, वे आपस में किस तरह के सम्बन्ध रखें। एक कल्याणकारी समाज का यह बुनियादी उत्तरदायित्व है कि वह आम लोगों के हितों की सुरक्षा करे। ग़रीबों और कमज़ोर वर्गों को शोषण से बचाए और लोगों को तरक़्क़ी करने और आगे बढ़ने में हर तरह की सहायता दे। इसी के साथ-साथ साधनों-संसाधनों के अनुचित इस्तेमाल पर भी नियंत्रण करे। ऐसा समाज जो क़ुरआनी उसूलों की पाबन्दी करता हो, उस समाज में उन सारी चीज़ों की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है।

## बिना सूद-ब्याजवाली अर्थव्यवस्था

क़ुरआन सूद पर आधारित अर्थव्यवस्था को वर्जित करता है। क़ुरआन की अर्थव्यवस्था का सबसे अहम हिस्सा उसकी सूद और सूदी अर्थव्यवस्था से नफ़रत है। इस बात को कहने में कोई संकोच नहीं कि आज के समय में लगभग सारे आर्थिक संकटों के पीछे सूद और सूदी अर्थव्यवस्था का ही हाथ है। दुनिया में असमानता का मूल कारण सूद और सूदी अर्थव्यवस्था है। क़ुरआन न केवल इसकी निन्दा करता है बल्कि इसपर पूरी पाबन्दी लगाता है। वह ऐसा सूदरहित समाज बनाना चाहता है जो ग़रीबों को शोषण से सुरक्षित रखे—

> "मगर जो लोग ब्याज (सूद) खाते हैं, उनका हाल उस आदमी जैसा होता है जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो। और इस हालत में उनके फँस जाने का कारण यह है कि वे कहते हैं, 'व्यापार भी तो आख़िर ब्याज ही जैसी चीज़ है', जबकि अल्लाह ने व्यापार को हलाल (वैध) किया है और ब्याज को हराम (अवैध)। अतः जिस आदमी को उसके रब की ओर से यह नसीहत पहुँचे और आगे के लिए वह ब्याज खाने से रुक जाए, तो जो कुछ वह पहले ले चुका, सो ले चुका, उसका मामला अल्लाह के हवाले है। और जो इस आदेश के बाद फिर इस कर्म

को दुबारा करे, वह नरकवासी है, जहाँ वह हमेशा रहेगा। अल्लाह ब्याज को घटाता और मिटाता है और ख़ैरात (दान) को बढ़ाता है। और अल्लाह किसी नाशुक्रे (अकृतज्ञ) बुरे अमलवाले इनसान को पसन्द नहीं करता।

ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह का डर रखो और जो कुछ ब्याज बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो यदि तुम ईमानवाले हो। फिर यदि तुमने ऐसा न किया तो अल्लाह और उसके रसूल से युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। और यदि तौबा कर लो तो अपना मूलधन लेने का तुम्हें अधिकार है। न तुम अन्याय करो और न तुम्हारे साथ अन्याय किया जाए। और अगर कोई तंगी में हो तो हाथ खुलने तक मुहलत दो; और सदक़ा कर दो (अर्थात् मूलधन भी न लो) तो तुम्हारे लिए अधिक उत्तम है यदि तुम समझो।"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयतें: 275-276)

## ज़कात

सूदी व्यवस्था के विपरीत क़ुरआन ज़कात की व्यवस्था को आम करता है। इस्लाम ने ज़कात को मुसलमानों पर फ़र्ज़ (अनिवार्य) कर दिया है, ताकि माल अमीरों से ग़रीबों तक पहुँचें। सूद और ज़कात नैतिक रूप से एक-दूसरे के विपरीत है। क़ुरआन कहता है—

"जो ब्याज तुम देते हो ताकि लोगों के मालों में शामिल होकर वह बढ़ जाए, अल्लाह की नज़र में वह नहीं बढ़ता, और जो ज़कात (दान) तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के इरादे से देते हो, उसी के देनेवाले वास्तव में अपने माल बढ़ाते हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-30 अर-रूम, आयत-39)

क़ुरआन यह भी कहता है कि कौन लोग ज़कात के हक़दार हैं—

"ये सदक़े तो वास्तव में फ़क़ीरों और मुहताजों के लिए हैं और उन लोगों के लिए जो ज़कात जमा करने पर नियुक्त हों, और उनके लिए जिनका दिल मोहना (तालीफ़े-क़ल्ब) अभीष्ट हो। और

यह गरदनों को छुड़ाने (गुलामों को आज़ाद करने) और क़र्ज़दारों की मदद करने में और अल्लाह के मार्ग में और मुसाफ़िरों की सहायता में इस्तेमाल करने के लिए हैं। यह एक अनिवार्य पालनीय आदेश है अल्लाह की ओर से और अल्लाह सब कुछ जाननेवाला और गहरी सूझ-बूझवाला है।''

(क़ुरआन, सूरा-9 अत-तौबा, आयत-60)

ज़कात के सिलसिले में एक अहम बात यह है कि इसे सालाना आमदनी से नहीं जोड़ा गया, बल्कि सालाना बच जानेवाली रक़म पर, अगर वह एक ख़ास हद से ज़्यादा हो जाए, अदा करना होता है। यदि किसी व्यक्ति की वार्षिक बचत 87.5 ग्राम सोने की क़ीमत से ज़्यादा है तो उसपर 2.5 प्रतिशत ज़कात देना है।

## दान-पुण्य

ज़कात के अलावा क़ुरआन बार-बार भले कामों में ख़र्च करने पर उभारता है, क़ुरआन कहता है—

लोग तुमसे पूछते हैं, 'हम क्या ख़र्च करें?' जवाब दो कि 'जो माल भी तुम ख़र्च करो अपने माँ-बाप पर, नातेदारों पर, यतीमों और निर्धनों और मुसाफ़िरों पर ख़र्च करो। और जो भलाई भी तुम करोगे, अल्लाह उसे जानता होगा'।''

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-215)

''...पूछते हैं, 'हम अल्लाह के रास्ते में क्या ख़र्च करें?' कहो, 'जो कुछ तुम्हारी ज़रूरत से ज़्यादा हो।' इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए साफ़-साफ़ आदेश बयान करता है, शायद कि तुम दुनिया और आख़िरत (परलोक) दोनों की चिन्ता करो!''

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-219)

अगर इस निर्देश को बुनियाद बनाकर इसपर पूरी तरह चला जाए तो दुनिया से पूरी तरह भुखमरी और अकाल का ख़ात्मा हो जाएगा और सामाजिक अशांति एवं संघर्ष भी बड़ी हद तक ख़त्म हो जाएगी।

## निजी ज़रूरतें

आदमी की अपनी ज़रूरतों पर ख़र्च करने के बारे में भी क़ुरआन का पैग़ाम बिलकुल साफ़ है—

> "न तो अपना हाथ गरदन से बाँध रखो और न उसे बिलकुल ही खुला छोड़ दो कि निन्दित और बेबस बनकर रह जाओ।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-17 बनी-इसराईल, आयत-29)

एक दूसरी जगह सच्चे मुसलमानों की ख़ूबियाँ बयान करते हुए क़ुरआन कहता है—

> "जो ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूलख़र्ची करते हैं और न कंजूसी से काम लेते हैं, बल्कि उनका ख़र्च दोनों सीमाओं के बीच सन्तुलन पर स्थिर रहता है।" (क़ुरआन, सूरा-25 अल-फ़ुरक़ान, आयत-67)

क़ुरआन बार-बार ज़ोर देकर कहता है कि अल्लाह के दिए हुए संसाधनों को सही अन्दाज़ में इस्तेमाल किया जाए—

> "ऐ आदम की सन्तान! हर इबादत के अवसर पर अपनी सज्जा से सुशोभित रहो। और खाओ-पियो और सीमा से आगे न बढ़ो, अल्लाह सीमा से बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-7 अल-आराफ़, आयत-31)

संसाधनों का ग़लत और अनुचित इस्तेमाल ही करोड़ों लोगों की ग़रीबी और भुखमरी की बुनियादी वजह है। करोड़ों लोग दुनिया के लगभग हर हिस्से में बहुत ज़्यादा ग़रीबी और भूखमरी के शिकार हैं और दूसरी तरफ़ वे लोग हैं जिनका इन साधनों-संसाधनों पर नियंत्रण है। ऐसे लोग जिन्होंने अस्वाभाविक अन्दाज़ में अल्लाह, जो सारे जहानों के पालनहार हैं, के दिए हुए साधनों-संसाधनों पर क़ब्ज़ा कर रखा है और वे दूसरों की ग़रीबी का कारण बनते हैं, क़ुरआन ऐसे लोगों की कटु आलोचना करता है। वह बार-बार इन संसाधनों का ज़िक्र करता है जो उसने काफ़ी मात्रा में पूरी ज़मीन पर फैला रखे हैं—

"वह अल्लाह ही है जिसने तरह-तरह के बाग़ और अंगूर के बाग़ और नख़लिस्तान (मरुद्यान) पैदा किए, खेतियाँ उगाईं जिनसे तरह-तरह के खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं, ज़ैतून और अनार के पेड़ पैदा किए जिनके फल रूप-रंग में मिलते-जुलते और स्वाद में भिन्न होते हैं। खाओ इनकी पैदावार जबकि ये फलें, और अल्लाह का हक़ अदा करो जब इनकी फ़सल काटो, और सीमा से आगे न बढ़ो कि अल्लाह सीमा से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता।" (क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयत-141)

## व्यक्ति और राज्य के सम्बन्ध

समाज का एक अहम पहलू व्यक्ति और राज्य का सम्बन्ध है। राज्य के बारे में क़ुरआन का बुनियादी मत यह है कि अल्लाह ही अस्ली हाकिम (शासक) है—

"अत्यन्त श्रेष्ठ और उच्च है वह जिसके हाथ में (विश्व का) राज्य है, और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। जिसने मौत और ज़िन्दगी को आविष्कृत किया ताकि तुम लोगों को आज़माकर देखे कि तुममें से कौन अच्छा कर्म करनेवाला है, और वह प्रभुत्वशाली भी है और माफ़ करनेवाला भी।"

(क़ुरआन, सूरा-67 अल-मुल्क, आयतें: 1-2)

क़ुरआन यह बात स्पष्ट रूप से कहता है कि जिन लोगों को देश का शासन चलाने का सौभाग्य दिया गया है, उनको हर वक़्त यह बात याद रखनी चाहिए कि वे सबसे बड़े हाकिम (शासक), जो हाकिमों का हाकिम है, के आगे जवाबदेह हैं। उनको यह बात भी हर वक़्त याद रहनी चाहिए कि इनसान दुनिया में अपने रचयिता का ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) है—

"वही है जिसने तुमको ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया, और तुममें से कुछ लोगों को कुछ लोगों के मुक़ाबले में ज़्यादा ऊँचे दर्जे दिए, ताकि जो कुछ तुमको दिया है उसमें तुम्हारी परीक्षा करे। बेशक तुम्हारा रब सज़ा देने में भी बहुत तेज़ है और बहुत क्षमाशील और

दयावान भी है।"  (क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयत-165)

क़ुरआन न सिर्फ़ इस बात को साफ़ करता है कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ही अस्ली शासक है, बल्कि यह भी बताता है कि जब से इनसान को ज़मीन में भेजा गया, उसी वक़्त से उसपर यह साफ़ कर दिया गया था कि उसे सृष्टि के बनानेवाले की हिदायत और क़ानूनों की रौशनी में ही कार्य करना होगा, लेकिन इनसान ने लगभग हमेशा इन हिदायतों की अनदेखी की—

> "फिर ऐ नबी! हमने तुम्हारी ओर यह किताब भेजी जो हक़ (सत्य) लेकर आई है और मूल किताब में से जो कुछ उसके आगे मौजूद है उसकी पुष्टि करनेवाली और उसकी संरक्षक है। अतः तुम अल्लाह के उतारे हुए क़ानून के अनुसार लोगों के मामलों का फ़ैसला करो और जो हक़ (सत्य) तुम्हारे पास आया है उससे मुँह मोड़कर उनकी इच्छाओं का पालन न करो—हमने तुम (इनसानों) में से हर एक के लिए एक धर्म-विधान और कार्य-प्रणाली निर्धारित की। यद्यपि अगर तुम्हारा अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक उम्मत (समुदाय) भी बना सकता था, लेकिन उसने यह इसलिए किया कि जो कुछ उसने तुम लोगों को दिया है, उसमें तुम्हारी परीक्षा करे। अतः भलाइयों में एक-दूसरे से आगे बढ़ जाने की कोशिश करो। आख़िरकार तुम सबको अल्लाह की ओर पलटकर जाना है, फिर वह तुम्हें वह सच्चाई बता देगा जिसमें तुम मतभेद करते रहे हो—अतः ऐ नबी! तुम अल्लाह के उतारे हुए क़ानून के अनुसार इन लोगों के मामलों का फ़ैसला करो और इनकी इच्छाओं का पालन न करो। सावधान रहो कि ये लोग तुम्हें धोखे में डालकर उस मार्गदर्शन से तनिक भी फेरने न पाएँ जो अल्लाह ने तुम्हारी ओर अवतरित किया है। फिर अगर ये उससे मुँह मोड़ें तो जान लो कि अल्लाह ने इनके कुछ गुनाहों के बदले में इनको मुसीबत में डालने का इरादा ही कर लिया है, और यह हक़ीक़त है कि इन लोगों में से अधिकतर उल्लंघनकारी हैं। (अगर ये अल्लाह के क़ानून से मुँह मोड़ते हैं) तो क्या फिर अज्ञान का फ़ैसला चाहते

हैं? हालाँकि जो लोग अल्लाह को मानते हैं उनके नज़दीक अल्लाह से अच्छा फ़ैसला करनेवाला और कौन हो सकता है?"

(क़ुरआन, सूरा-5 अल-माइदा, आयतें-48 से 50)

और नेक और भले लोग जिनको अल्लाह ने राज्य, सत्ता और अधिकार दिया है, उनका रवैया (प्रवृत्ति) सरकार के चलाने और उसकी व्यवस्था में कैसा होता है? क़ुरआन इस बारे में कहता है—

"ये वे लोग हैं जिन्हें अगर हम ज़मीन में सत्ता प्रदान करें तो वे नमाज़ क़ायम करेंगे, ज़कात देंगे, नेकी का आदेश देंगे और बुराई से रोकेंगे। और सब मामलों का परिणाम अल्लाह के हाथ में है।" (क़ुरआन, सूरा-22 अल-हज, आयत-41)

राज्य की व्यवस्था और उसके संचालन में सबसे अहम चीज़ नागरिकों के बीच इनसाफ़ है। किसी व्यक्ति का रंग, नस्ल, जाति या रुतबा, कोई चीज़ उसको इनसाफ़ से वंचित नहीं कर सकती। इनसाफ़ के तराज़ू में सब बराबर हैं।

"मुसलमानो! अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि अमानतों को अमानतवालों को सौंपो, और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो तो इनसाफ़ के साथ करो, अल्लाह तुमको अत्युत्तम नसीहत करता है और यक़ीनन अल्लाह सब कुछ सुनता और देखता है।"

(क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-58)

"....और फ़ैसला करो तो फिर ठीक-ठीक इनसाफ़ के साथ करो कि अल्लाह इनसाफ़ करनेवालों को पसन्द करता है।"

(क़ुरआन, सूरा-5 अल-माइदा, आयत-42)

क़ुरआन पक्षपात और पूर्वाग्रह या तंगनज़री (संकीर्णता) की बुनियाद पर फ़ैसले का बहुत बड़ा मुख़ालिफ़ (विरोधी) है। क़ुरआन कहता है—

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह के लिए औचित्य पर क़ायम रहनेवाले और इनसाफ़ की गवाही देनेवाले बनो। किसी गरोह की दुश्मनी तुमको इतना उत्तेजित न कर दे कि इनसाफ़ से फिर जाओ। इनसाफ़ करो! यह ईशभक्ति और विनम्रता के

अधिक अनुकूल है। अल्लाह से डरकर काम करते रहो, जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे पूरी तरह जानता है।"

(क़ुरआन, सूरा-5 अल-माइदा, आयत-8)

इस तरह क़ुरआन के मुताबिक़ राज्य की ज़िम्मेदारी है—

(1) क़ुरआन के बताए हुए उसूलों और अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की सुन्नतों (तरीक़ों) के मुताबिक़ राज्य की नीतियों को तय करना।

(2) समस्त नागरिकों को शारीरिक, धार्मिक और आर्थिक आज़ादी मुहैया करना और उनमें धर्म, सम्प्रदाय, रंग-नस्ल की बुनियाद पर भेदभाव न करना।

(3) राज्य या देश के सभी मामलों और व्यवस्था और सरकार चलाने में सच्चाई और इनसाफ़ को बुनियाद बनाना।

जहाँ तक व्यक्ति की ज़िम्मेदारियों का सवाल है, क़ुरआन कहता है—

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! बात मानो अल्लाह की और बात मानो रसूल की और उन लोगों की जो तुममें से आदेश देने के अधिकारी हों! फिर अगर तुम्हारे बीच किसी मामले में मतभेद हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर फेर दो अगर तुम वास्तव में अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो! यही एक सही कार्य-प्रणाली है और परिणाम की दृष्टि से भी ठीक है।" (क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-59)

वे लोग जिनको देश चलाने की ज़िम्मेदारी दी गई है, उनकी आज्ञा का पालन न करना सिर्फ़ उस वक़्त जाइज़ है जब वे साफ़-साफ़ क़ुरआन और सुन्नत की उपेक्षा करें—

"जो काम नेकी और ईश-भक्ति के हैं उनमें सबका सहयोग दो और जो गुनाह और ज़्यादती के काम हैं उनमें किसी का सहयोग न करो! अल्लाह से डरो! उसकी सज़ा बहुत सख़्त है।"

(क़ुरआन, सूरा-5 अल-माइदा, आयत-2)

वे लोग जिनके हाथों में देश की बागडोर दी हुई है, उनके लिए न्याय और इनसाफ़ के मापदण्ड दिए गए हैं, जिनको उन्हें अपनी ज़िन्दगी में भी लागू करना है और पूरी ज़िम्मेदारी से देश की व्यवस्था और शासन चलाना है—

> "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! इनसाफ़ के ध्वजावाहक और अल्लाह के लिए गवाह बनो यद्यपि तुम्हारा इनसाफ़ और तुम्हारी गवाही ख़ुद तुम्हारे अपने या तुम्हारे माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न पड़ती हो! मामले से सम्बन्ध रखनेवाला पक्ष चाहे मालदार हो या ग़रीब, अल्लाह तुमसे अधिक उनका हितैषी है। अतः अपनी इच्छा के अनुपालन में न्याय से न हटो। और अगर तुमने लगी-लिपटी बात कही या सच्चाई से पहलू बचाया तो जान रखो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी ख़बर है।" (क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-135)

क़ुरआन हमसे माँग करता है कि हम सच्चाई और इनसाफ़ के लिए खड़े हो जाएँ और इसमें अपने नुक़सान की भी परवाह न करें।

अपने दैनिक जीवन में भी क़ुरआन हमसे माँग करता है कि हम ईमानदारी का सबूत दें, लोगों का ख़याल रखें और अल्लाह का तक़वा (डर और परहेज़गारी) अपनाएँ। कुछ आयतें ऐसी हैं जो हमारी ज़िन्दगी के हर मोड़ पर रहनुमाई (मार्गदर्शन) करती हैं। ऐसी कुछ आयतों को हम यहाँ पेश करते हैं—

> "और तुस सब अल्लाह की बन्दगी करो, उसके साथ किसी को साझी न बनाओ, माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, नातेदारों और यतीमों (अनाथों) और मुहताजों (ग़रीबों) के साथ अच्छा व्यवहार करो, और नातेदार पड़ोसी से, अपरिचित पड़ोसी से, निकट के साथी और मुसाफ़िर से, और उन दास-दासियों से जो तुम्हारे अधिकार में हों, एहसान का मामला रखो, यक़ीन जानो अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो डींगें मारनेवाला हो और अपनी बड़ाई पर गर्व करे।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-36)

"…..नातेदार को उसका हक़ दो और मुहताज और मुसाफ़िर को उसका हक़! फ़ुज़ूलख़र्ची न करो!"

(क़ुरआन, सूरा-17 बनी-इसराईल, आयत-26)

क़ुरआन यतीमों (अनाथों) के साथ एहसान का बरताव करने का हुक्म देता है और बार-बार उनके शोषण से दूर रहने को कहता है–

"यतीमों के माल उनको वापस दो, अच्छे माल को बुरे माल से न बदल लो और उनके माल अपने माल के साथ मिलाकर न खा जाओ! यह बहुत बड़ा गुनाह है!"

(क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-2)

"जो लोग ज़ुल्म के साथ यतीमों के माल खाते हैं, वास्तव में वे अपने पेट आग से भरते हैं और वे ज़रूर जहन्नम (नरक) की भड़कती हुई आग में झोंके जाएँगे।"

(क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-10)

"अतः अनाथ के साथ सख़्ती न करो!"

(क़ुरआन, सूरा-93 अज़्-ज़ुहा, आयत-9)

क़ुरआन बार-बार उन ख़ूबियों का ज़िक्र करता है जो लोगों को अपने अन्दर पैदा करनी चाहिए, ताकि दुनिया हर प्राणी के रहने के लिए एक बेहतरीन जगह बन सके। यहाँ कुछ ख़ास आयतों को विशेष रूप से बयान किया जा रहा है–

"ऐ नबी! उनसे कहो कि आओ मैं तुम्हें सुनाऊँ तुम्हारे रब ने तुमपर क्या पाबन्दियाँ लगाई हैं : यह कि उसके साथ किसी को साझीदार न बनाओ। और माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, और अपनी औलाद को निर्धनता के भय से क़त्ल न करो, हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उनको भी देंगे और बेशर्मी की बातों के क़रीब भी न जाओ, चाहे वे खुली हों या छिपी। और किसी जीव की जिसे अल्लाह ने आदरणीय ठहराया है, हत्या न करो मगर हक़ के साथ। ये बातें हैं जिनका आदेश उसने तुम्हें दिया

है, शायद कि तुम समझ-बूझ से काम लो! और यह कि यतीम के माल के क़रीब न जाओ मगर ऐसे तरीक़े से जो सबसे अच्छा हो, यहाँ तक कि वह अपनी जवानी की उम्र को पहुँच जाए। और नाप-तौल में पूरा इनसाफ़ करो, हम हर व्यक्ति पर ज़िम्मेदारी का उतना ही बोझ रखते हैं जितना कि उसमें सामर्थ्य है। और जब बात कहो इनसाफ़ की कहो चाहे मामला अपने नातेदार ही का क्यों न हो! और अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो! इन बातों का आदेश अल्लाह ने तुम्हें दिया है, ताकि तुम याद रखो।''

(क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयतें: 151-152)

''अपनी सन्तान को निर्धनता के डर से क़त्ल न करो! हम उन्हें भी रोज़ी देंगे और तुम्हें भी। वास्तव में उनका क़त्ल एक घोर पाप है। व्यभिचार के क़रीब न फटको! वह बहुत बुरा कर्म है और बड़ा ही बुरा रास्ता। किसी जान को न मारो जिसे अल्लाह ने हराम किया है सिवाय इसके कि हक़ और इनसाफ़ को यही अपेक्षित हो! और जिसका क़त्ल ज़ुल्म के साथ किया गया हो उसके वली (उत्तराधिकारी) को हमने क़िसास (हर्जाना) की माँग का हक़ दिया है, अतः चाहिए कि वह हत्या के मामले में सीमा से आगे न बढ़े! उसकी सहायता की जाएगी। अनाथ के माल के पास न फटको सिवाय उत्तम रीति के, यहाँ तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाए। वचन का अनुपालन करो, बेशक दिए गए वचन के विषय में तुम्हें जवाब देना होगा! पैमाने से दो तो पूरा भरकर दो और तौलो तो ठीक तराज़ू से तौलो! यह अच्छा तरीक़ा है और परिणाम की दृष्टि से भी यही अच्छा है। किसी ऐसी चीज़ के पीछे न लगो जिसका तुम्हें ज्ञान न हो। यक़ीनन आँख, कान और दिल सब ही के विषय में पूछा जाएगा। ज़मीन में अकड़कर न चलो, तुम न ज़मीन को फाड़ सकते हो, न पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकते हो। इनमें से हर एक का बुरा पहलू तेरे रब की दृष्टि में अप्रिय है।'' (क़ुरआन, सूरा-17 बनी-इसराईल, आयतें-31 से 38)

हकीम लुक़मान ने मरते समय अपने बेटे से कहा–

"बेटा! नमाज़ क़ायम कर, नेकी का आदेश दे, बुराई से रोक, और जो मुसीबत भी पड़े उसपर सब्र कर! ये वे बातें हैं जिनकी बड़ी ताकीद की गई है। और लोगों से मुख फेरकर बात न कर! न ज़मीन में अकड़कर चल! अल्लाह किसी अहंकारी और डींग मारनेवाले को पसन्द नहीं करता। अपनी चाल में सन्तुलन बनाए रख! और अपनी आवाज़ तनिक धीमी रख, सब आवाज़ों से बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ होती है!"

(क़ुरआन, सूरा-31 लुक़मान, आयतें-17 से 19)

## ज़िन्दगी के रहनुमा उसूल

इस बात को भली-भांति समझना चाहिए कि बेहतरीन समाज स्थापित करने के लिए जो मूल चीज़ें जिनकी चर्चा क़ुरआन करता है, वह नेकी और तक़वा (अल्लाह का डर) है। क़ुरआन हमें सामूहिक और व्यक्तिगत जीवन में शिक्षा देता है कि हम हर फ़ैसले और हर काम में इन दोनों गुणों को अपनाएँ, लेकिन नेकी और तक़वा है क्या? आएँ, क़ुरआन की रौशनी में देखते हैं–

## नेकी (भलाई)

क़ुरआन स्पष्ट शब्दों में कहता है कि नेकी या अच्छा काम केवल कुछ धार्मिक रस्म-रिवाजों के संग्रह का नाम नहीं है। नेकी और भलाई का मतलब बहुत व्यापक है। हमें हर काम करते समय इस उसूल को अपने सामने रखना चाहिए। क़ुरआन कहता है–

"नेकी यह नहीं है कि तुमने अपने चेहरे पूरब की ओर कर लिए या पश्चिम की ओर, बल्कि नेकी यह है कि आदमी अल्लाह को और अन्तिम दिन को और फ़रिश्तों को और अल्लाह की उतारी हुई किताब और उसके पैग़म्बरों को दिल से माने, और अल्लाह के प्रेम में अपना दिलपसन्द माल नातेदारों और अनाथों पर, निर्धनों और मुसाफ़िरों पर, मदद के लिए हाथ फैलानेवालों पर

और ग़ुलामों की रिहाई पर ख़र्च करे, नमाज़ क़ायम करे और ज़कात दे। और नेक वे लोग हैं कि जब वचन दें तो उसे पूरा करें, और तंगी और विपत्ति के समय में और सत्य और असत्य के युद्ध में धैर्य दिखाएँ। ये हैं सच्चे लोग और यही लोग परहेज़गार हैं।"
(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-177)

## तक़वा

तक़वा (अल्लाह का डर) ऐसा शब्द है जिसका मतलब भी बहुत व्यापक है। अल्लाह के डर और उसकी मुहब्बत में आदमी का किसी काम से रुक जाना और अपने ऊपर नियंत्रण रखना इसके मतलब में शामिल है। अल्लाह का डर रखनेवाला आदमी हमेशा अपने-आपको क़ुरआन के रहनुमा उसूलों की रौशनी में जाँचता रहता है कि वह सही रास्ते पर है या नहीं। उसके सारे काम अल्लाह को ख़ुश करने के लिए होते हैं। यह इसलिए कि अल्लाह ने क़ुरआन में कहा है—

"लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारी क़ौमें और बिरादरियाँ बना दीं ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह की दृष्टि में तुममें सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे ज़्यादा परहेज़गार (सदाचारी) है। यक़ीनन अल्लाह सब कुछ जाननेवाला और ख़बर रखनेवाला है।" (क़ुरआन, सूरा-49 अल-हुजुरात, आयत-13)

यह सुनहरी उसूल अल्लाह से क़रीब होने के दूसरे सारे पैमानों को, चाहे वे पैदाइश के आधार पर हों, रंग और नस्ल के आधार पर हों या जात-पात के आधार पर हों, जड़ से ही ख़त्म कर देता है। अल्लाह से नज़दीकी का माप सिर्फ़ तक़वा (अल्लाह से डर और परहेज़गारी) और नेक काम हैं।

क़ुरआन स्पष्ट रूप से बताता है कि कौन लोग हैं जिनको अल्लाह पसन्द करता है और किनको पसन्द नहीं करता।

## अल्लाह के नज़दीक नापसन्द (अप्रिय) लोग

क़ुरआन उन लोगों की ख़राबियों और कमियों को साफ़-साफ़ बयान

करता है जिनको अल्लाह पसन्द नहीं करता। क़ुरआन हमें बार-बार सचेत करता है कि हम इन बुराइयों में न पड़ें—

"और तुम अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो तुमसे लड़ते हैं, लेकिन **ज़्यादती न करो कि अल्लाह ज़्यादती करनेवालों को पसन्द नहीं करता।"** (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-190)

"उनसे कहो कि अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करो। फिर यदि वे तुम्हारी यह बात न मानें, तो **निश्चय ही यह सम्भव नहीं है कि अल्लाह ऐसे लोगों से प्रेम करे, जो उसके और उसके रसूल के आज्ञापालन से इनकार करते हों।"**

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-32)

"और जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे कर्म की नीति अपनाई है, उन्हें उनका बदला पूरा-पूरा दे दिया जाएगा और (ख़ूब जान लें कि) **ज़ालिमों से अल्लाह हरगिज़ प्रेम नहीं करता।"**

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-57)

"और तुम सब अल्लाह की बन्दगी करो! उसके साथ किसी को साझी न बनाओ! माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो! नातेदारों और यतीमों और मुहताजों के साथ अच्छा व्यवहार करो, और पड़ोसी नातेदार से, अपरिचित पड़ोसी से, पहलू के साथी और मुसाफ़िर से, और उन दास-दासियों से जो तुम्हारे अधिकार में हों, एहसान का मामला रखो! **यक़ीन जानो अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो डींगें मारनेवाला हो और अपनी बड़ाई पर गर्व करे।"** (क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-36)

"जो लोग ख़ुद अपने साथ विश्वासघात करते हैं तुम उनका पक्ष न लो। **अल्लाह को ऐसा आदमी पसन्द नहीं है जो विश्वासघाती और पापी हो।"** (क़ुरआन, सूरा-4 अन-निसा, आयत-107)

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जो पाक चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल (वैध) की हैं, उन्हें हराम (अवैध) न कर लो और

सीमा का उल्लंघन न करो! **अल्लाह को ज़्यादती करनेवाला सख़्त नापसन्द हैं।**" (क़ुरआन, सूरा-5 अल-माइदा, आयत-87)

"अवश्य ही अल्लाह प्रतिरक्षा करता है, उन लोगों की ओर से जो ईमान लाए हैं। **निश्चय ही अल्लाह किसी विश्वासघाती कृतघ्न को पसन्द नहीं करता।**" (क़ुरआन, सूरा-22 अल-हज, आयत-38)

"(अपने धन पर) इतरा मत! **अल्लाह इतरानेवालों को पसन्द नहीं करता।**" (क़ुरआन, सूरा-28 अल-क़सस, आयत-76)

हमें यह बात स्पष्ट रूप से याद रखनी चाहिए कि जब भी अल्लाह अपने प्रति ज़िम्मेदारियों (इबादत) का ज़िक्र करता है, वहाँ ज़रूर हमारी सामाजिक ज़िम्मेदारियों का और अच्छी क़द्रों (मूल्यों) का ज़िक्र आता है। यह इसलिए है कि सेहतमन्द तथा सभ्य समाज बनाने के लिए ये दोनों चीज़ें बहुत ज़रूरी हैं।

## अल्लाह के पसन्दीदा (प्रिय) लोग

क़ुरआन स्पष्ट रूप से उन बुरी आदतों और बुराइयों की निन्दा करता है जो आदमी या समाज में पाई जाती हैं। लेकिन क़ुरआन हमें इस बात पर उभारता है कि हम अच्छे काम करें जिनको अल्लाह पसन्द करे और लोगों के लिए फ़ायदा पहुँचानेवाले हों। क़ुरआन में चालीस से ज़्यादा बार जिन लोगों के अच्छे परिणाम मिलने की बात हुई है, वहाँ कहा गया है—

"जो लोग ईमान लाएँ और अच्छा काम करें...।"

(क़ुरआन, सूरा-5 अल-माइदा, आयत-9)

अच्छा आचरण और भलाई अल्लाह पर ईमान और यक़ीन का आवश्यक नतीजा हैं। इसलिए अल्लाह पर ईमान लाने का बेहतर नतीजा मिलने के लिए अच्छे कर्मों का होना भी स्वाभाविक है। अच्छा आचरण तथा संस्कार इनसान को निजी तौर पर अल्लाह के क़रीब करते हैं और सामूहिक रूप से एक सुन्दर समाज के निर्माण में सहायक होते हैं। सभ्य समाज का एक अहम अंग यह है कि आदमी अपनी ज़िम्मेदारियों और कर्तव्यों से पूरी तरह आगाह (सूचित) हो—

"अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करो और अपने हाथों अपने-आपको तबाही में न डालो। **अच्छे-से-अच्छा तरीक़ा अपनाओ कि अल्लाह अच्छे-से-अच्छा तरीक़ा अपनानेवालों को पसन्द करता है।"**

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-195)

"पूछते हैं, 'हैज़ (मासिक धर्म) के बारे में क्या हुक्म है?' कहो, 'वह एक गन्दगी की हालत है। उसमें स्त्रियों से अलग रहो और उनके पास न जाओ (संभोग न करो), जब तक कि वे पाक-साफ़ न हो जाएँ। फिर जब वे पाक हो जाएँ तो उनके पास जाओ उस तरह जैसा कि अल्लाह ने तुम्हें आदेश दिया है। **अल्लाह को वे लोग पसन्द हैं, जो बुराई से दूर रहें और पाकी (पवित्रता) अपनाएँ'।"** (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-222)

"इससे पहले कितने ही नबी ऐसे हुए हैं जिनके साथ मिलकर बहुत-से ख़ुदापरस्तों ने युद्ध किया। अल्लाह के मार्ग में जो मुसीबतें उनपर पड़ीं, उनसे वे हताश नहीं हुए, उन्होंने कमज़ोरी नहीं दिखाई, वे (असत्य के आगे) नतमस्तक नहीं हुए। ऐसे ही **धैर्यवानों को अल्लाह पसन्द करता है।"**

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-146)

"(ऐ पैग़म्बर!) यह अल्लाह की बड़ी दयालुता है कि तुम इन लोगों के लिए बहुत नर्म स्वभाव के हो। अन्यथा यदि कहीं तुम क्रूर स्वभाव और कठोर हृदय के होते तो ये सब तुम्हारे आसपास से छँट जाते। इनके क़ुसूर माफ़ कर दो! इनके लिए मग़फ़िरत की दुआ करो! और धर्म के कार्य में इनको भी परामर्श में सम्मिलित रखो! फिर जब तुम्हारा संकल्प किसी सम्मति पर सुदृढ़ हो जाए तो अल्लाह पर भरोसा करो! **अल्लाह को वे लोग प्रिय हैं जो उसी के भरोसे पर काम करते हैं।"**

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-159)

"ये झूठ सुननेवाले और हराम के माल खानेवाले हैं, अतः अगर ये तुम्हारे पास (अपने मुक़द्दमे लेकर) आएँ तो तुम्हें अधिकार दिया

जाता है कि चाहो तो इनका फ़ैसला करो वरना इनकार कर दो। इनकार कर दो तो ये तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते, और फ़ैसला करो तो फिर ठीक-ठीक इनसाफ़ के साथ करो कि **अल्लाह इनसाफ़ करनेवालों को पसन्द करता है।**''

(क़ुरआन, सूरा-5 अल-माइदा, आयत-42)

''ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! **अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों का साथ दो!**'' (क़ुरआन, सूरा-9 अत-तौबा, आयत-119)

''**जो लोग अपने माल रात-दिन खुले और छिपे ख़र्च करते हैं** उनका बदला उनके रब के पास है और उनके लिए किसी ख़ौफ़ और रंज की बात नहीं।''

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-274)

''**और अल्लाह के प्रेम में मुहताज और अनाथ और क़ैदी को खाना खिलाते हैं,** (और उनसे कहते हैं कि) 'हम तुम्हें सिर्फ़ अल्लाह के लिए खिला रहे हैं, हम तुमसे न कोई बदला चाहते हैं न शुक्रिया'।'' (क़ुरआन, सूरा-76 अद-दह्‌र, आयतें: 8-9)

''यक़ीनन सफलता पाई है ईमान लानेवालों ने जो अपनी नमाज़ में विनम्रता अपनाते हैं, व्यर्थ बातों से दूर रहते हैं, ज़कात की नीति पर चलते हैं, अपने गुप्त अंगों की हिफ़ाज़त करते हैं सिवाए अपनी बीवियों के और उन औरतों के जो यथा-विधि उनकी मिलकियत में हों कि उनके पास जाने में वे निन्दनीय नहीं हैं, लेकिन जो उसके अलावा कुछ और चाहें वही ज़्यादती करनेवाले हैं। अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखते हैं, और अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं। यही लोग वे वारिस हैं जो विरासत में फ़िरदौस (आनन्द-लोक) पाएँगे और उसमें हमेशा रहेंगे। (क़ुरआन, सूरा-23 अल-मोमिनून, आयतें-1 से 11)

''रहमान के (वास्तविक) बन्दे वे हैं जो ज़मीन पर नर्म चाल चलते हैं और जाहिल उनके मुँह आएँ तो कह देते हैं कि 'तुमको

सलाम!' जो अपने रब के आगे सजदे में और खड़े रहकर रातें गुज़ारते हैं। जो दुआएँ करते हैं कि 'ऐ हमारे रब! नरक के प्रकोप से हमको बचा ले, उसका प्रकोप तो जान का लागू है, वह तो बड़ी ही बुरी ठहरने की जगह और स्थान है!' जो ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूलख़र्ची करते हैं और न कंजूसी से काम लेते हैं, बल्कि उनका ख़र्च दोनों सीमाओं के बीच सन्तुलन पर स्थिर रहता है। जो अल्लाह के सिवा किसी और पूज्य को नहीं पुकारते, अल्लाह के वर्जित किए हुए किसी जीव का नाहक़ क़त्ल नहीं करते, और न व्यभिचार करते हैं—ये काम जो कोई करेगा वह अपने गुनाह का बदला पाएगा, क़ियामत के दिन उसका अज़ाब (दण्ड) बढ़ता जाएगा और उसी में वह हमेशा अपमान सहित पड़ा रहेगा। यह और बात है कि कोई (इन गुनाहों के बाद) तौबा कर चुका हो और ईमान लाकर अच्छा कर्म करने लगा हो। ऐसे लोगों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा और वह बड़ा क्षमाशील, दयावान है। जो व्यक्ति तौबा करके अच्छा कर्म करता है वह तो अल्लाह की ओर पलट आता है, जैसा कि पलटने का हक़ है—(और रहमान के नेक बन्दे वे हैं) जो झूठ के गवाह नहीं बनते और किसी बेहूदा (अश्लील) चीज़ पर उनका गुज़र हो जाए तो सज्जन आदमियों की तरह गुज़र जाते हैं। जिन्हें अगर उनके रब की आयतें सुनाकर नसीहत की जाती है तो वे उसपर अन्धे और बहरे बनकर नहीं रह जाते। जो दुआएँ माँगा करते हैं कि ऐ हमारे रब! हमें अपनी बीवियों और अपनी औलाद से आँखों की ठण्डक दे और हमको डर रखनेवालों का इमाम (नायक) बना!"

(क़ुरआन, सूरा-25 अल-फ़ुरक़ान, आयतें-63 से 74)

**"और मानवीय आत्मा की और उस सत्ता की क़सम जिसने उसे ठीक-ठाक किया, फिर उसकी बुराई और परहेज़गारी उसके दिल में डाल दी! यक़ीनन सफलता पा गया वह जिसने आत्मा को विशुद्ध एवं विकसित किया और असफल हुआ वह जिसने उसको दबा दिया।"** (क़ुरआन, सूरा-91 अश-शम्स, आयतें-7 से 10)

## तौबा

क्या उन लोगों के लिए जो बुरे कामों में पड़ जाते हैं और जिनको बाद में पश्चाताप होता है, बचने का कोई रास्ता है? जवाब है—अवश्य! अल्लाह अपने पैग़म्बर को हुक्म देता है कि वह इसका एलान कर दें कि जो लोग पछतानेवाले और लज्जित हैं, उनको मालूम हो जाए कि उनका पैदा करनेवाला उनको माफ़ कर सकता है—

> "(ऐ नबी!) कह दो कि 'ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है (पाप किए हैं)! अल्लाह की दयालुता से निराश न हो जाओ, यक़ीनन अल्लाह सारे गुनाह माफ़ कर देता है, वह तो अत्यन्त क्षमाशील दयावान है, पलट आओ अपने रब की ओर और आज्ञाकारी बन जाओ उसके इससे पहले कि तुमपर अज़ाब (यातना) आ जाए और फिर कहीं से तुम्हें सहायता न मिल सके। और अनुपालन में लग जाओ अपने रब की भेजी हुई सर्वोत्तम चीज़ (क़ुरआन) की जो तुम्हारी ओर अवतरित हुई है, इससे पहले कि तुमपर अचानक अज़ाब आ जाए और तुमको ख़बर भी न हो'।" (क़ुरआन, सूरा-39 अज़-ज़ुमर, आयतें-53 से 55)
>
> "और ऐ नबी! मेरे बन्दे अगर तुमसे मेरे सम्बन्ध में पूछें, तो उन्हें बता दो कि मैं उनसे क़रीब ही हूँ। पुकारनेवाला जब मुझे पुकारता है, मैं उसकी पुकार सुनता और जवाब देता हूँ। अतः उन्हें चाहिए कि मेरी पुकार पर कहें कि हम हाज़िर हैं और मुझपर ईमान लाएँ। (यह बात तुम उन्हें सुना दो) शायद कि वे सीधा मार्ग पा लें!"
>
> (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-186)
>
> "अतः तुम मुझे याद रखो, मैं तुम्हें याद रखूँगा, और मेरा शुक्र अदा करो, नाशुक्री न करो!"
>
> (क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-152)

ये आयतें अल्लाह की इनसान के लिए मुहब्बत और रहमत (दया) का स्पष्ट वर्णन करती हैं। वह दयावान हमेशा इस बात के लिए तैयार रहता है

कि वह उन भटके हुए बन्दों को माफ़ कर दे, जो अपनी ग़लतियों पर शर्मिन्दा हैं और उससे तौबा करें।

"ऐ नबी! मेरे बन्दों को सूचित कर दो कि मैं बहुत माफ़ करनेवाला और दयावान हूँ।"

(क़ुरआन, सूरा-15 अल-हिज्र, आयत-49)

## दुआ

अल्लाह न सिर्फ़ अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है, जबकि वह सच्चे दिल से उससे तौबा करें और उसकी तरफ़ पलटें, उसने यह भी सिखाया है कि किस तरह उसके दरबार में दुआ करें। वह सब कुछ जाननेवाला है। वह जानता है कि हम उससे किस चीज़ की माँग करनेवाले हैं। लेकिन हम किस तरह माँगें, इससे अपरिचित हैं। वह हमारी दुआओं के इख़लास (निष्ठता) और फ़रियाद को भली-भाँति जानता है, चाहे हम सही शब्दों में उसके सामने अपनी माँगों को पेश न कर सकें—

"हमने इनसान को पैदा किया है और उसके दिल में उभरनेवाले सन्देह तक को हम जानते हैं। हम उसकी गरदन की रग (नस) से भी ज़्यादा उससे क़रीब हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-50 क़ाफ़, आयत-16)

क़ुरआन हमें दुआ करने के सही तरीक़े बताता है। इसमें पैग़म्बरों ने जो दुआएँ की थीं और जिस तरह की थीं, उसका ज़िक्र विस्तार से है। भले और परहेज़गार लोग जिन्होंने अल्लाह से हिदायत चाही थी और उसके पास पनाह चाही थी, उसका ज़िक्र भी क़ुरआन में मौजूद है। उसका ज़िक्र इसलिए किया गया है, ताकि हम उनसे फ़ायदा उठाएँ और इस तरह अल्लाह की पनाह, करुणा और मेहरबानियों के लिए उसके सामने हाथ फैलाएँ। नीचे हम उनमें से कुछ दुआएँ लिख रहे हैं।

".....ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई, और आग के अज़ाब से हमें बचा!"

(क़ुरआन, सूरा-2 अल-बक़रा, आयत-201)

यह दुआ निहायत अच्छे अन्दाज़ में नेक और परहेज़गार ईमानवालों की अपने पैदा करनेवाले से दोनों जहानों (दुनिया और आख़िरत) में कामयाबी के लिए है।

"ऐ हमारे रब! हम ईमान ले आए। अतः तू हमें क्षमा कर दे और हमपर दया कर! तू सबसे अच्छा दया करनेवाला है।"

(क़ुरआन, सूरा-23 अल-मोमिनून, आयत-109)

"और कहो, 'मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और दया कर! तू तो सबसे अच्छा दया करनेवाला है'।"

(क़ुरआन, सूरा-23 मोमिनून, आयत-118)

".....पालनहार! जब तू हमें सीधे रास्ते पर लगा चुका है, तो फिर कहीं हमारे दिलों में टेढ़ न पैदा कर देना। हमें अपनी करुणा के सागर से दयालुता प्रदान कर कि तू ही वास्तविक दाता है।"

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-8)

जब आदम और हव्वा (अलैहि॰) हुक्म को नहीं मानने के दोषी ठहरे तो उनके तौबा को क़बूल करते हुए अल्लाह ने उनको यह दुआ सिखाई—

".....ऐ रब! हमने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, अब अगर तूने हमें माफ़ न किया और दया न की तो यक़ीनन (अवश्य) हम तबाह हो जाएँगे।" (क़ुरआन, सूरा-7 अल-आराफ़, आयत-23)

नीचे लिखी दोनों दुआएँ हज़रत इबराहीम (अलैहि॰) की हैं—

"ऐ मेरे रब! मुझे निर्णय-शक्ति एवं तत्वदर्शिता प्रदान कर! और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला! और बाद के आनेवालों में मुझको सच्ची ख्याति प्रदान कर! और मुझे नेमत-भरी जन्नत के वारिसों में शामिल कर!"

(क़ुरआन, सूरा-26 अश-शोअ़रा, आयतें-83 से 85)

"मेरे रब! मुझे और मेरी संतान को नमाज़ क़ायम करनेवाला बना! हमारे रब! और हमारी प्रार्थना स्वीकार कर! हमारे रब! मुझे और मेरे माँ-बाप को और मोमिनों को उस दिन क्षमा कर देना

जिस दिन हिसाब का मामला पेश आएगा!"

(क़ुरआन, सूरा-14 इबराहीम, आयतें : 40-41)

जब हिसाब का दिन आएगा तो ईमानवालों की स्थिति का विवरण क़ुरआन बड़ी सुन्दर दुआ से करता है—

"ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह के आगे तौबा करो, विशुद्ध तौबा! बहुत सम्भव है कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराइयाँ तुमसे दूर कर दे और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी! जिस दिन अल्लाह नबी को और उनको जो ईमान लाकर उसके साथ हुए, रुसवा (लज्जित) नहीं करेगा। उनका प्रकाश उनके आगे-आगे और उनकी दाईं ओर दौड़ रहा होगा। वे कह रहे होंगे, **'ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारे प्रकाश को पूर्ण कर दे और हमें क्षमा कर दे! निश्चय ही तू हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है'।"** (क़ुरआन, सूरा-66 अत-तहरीम, आयत-8)

# 4:4 फ़ैसले का दिन

**"अन्ततः प्रत्येक व्यक्ति को मरना है और तुम सब अपना पूरा-पूरा बदला क़ियामत के दिन पानेवाले हो। कामयाब वास्तव में वह है जो वहाँ जहन्नम की आग से बच जाए और जन्नत में पहुँचा दिया जाए। रहा यह संसार, तो यह केवल एक बाह्य धोखे की चीज़ है।"** (क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-185)

मनुष्य को दुनिया में अक़्ल और सूझ-बूझ के साथ भेजा गया है। उसे क्षमता दी गई है कि अच्छे और बुरे में भेद करे। उसे दुनिया में प्रचुर मात्रा में रोज़ी मुहैया कराई गई है और उसे आज़ादी दी गई है कि अल्लाह की दी हुई चीज़ों से फ़ायदा उठाए। लेकिन सृष्टि के रचयिता ने यह सब इसलिए दिया है कि वह इनसान को आज़माए कि कौन अपने पैदा करनेवाले का आज्ञापालक है और कौन उसके आदेशों का उल्लंघन करता है?

वह हिसाब का दिन आयोजित करेगा। उसके ठीक वक़्त का ज्ञान तो केवल उसी को है। यह वह दिन होगा जब दुनिया में पैदा करनेवाले हर आदमी को दोबारा ज़िन्दगी दी जाएगी और उसे उसके कर्मों के अनुसार अच्छा बदला या सज़ा दी जाएगी। क़ुरआन विस्तार से इस बारे में कई जगहों पर वर्णन करता है। उन आयतों की प्रबलता एवं स्पष्टता इस बात की माँग करती है कि उनको बिना किसी व्याख्या के यहाँ पेश किया जाए—

## चेतावनी

"अब ये ज़ालिम लोग जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह को तुम उससे अज्ञान न समझो। अल्लाह तो उन्हें टाल रहा है उस दिन के लिए जब हाल यह होगा कि आँखें फटी-की-फटी रह जाएँगी। सिर उठाए भागे चले जा रहे होंगे, निगाहें ऊपर जमी होंगी और दिल

उड़े जाते होंगे। ऐ नबी! उस दिन से तुम उन्हें डरा दो जबकि अज़ाब (प्रकोप) उन्हें आ लेगा। उस समय ये ज़ालिम कहेंगे, 'ऐ हमारे रब! हमें थोड़ी-सी मुहलत और दे दे, हम तेरे पैग़ाम (संदेश) को स्वीकार करेंगे और रसूलों का अनुसरण करेंगे।' (मगर उन्हें साफ़ जवाब दिया जाएगा कि) क्या तुम वही लोग नहीं हो जो इससे पहले क़समें खा-खाकर कहते थे कि हमारा पतन तो कभी होने का नहीं है?"

(क़ुरआन, सूरा-14 इबराहीम, आयतें-42 से 44)

"ऐ नबी! डरा दो इन लोगों को उस दिन से जो क़रीब आ लगा है। जब कलेजे मुँह को आ रहे होंगे और लोग चुपचाप ग़म के घूँट पिए खड़े होंगे। ज़ालिमों का न कोई चाहनेवाला दोस्त होगा और न कोई सिफ़ारिश करनेवाला जिसकी बात मानी जाए।"

(क़ुरआन, सूरा-40 अल-मोमिन, आयत-18)

"वास्तविक बात यह है कि ये लोग 'उस घड़ी' को झुठला चुके हैं—और जो उस घड़ी को झुठलाए उसके लिए हमने भड़कती हुई आग जुटा रखी है। वह जब दूर से इनको देखेगी तो ये उसके प्रकोप और जोश की आवाज़ें सुन लेंगे। और जब ये हाथ-पाँव बँधे हुए उसमें एक तंग जगह ठूँसे जाएँगे तो अपनी मौत को पुकारने लगेंगे, (उस समय उनसे कहा जाएगा) आज एक मौत को नहीं बहुत-सी मौतों को पुकारो!"

(क़ुरआन, सूरा-25 अल-फ़ुरक़ान, आयतें-11 से 14)

## चिंघाड़

"फिर एक सूर (नरसिंघा) फूँका जाएगा। और एकाएक ये अपने रब की सेवा में पेश होने के लिए अपनी-अपनी क़ब्रों से निकल पड़ेंगे। घबराकर कहेंगे, 'अरे! यह किसने हमें हमारी सोने की जगह से उठा खड़ा किया?' (उत्तर दिया जाएगा,) 'यह वही चीज़ है जिसका करुणामय ईश्वर ने वादा किया था और रसूलों की

बात सच्ची थी।' एक ही ज़ोर की चिंघाड़ होगी और सब-के-सब हमारे सामने हाज़िर कर दिए जाएँगे। आज किसी पर कण-भर भी जुल्म न किया जाएगा और तुम्हें वैसा ही बदला दिया जाएगा जैसे तुम कर्म करते रहे थे।''

(क़ुरआन, सूरा-36 यासीन, आयतें-51 से 54)

''बस एक ही झिड़की होगी और अचानक ये अपनी आँखों से (वह सब कुछ जिसकी ख़बर दी जा रही है) देख रहे होंगे। उस समय ये कहेंगे, 'हाय हमारा दुर्भाग्य! यह तो बदला पाने का दिन है'—यह वही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाया करते थे।''

(क़ुरआन, सूरा-37 अस-साफ़्फ़ात, आयतें-19 से 21)

''आख़िरकार जब वह कान बहरे कर देनेवाली प्रचण्ड आवाज़ ऊँची होगी—उस दिन आदमी अपने भाई और अपनी माँ और अपने बाप और अपनी पत्नी और अपनी औलाद से भागेगा। उनमें से हर व्यक्ति पर उस दिन ऐसा समय आ पड़ेगा कि उसे अपने सिवा किसी का होश न होगा। कुछ चेहरे उस दिन दमक रहे होंगे, प्रफुल्लित और प्रसन्न होंगे। और कुछ चेहरों पर उस दिन ख़ाक उड़ रही होगी और कलौंस छाई हुई होगी। यही इनकार करनेवाले और दुराचारी लोग होंगे।''

(क़ुरआन, सूरा-80 अ-ब-स, आयतें-33 से 42)

## क़ियामत

''जब आसमान फट जाएगा, और जब तारे बिखर जाएँगे, और जब समुद्र फाड़ दिए जाएँगे, और जब क़ब्रें खोल दी जाएँगी, उस समय प्रत्येक व्यक्ति को उसका अगला-पिछला सब किया-धरा मालूम हो जाएगा। ऐ इनसान! किस चीज़ ने तुझे अपने उस उदार रब की ओर से धोखे में डाल दिया, जिसने तुझे पैदा किया, तुझे नख-शिख से दुरुस्त किया, तुझे सन्तुलित बनाया और जिस रूप में चाहा तुझको जोड़कर तैयार किया? हरगिज़ नहीं, बल्कि

(वास्तविक बात यह है कि) तुम लोग बदले के दिन को झुठलाते हो, हालाँकि तुमपर निगरानी करनेवाले नियुक्त हैं, ऐसे प्रतिष्ठावान कातिब (लिपिक) जो तुम्हारे प्रत्येक कर्म को जानते हैं। यक़ीनन नेक लोग मज़े में होंगे और बेशक दुराचारी लोग जहन्नम (नरक) में जाएँगे। बदला पाने के दिन वे उसमें प्रवेश करेंगे और उससे हरगिज़ ग़ायब न हो सकेंगे। और तुम क्या जानते हो कि वह बदले का दिन क्या है? हाँ, तुम्हें क्या ख़बर कि वह बदले का दिन क्या है? यह वह दिन है जब किसी व्यक्ति के लिए कुछ करना किसी के बस में न होगा, फ़ैसला उस दिन बिलकुल अल्लाह के अधिकार में होगा।''

(क़ुरआन, सूरा-82 अल-इनफ़ितार, आयतें-1 से 19)

''जब धरती इस प्रकार हिला डाली जाएगी जैसा उसे (धरती) को हिलाना है, और धरती अपने अन्दर के सारे बोझ निकालकर बाहर डाल देगी, और मनुष्य कहेगा कि यह इसको क्या हो रहा है? उस दिन वह (धरती) अपने (ऊपर बीते हुए) हालात बयान करेगी, क्योंकि तेरे रब ने उसे (ऐसा करने का) आदेश दिया होगा। उस दिन लोग विभिन्न दशा में पलटेंगे, ताकि उनके कर्म उनको दिखाए जाएँ। फिर जिस किसी ने कण-भर नेकी की होगी, वह उसको देख लेगा। और जिसने कण-भर बुराई की होगी वह उसको देख लेगा।''

(क़ुरआन, सूरा-99 अल-ज़िलज़ाल, आयतें-1 से 8)

''जब सूरज लपेट दिया जाएगा, और जब तारे बिखर जाएँगे, और जब पहाड़ चलाए जाएँगे, और जब दस महीने की गाभिन ऊँटनियाँ अपने हाल पर छोड़ दी जाएँगी, और जब जंगली जानवर समेटकर इकट्ठे कर दिए जाएँगे, और जब समुद्र भड़का दिए जाएँगे, और जब प्राण (शरीरों से) जोड़ दिए जाएँगे, और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा कि वह किस क़ुसूर में मारी गई? और जब कर्म-पत्र खोले जाएँगे, और जब आसमान

का परदा हटा दिया जाएगा, और जब जहन्नम दहकाई जाएगी, और जब जन्नत क़रीब ले आई जाएगी, उस समय प्रत्येक व्यक्ति को मालूम हो जाएगा कि वह क्या लेकर आया है।

(क़ुरआन, सूरा-81 अत-तकवीर, आयतें-1 से 14)

## निराश लोग

"वह दिन आनेवाला है जब हर व्यक्ति अपने किए का फल मौजूद पाएगा, चाहे उसने भलाई की हो या बुराई। उस दिन आदमी यह तमन्ना करेगा कि क्या ही अच्छा होता कि अभी यह दिन उससे बहुत दूर होता! अल्लाह तुम्हें अपने-आपसे डराता है और वह अपने बन्दों का अत्यन्त हितैषी है।"

(क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-30)

"अगर हर उस व्यक्ति के पास जिसने ज़ुल्म किया है, सारी धरती का धन भी हो तो उस अज़ाब से बचने के लिए वह उसे फ़िदया (अर्थदण्ड) में देने को तैयार हो जाएगा। जब ये लोग उस अज़ाब को देख लेंगे तो दिल-ही-दिल में पछताएँगे। मगर उनके बीच पूरे इनसाफ़ से फ़ैसला किया जाएगा, कोई ज़ुल्म उनपर न होगा।"

(क़ुरआन, सूरा-10 यूनुस, आयत-54)

"उस दिन अत्याचारी अपने हाथों को चबाएगा। कहेगा, 'ऐ काश, मैंने रसूल के साथ मार्ग अपनाया होता! हाय मेरा दुर्भाग्य! काश, मैंने अमुक व्यक्ति को मित्र न बनाया होता'!"

(क़ुरआन, सूरा-25 अल-फ़ुरक़ान, आयतें : 27-28)

"हमने तुम्हें निकट आनेवाली यातना से डरा दिया है। जिस दिन मनुष्य देख लेगा जो कुछ उसके हाथों ने आगे भेजा है, और इनकार करनेवाला कहेगा, 'ऐ काश कि मैं मिट्टी होता'!"

(क़ुरआन, सूरा-78 अन-नबा, आयत-40)

## हश्र का मैदान (हाज़िरी का मैदान)

"यक़ीनन तुम्हारा रब इन सबको इकट्ठा करेगा, वह तत्वदर्शी भी है और सर्वज्ञ भी।" (क़ुरआन, सूरा-15 अल-हिज्र, आयत-25)

"क़ियामत के दिन हम ठीक-ठीक तौलनेवाले तराज़ू रख देंगे, फिर किसी व्यक्ति पर कण-भर ज़ुल्म न होगा। जिसका राई के दाने बराबर भी कुछ किया-धरा होगा वह हम सामने ला देंगे। और हिसाब लगाने के लिए हम काफ़ी हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-21 अल-अंबिया, आयत-47)

"और सब-के-सब तुम्हारे रब के सामने पंक्तियों में पेश किए जाएँगे—लो देख लो, आ गए ना तुम हमारे पास उसी प्रकार जैसा हमने तुमको पहली बार पैदा किया था! तुमने तो यह समझा था कि हमने तुम्हारे लिए कोई वादे का समय निश्चित ही नहीं किया है—और कर्मपत्र सामने रख दिया जाएगा। उस समय तुम देखोगे कि अपराधी लोग अपनी ज़िन्दगी की किताब में अंकित बातों से डर रहे होंगे और कह रहे होंगे कि हाय हमारा दुर्भाग्य! यह कैसी किताब है कि हमारी कोई छोटी-बड़ी हरकत ऐसी नहीं रही जो इसमें अंकित न हो गई हो! जो-जो कुछ उन्होंने किया था, वे सब अपने सामने मौजूद पाएँगे, और तेरा रब किसी पर तनिक ज़ुल्म न करेगा।" (क़ुरआन, सूरा-18 अल-कहफ़, आयतें : 48-49)

"तुम लोग उस समय तीन गरोहों में बँट जाओगे। दाएँ बाज़ूवाले, तो दाएँ बाज़ूवालों (के सौभाग्य) का क्या कहना! और बाएँ बाज़ूवाले, तो बाएँ बाज़ूवालों (के दुर्भाग्य) का क्या ठिकाना! और आगेवाले तो फिर आगेवाले ही हैं! वही तो (अल्लाह के) निकटवर्ती लोग हैं।"

(क़ुरआन, सूरा-56 अल-वाक़िआ, आयतें-7 से 11)

"डराओ इन्हें उस दिन से जबकि ज़मीन और आसमान बदलकर कुछ-से-कुछ कर दिए जाएँगे और सब-के-सब खुलकर अल्लाह के

सामने उपस्थित हो जाएँगे जो अकेला और प्रभुत्वशाली है। उस दिन तुम अपराधियों को देखोगे कि ज़ंजीरों में उनके हाथ-पाँव जकड़े हुए होंगे, तारकोल के वस्त्र पहने होंगे और आग की लपटें उनके चेहरों पर छाई जा रही होंगी। यह इसलिए होगा कि अल्लाह प्रत्येक जीव को उसके किए का बदला दे। अल्लाह को हिसाब लेते कुछ देर नहीं लगती।''

(क़ुरआन, सूरा-14 इबराहीम, आयतें-48 से 51)

''(और अल्लाह कहेगा) लो, अब तुम वैसे ही बिलकुल अकेले हमारे सामने हाज़िर हो गए जैसा हमने तुम्हें पहली बार अकेला पैदा किया था, जो कुछ हमने तुम्हें दुनिया में दिया था, वह सब तुम पीछे छोड़ आए हो, और अब हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देखते जिनके सम्बन्ध में तुम समझते थे कि तुम्हारे काम बनाने में उनका भी कुछ हिस्सा है, तुम्हारे आपस के सब सम्बन्ध टूट गए और वे सब तुमसे गुम हो गए जिनका तुम दावा रखते थे!''

(क़ुरआन, सूरा-6 अल-अनआम, आयत-94)

## स्थायी ठिकाना

''और प्रत्येक जीव को जो कुछ भी उसने कर्म किया था, उसका पूरा-पूरा बदला दे दिया जाएगा। लोग जो कुछ भी करते हैं अल्लाह उसको ख़ूब जानता है। (इस फ़ैसले के बाद) वे लोग जिन्होंने इनकार किया था जहन्नम की ओर गरोह-के-गरोह हाँके जाएँगे, यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उसके दरवाज़े खोले जाएँगे और उसके कार्यकर्ता उनसे कहेंगे, 'क्या तुम्हारे पास तुम्हारे अपने लोगों में से ऐसे रसूल नहीं आए थे जिन्होंने तुमको तुम्हारे रब की आयतें सुनाई हों और तुम्हें इस बात से डराया हो कि एक समय तुम्हें यह दिन भी देखना होगा?' वे जवाब देंगे, 'हाँ आए थे, मगर अज़ाब का फ़ैसला इनकार करनेवालों पर चिपक

गया।' कहा जाएगा, 'दाख़िल हो जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में, यहाँ अब तुम्हें हमेशा रहना है, बड़ा ही बुरा ठिकाना है यह अहंकारियों के लिए!' और जो लोग अपने रब की अवज्ञा से बचते थे, उन्हें गरोह-के-गरोह जन्नत की ओर ले जाया जाएगा। यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे और उसके द्वार पहले ही खोले जा चुके होंगे तो उनके प्रहरी उनसे कहेंगे, 'सलाम हो तुमपर! बहुत अच्छे रहे! दाख़िल हो जाओ इसमें सदा के लिए!' और वे कहेंगे, 'शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया और हमको ज़मीन का वारिस बना दिया, अब हम जन्नत में जहाँ चाहें अपनी जगह बना सकते हैं।' अतः उत्तम प्रतिदान है कर्म करनेवालों के लिए! और तुम देखोगे कि फ़रिश्ते सिंहासन के चारों ओर घेरा बनाए हुए अपने रब की स्तुति और तसबीह कर रहे होंगे। और लोगों के बीच ठीक-ठीक हक़ के साथ फ़ैसला चुका दिया जाएगा, और पुकारा जाएगा कि प्रशंसा है अल्लाह सारे संसार के रब के लिए!"

(क़ुरआन, सूरा-39 अज़-ज़ुमर, आयतें-70 से 75)

# पैग़म्बर (सल्ल॰) का विदाई उपदेश

किताब की भूमिका में कहा गया था कि इस किताब के लेखन में मैंने क़ुरआन को समझने के दो महत्वपूर्ण साधनों—हदीसों और सुन्नत—से मदद नहीं ली है। ऐसा न करने का कारण भी स्पष्ट रूप में बयान कर दिया था। लेकिन हज्जतुल-वदा (पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल॰ की ज़िन्दगी का विदाई हज) के सबसे अहम अवसर पर पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) द्वारा एक लाख से ज़्यादा लोगों के सामने किया गया ख़िताब (सम्बोधन) इतना ज़्यादा महत्वपूर्ण है कि उसको दिए बिना यह किताब अधूरी महसूस हो रही है। इस ख़ुतबे से पाठकों को उस इस्लामी समाज की मौलिक शिक्षाओं से परिचय होगा जिनकी उन्होंने क़ुरआन और अल्लाह के हुक्मों की रौशनी में ख़ुद ही डाली थी। यह ख़ुतबा जिसको उन्होंने लगभग साढ़े चौदह सौ साल पहले दिया, एक अच्छे समाज का ऐसा आधार है, जिसकी बुनियाद (नींव) क़ुरआन के क़ानूनों पर रखी गई है।

"सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं। हम उसकी हम्दो-सना (गुणगान) करते हैं और उसी से मदद और माफ़ी चाहते हैं और उसी के सामने तौबा करते हैं। हम उसी से अपने नफ़्स (मन) की ख़राबियों और बुरे कामों से पनाह चाहते हैं। जिसको अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसको वह गुमराह कर दे उसे कोई रास्ता नहीं दिखा सकता और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (उपास्य) नहीं। वह अकेला है, कोई उसका शरीक (साझा) नहीं। शासन और प्रशंसा केवल उसी के लिए है। उसने अपना वादा पूरा किया और अपने दास (मुहम्मद सल्ल॰) को विजयी किया और उसी ने शत्रुओं पर विजय दिलाई।

लोगो! मेरी बात ध्यान से सुनो! मुझे नहीं पता कि मैं दोबारा तुमसे इस जगह मिल सकूँ या हज कर सकूँ।

लोगो! अल्लाह फ़रमाता है कि हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है और तुम्हारे बहुत-से क़बीले और ख़ानदान बनाए हैं ताकि तुम पहचाने जा सको। और अल्लाह के नज़दीक तुममें इज़्ज़तवाला वह है जो ज़्यादा परहेज़गार है। किसी अरबी को किसी अजमी (ग़ैर-अरबी) पर और किसी अजमी को किसी अरबी पर कोई फ़ज़ीलत और बरतरी (श्रेष्ठता और बड़ाई) नहीं है और न किसी काले को किसी गोरे पर और किसी गोरे को काले पर फ़ज़ीलत और बरतरी हासिल है। फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) सिर्फ़ परहेज़गारी के आधार पर है।

तुम सब आदम (अलैहि॰) की औलाद हो और आदम (अलैहि॰) मिट्टी से पैदा किए गए थे। ख़बरदार! ख़ून या माल का हर वह दावा जिसके लोग दावेदार हैं, वे मेरे क़दमों तले हैं (मैं उन्हें रद्द क़रार देता हूँ), मगर बैतुल्लाह यानी अल्लाह के घर की निगरानी और हाजियों को पानी पिलाने की ख़िदमत दस्तूर के मुताबिक़ चलेगी।"

इसके बाद उन्होंने फ़रमाया—

"ऐ क़ुरैश के गरोह के लोगो! क़ियामत के दिन ऐसा न हो कि तुम दुनिया का बोझ अपनी गरदनों पर उठाए हुए आओ और लोग आख़िरत का सामान लेकर आएँ। याद रखो! अगर ऐसा हुआ तो मैं तुम्हें अल्लाह के अज़ाब से न बचा सकूँगा।

ख़बरदार! जाहिलियत के ज़माने (अज्ञानकाल) की तमाम रस्में मेरे क़दमों के नीचे रौन्दी गई हैं। जाहिलियत के ज़माने के तमाम ख़ून (चाहे वे किसी के भी हों) सब माफ़ हैं। मैं सबसे पहले अपने ही ख़ानदान का एक ख़ून जो रबीअ़-बिन-हारिस के बेटे आमिर का है, माफ़ करता हूँ, जिसे हुज़ैल के क़बीले ने क़त्ल कर डाला था।

जाहिलियत के दौर का हर सूद माफ़ है (इस क़ानून की शुरुआत भी मैं अपनी तरफ़ से करता हूँ) और अपने चाचा अब्बास-बिन-अब्दुल-मुत्तलिब (रज़ि॰) का सूद माफ़ करता हूँ। उनका सूद सब-का-सब माफ़ और रद्द है।

लोगो! बेशक तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे धन-दौलत और तुम्हारी इज़्ज़त-आबरू

क़ियामत तक एक-दूसरे पर हराम हैं, जिस तरह तुमपर इस दिन, इस महीने और इस शहर की हुरमत (मर्यादा, आदर-सम्मान) अनिवार्य है। और तुम सब जल्द ही अपने पालनहार से जा मिलोगे, जहाँ तुमसे तुम्हारे कर्मों का हिसाब-किताब होगा।

ऐ लोगो! तुम्हारी औरतों पर तुम्हारे कुछ हक़ हैं और इसी तरह तुमपर तुम्हारी औरतों के हक़ हैं। तुम्हारा उनपर यह हक़ है कि तुम्हारे बिस्तर पर किसी ग़ैर-मर्द को न आने दें। साथ ही, उनपर तुम्हारा यह हक़ है कि खुली बेहयाई का कोई काम न करें। लेकिन अगर वे ऐसा काम करें तो तुम्हारे रब ने तुम्हें इजाज़त दी है कि उनके सोने की जगह अपने से अलग कर दो। (लेकिन अगर वे फिर भी न मानें) तो फिर तुम्हें इजाज़त है कि ऐसी हलकी मार मारो जिससे बदन पर निशान न पड़ें। अगर वे अपनी अनुचित हरकतों से बाज़ आ जाएँ तो दस्तूर के मुताबिक़ उनका खाना और कपड़ा तुम्हारे ज़िम्मे है। ख़बरदार! किसी औरत के लिए जाइज़ नहीं कि वह अपने शौहर के माल में से उसकी इजाज़त के बिना किसी को कुछ दे। औरतों के साथ अच्छा सुलूक करने के हमेशा पाबन्द रहो; क्योंकि वे तुम्हारी निगरानी में हैं और इस हैसियत में नहीं कि अपने मामले ख़ुद चला सकें। औरतों के मामले में अल्लाह से डरते रहो। तुमने उनको अल्लाह की अमानत के तौर पर हासिल किया है और अल्लाह के कलिमों के ज़रिए उन्हें जाइज़ और हलाल किया है।

लोगो! अल्लाह ने (मीरास का क़ानून लागू करके) हर हक़दार को उसका हक़ दे दिया है। इसलिए किसी वारिस के हक़ में वसीयत जाइज़ और प्रचलित नहीं। औरत के बच्चे का गौत्र उस मर्द से होगा जिसकी वह बीवी है। जिसने बदकारी की उसके लिए सज़ा है और उसका हिसाब अल्लाह के ज़िम्मे है। जिसने अपने बाप के अलावा किसी और की तरफ़ निस्बत की या किसी ग़ुलाम ने अपने को किसी और मालिक की तरफ़ मन्सूब (सम्बद्ध) किया तो उसपर ख़ुदा की लानत है।

क़र्ज़ अदा किया जाएगा और उधार वापस किया जाएगा। ज़मानत देनेवाला भुगतान का ज़िम्मेदार है। ख़बरदार! जुर्म या अपराध करनेवाला

ख़ुद अपने जुर्म का ज़िम्मेदार है। बाप के जुर्म का ज़िम्मेदार बेटा नहीं और बेटे के जुर्म का ज़िम्मेदार बाप नहीं।

किसी आदमी के लिए किसी भाई की चीज़ लेना जाइज़ नहीं, हाँ, इस सूरत में जाइज़ है कि वह खुले मन के साथ दे। इसलिए तुम लोग अपने ऊपर ज़ुल्म-ज़्यादती न करो।

लोगो! ख़ूब अच्छी तरह समझ लो कि हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है और सब मुसलमान आपस में एक-दूसरे के भाई-भाई हैं। तुम्हारे ग़ुलाम तुम्हारे भाई हैं, तुम जो कुछ ख़ुद खाते हो, उन्हें भी खिलाओ और जो ख़ुद पहनो, उन्हें भी पहनाओ।

ख़बरदार! मेरे बाद गुमराह या हक़ के इनकारी न हो जाना कि एक-दूसरे की गरदनें मारने लगो। जिस शख़्स के पास किसी की अमानत हो, उसपर ज़रूरी है कि वह अमानतवाले को ठीक-ठीक तरीक़े से लौटा दे।

ऐ लोगो! अगर कोई नकटा या काला हबशी भी तुम्हारा अमीर बना दिया जाए और वह अल्लाह की किताब (क़ुरआन) के मुताबिक़ तुम्हारी रहनुमाई (नेतृत्व) करे तो तुमपर उसका आज्ञापालन ज़रूरी है।

ऐ लोगो! मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा और तुम्हारे बाद कोई उम्मत या समुदाय नहीं। मैं तुम्हारे बीच एक नेमत छोड़े जा रहा हूँ। अगर तुम मज़बूती से थामे रहोगे तो गुमराह न होगे और वह नेमत अल्लाह की किताब (क़ुरआन) और मेरी सुन्नत (कथनी-करनी) है।

लोगो! अब शैतान इस बात से मायूस हो गया है कि इस धरती (अरब) पर उसकी पूजा की जाए। लेकिन इबादतों के अलावा दूसरे मामलों में अपनी गिरी हुई हरकतों के द्वारा उसकी फ़रमाँबरदारी (आज्ञापालन) की गई तो वह इसपर भी राज़ी रहेगा। तुम अपने दीन-धर्म को उसकी बुराई से बचाकर रखना।

ख़बरदार! अपने रब की इबादत करते रहो! पाँच वक़्त के नमाज़ों की पाबन्दी करो! रमज़ान के महीने के रोज़े रखो! अपने मालों की ख़ुशदिली के साथ ज़कात अदा करते रहो! अपने रब के घर (काबा) का तवाफ़ (परिक्रमा)

करते रहो और अपने शासकों के हुक्म की पैरवी करो तो अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे!

ख़बरदार! जो लोग यहाँ मौजूद हैं, वे मेरी बातों को उन लोगों तक पहुँचा दें जो यहाँ मौजूद नहीं हैं; क्योंकि बहुत-से लोग जिनको मेरा पैग़ाम नहीं पहुँचा, वे उन लोगों से ज़्यादा पक्का स्मरण रखनेवाले होंगे जो इस वक़्त सुननेवाले हैं। तुम लोगों से मेरे बारे में भी पूछा जाएगा। बताओ, तुम लोग मेरे बारे में क्या कहोगे?"

लोगों ने जवाब दिया—

"हम गवाही देते हैं कि आपने अमानत को पूरी तरह अदा कर दिया। अल्लाह का पैग़ाम (हम तक और लोगों तक) पहुँचा दिया और नसीहत कर दी।"

इसके बाद अल्लाह के रसूल ने अपनी शहादत की उंगुली आसमान की तरफ़ उठाई और फिर लोगों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा—

**"ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना! ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना! ऐ अल्लाह! तू गवाह रहना!"**

○○○